ॐ

श्री तीर्थंकर विधान

आशीर्वाद

अध्यात्म सरोवर के राजहंस,
परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

रचयित्री

आर्यिकारत्न श्री 105 पूर्णमति माताजी

कृति	:	श्री तीर्थंकर विधान
आशीर्वाद	:	प.पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
रचयित्री	:	प.पू. आर्यिकारत्न श्री 105 पूर्णमति माता जी
संस्करण	:	षष्ठम, जून 2008
आवृत्ति	:	1100 प्रतियाँ
मूल्य	:	रु. 35.00 मात्र (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थल	:	• **अशोक सिंघई** ए-55, कोहेफिजा, बीडीए कॉलोनी, भोपाल मो. 9425004687 • **नितिन जैन** 37/26, साउथ टी.टी. नगर, भोपाल मो. 9425378736 • **प्रबोध शाह** ई-2/14, अरेरा कॉलोनी, भोपाल, फोन : 0755-2467952, 9303109613

आमुख

जैन दर्शन में व्यक्ति की नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व की पूजा की जाती है, जैन दर्शन ही हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति देखता है। भक्ति से भगवान बनने का सीधा मार्ग दिखाता है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में देवपूजा ही प्रथम सोपान है और सम्यग्दर्शन ही मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है। भक्ति में त्रियोग से समर्पण का भाव अद्भुत आत्मिक सौन्दर्य का द्योतक है। भौतिकता की चकाचौंध में भी जो इस नश्वर काया को प्रभु भक्ति में लगा दे, उसी में तल्लीन हो जाये उसी का मानव जीवन सार्थक है, आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने स्तुति विद्या में लिखा है-

प्रज्ञा सा स्मरतीति या तव शिरस्तद्यत्रतं ते पदे,
जन्मादः सफलं परं भवभिदी यत्राश्रिते ते पदे।
मांगल्यं च स यो रतस्तव मते गीः सैव या त्वां स्तुते,
ते ज्ञा ये प्रणता जनाः क्रमयुगे देवाधिदेवस्य ते।।

अर्थ :- बुद्धि वही है, जो आपका स्मरण किया करे। सिर वही है, जो आपके चरणों में झुका रहे। जन्म वही सफल व श्रेष्ठ है जिसमें भव का भेदन करने वाले आपके चरणों का आश्रय लिया हो। वही मंगलभूत है जो आपके मन में अनुरक्त है। वाणी वही है जो आपकी स्तुति करे और बुद्धिमान वही जो आपके चरणों में झुका रहे।

पूजा पाठ जप तप सभी का एक ही लक्ष्य होता है स्वयं से साक्षात्कार करना, अपने आपको प्रभु में एकाकार करना जिससे हम स्वयं के स्वरूप को पा सकें। अध्यात्म के अद्भुत भावों की धनी, बाह्य जगत में रहते हुए भी अपने अन्तर जगत को प्रकाशित करने वाली परम वात्सल्यमयी पूज्य श्री पूर्णमति माताजी से हम सभी आर्यिकाओं ने शिखर जी की सुरम्य पहाड़ियों पर, जहाँ आज भी प्रभु की वीतरागता से भरी अमृत वर्षा हो रही है, वहाँ उनकी समर्पण से भरी प्रभु वंदना को देख उनके समक्ष अपनी-अपनी भावनाओं को रखते हुए कहा कि माताजी जिन भावों से आप भगवान की भक्ति करती हो उन्ही भावों को पूजन विधान के रूप में लिख दीजिए जिससे प्रभु भक्ति का माहात्म्य ज्ञात हो सके, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सके।

सरल स्वभावी माताजी ने कहा - ''मुझमें इतना सामर्थ्य कहां कि मैं लिख सकूँ - गुरुदेव का आशीर्वाद ही मुझसे लिखवा सकता है।

उनकी गुरु भक्ति की पवित्र भावनायें गुरुदेव के पास पहुँची, गुरुदेव का शुभ आशीर्वाद आया - ''लिखो खूब लिखो'' अपने आपके मन को शुभोपयोग में लगाकर भगवान की जी भरके भक्ति करो आर्शीवाद की पवित्र छाया में शिखर जी की तलहटी झुमरीतलैया (कोडरमा) में प्रभु पार्श्व की कृपा व गुरु अनुकम्पा से ये ''चौबीस तीर्थकर विधान'' 22 दिन की अल्पावधि में पूर्ण हुआ।

प्रस्तुत कृति में जैन दर्शन के प्रवर्तक, युग दृष्टा, अपनी साधना व पुरुषार्थ से स्वयं को कर्मो से मुक्त करते हुए तीर्थंकर पद तक पहुँचे और सिद्धालय में विराजमान हो गये उन्ही महानआत्माओं के गुणों की आराधना और अभ्यर्चना पूर्णत: निर्विकार एवं नि:कांक्षित भावों से की गई है। प्रभु से सांसारिक सुख नहीं पारमार्थिक सुख की माँग की गई हैं जिस पुरुषार्थ के बल से हमारे तीर्थंकर प्रभु ने सिद्धी को प्राप्त किया ऐसा बल हमे भी अतिशीघ्र प्राप्त हो इन्ही भावों व दृष्टि से पूज्यमाताजी ने इस विधान की रचना की है। इसकी भाषा सरल सुगम और अन्तर प्रवाही है। इसका एक-एक शब्द हमारे मानस का तादात्म्य हमारी चेतना से स्थापित करता है जिससे आत्मपिपासु को आत्म तत्त्व की अनुभूति होती है।

इस विधान में भटकती तरसती मानवता के पथ दृष्टा, आगमदृष्टा, महावीर के लघुनंदन, आध्यात्मिक क्रांति के महावेत्ता भेद विज्ञान के सबसे बड़े वैज्ञानिक परम पूज्य आचार्य श्रेष्ठ श्री विद्यासागर जी महाराज के अत्यन्त प्रिय ''ज्ञानोदय छंद'' की प्रधानता है जिससे विधान करने वालों की भाषा के साथ मन, वचन और काया की प्रवृति एकमेक होकर प्रभु पूजा करते -करते स्वयं को पूज्यता की प्राप्ति हो जाये।

प्रस्तुत रचना जैन धर्म के मर्म, मुक्ति की प्रथम सीढ़ी व भेद विज्ञान की ओर हमें प्रवृत्त करती है एवं चारों अनुयोगों की ओर ध्यान आकृष्ट कराती है। इस प्रलोभी संसार में सबसे बड़ा दुख का कारण है-अज्ञानता और हमें इस भव-सागर में परिभ्रमण कराने वाली हमारे सबसे बड़ी भूल जिसकी

ओर इस रचना की ये प्रथम पंक्ति ही हमें स्पष्ट इशारा कर हमें सजग कर रही है।

"जिसको अपना माना, उनसे ही दुख पाया।
फिर भी क्यों राग किया, यह समझ नहीं पाया॥"

इस कार्य को सम्पादित करते समय हम सभी के अन्तर्भाव प्रभु से और भी दृढ़ता के साथ जुड़ गये उपयोग की धारा शुभ से शुद्ध भावना की ओर बलवती हो उठी। मेरा विश्वास है कि इस विधान को जो भी करेगा वो मात्र मूर्ति को नहीं अपितु सीधा स्वचैतन्य को स्पर्श करेगा, एवं सम्यक दर्शन को प्राप्त कर निधत्ति निकाचित जैसे तीव्र कर्म को नष्ट करेगा। भक्ति बड़ी बावरी होती है वह भाषा, व्याकरण आदि के बंधन से परे होती है - प्रभु की भक्ति, स्वयं के आंतरिक भाव कभी भी भाषा के गुलाम नहीं होते। भावों के अभिव्यक्तिकरण में सम्भव है व्याकरण या छंद की मर्यादाओं का टूटना, इसी से भावातिरेक में छंद या पद्य कहीं मुक्त हो गये हैं तो कहीं पर मिश्रित। मेरा सुधि पाठकों व विद्वानों से निवेदन है कि वह अपनी पैनी दृष्टि भाषा की अपेक्षा भावों पर केन्द्रित कर प्रस्तुति विधान का भक्ति-भावों से संधान करें।

अध्यात्म भावों से ओत -प्रोत इस भक्ति भरे विधान की लेखिका के जीवन आधार हम सबके, श्री गुरुवर के श्री चरणों में व पूज्य माताजी के चरणों में अपनी भावांजलि समर्पित करती हूँ और प्रभु से एवं गुरुदेव से ऐसी प्रार्थना करती हूँ कि पूज्य माताजी की लेखनी का क्रम अरुक, अथक व निर्बाध चलता रहे जिससे हम सभी आप सभी विशेष पुण्य का उपार्जन कर कर्मों की निर्जरा करके सिद्धालय में अतिशीघ्र पहुँचें।

- आर्यिका श्री विपुलमति माताजी
- आर्यिका श्री सतर्कमति माताजी

:: अनुक्रमणिका ::

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाष्टक	1
2.	अभिषेक पाठ	3
3.	विनय पाठ	7
4.	नित्य पूजा पीठिका	9
5.	परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ	12
6.	देव शास्त्र गुरु समुच्चय पूजन	13
7.	सोलह कारण पूजन	17
8.	नवदेवता पूजन	21
9.	मंगलाचरण	25
10.	समुच्चय चौबीसी जिन पूजन	26
11.	श्री आदिनाथ जिन पूजन	30
12.	श्री अजितनाथ जिन पूजन	35
13.	श्री संभवनाथ जिन पूजन	38
14.	श्री अभिनंदननाथ जिन पूजन	42
15.	श्री सुमतिनाथ जिन पूजन	45
16.	श्री पद्मप्रभ जिन पूजन	49
17.	श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन	53
18.	श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन	57
19.	श्री पुष्पदंत जिन पूजन	61

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
20.	श्री शीतलनाथ जिन पूजन	65
21.	श्री श्रेयांसनाथ जिन पूजन	69
22.	श्री वासुपूज्य जिन पूजन	74
23.	श्री विमलनाथ जिन पूजन	78
24.	श्री अनंतनाथ जिन पूजन	83
25.	श्री धर्मनाथ जिन पूजन	87
26.	श्री शांतिनाथ जिन पूजन	90
27.	श्री कुंथुनाथ जिन पूजन	95
28.	श्री अरनाथ जिन पूजन	100
29.	श्री मल्लिनाथ जिन पूजन	104
30	श्री मुनिसुव्रत नाथ जिन पूजन	109
31.	श्री नमिनाथ जिन पूजन	113
32.	श्री नेमिनाथ जिन पूजन	118
33.	श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन	124
34.	श्री महावीर जिन पूजन	129
35.	समुच्चय जयमाला	135
36.	आचार्य विद्यासागरजी महाराज की पूजन	139
37.	महाअर्घ्य	142
38.	शान्ति पाठ	143
39.	आरती	145

श्री सम्मेद शिखर जी पर विराजमान चौबीस चरण

कुण्डलपुर के बड़े बाबा

1. श्री कुन्थनाथ भगवान

2. श्री नमिनाथ भगवान

3. श्री अरनाथ भगवान

4. श्री मल्लिनाथ भगवान

5. श्री श्रेयांसनाथ भगवान

6. श्री सुविधिनाथ भगवान

7. श्री पद्मप्रभु भगवान

8. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

9. श्री चन्द्रप्रभ भगवान

10. श्री आदिनाथ भगवान

11. श्री शीतलनाथ भगवान

12. श्री अनन्तनाथ भगवान

13. श्री संभवनाथ भगवान

14. श्री वासुपूज्य भगवान

15. श्री अभिनन्दननाथ भगवान

16. श्री धर्मनाथ भगवान

17. श्री सुमतिनाथ भगवान

18. श्री शांतिनाथ भगवान

19. श्री महावीर भगवान

20. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

21. श्री विमलनाथ भगवान

22. श्री अजितनाथ भगवान

23. श्री नेमिनाथ भगवान

24. श्री पार्श्वनाथ भगवान

25. गुफा

श्री १०८ सिद्धसागर जी महाराज

श्री तीर्थंकर विधान

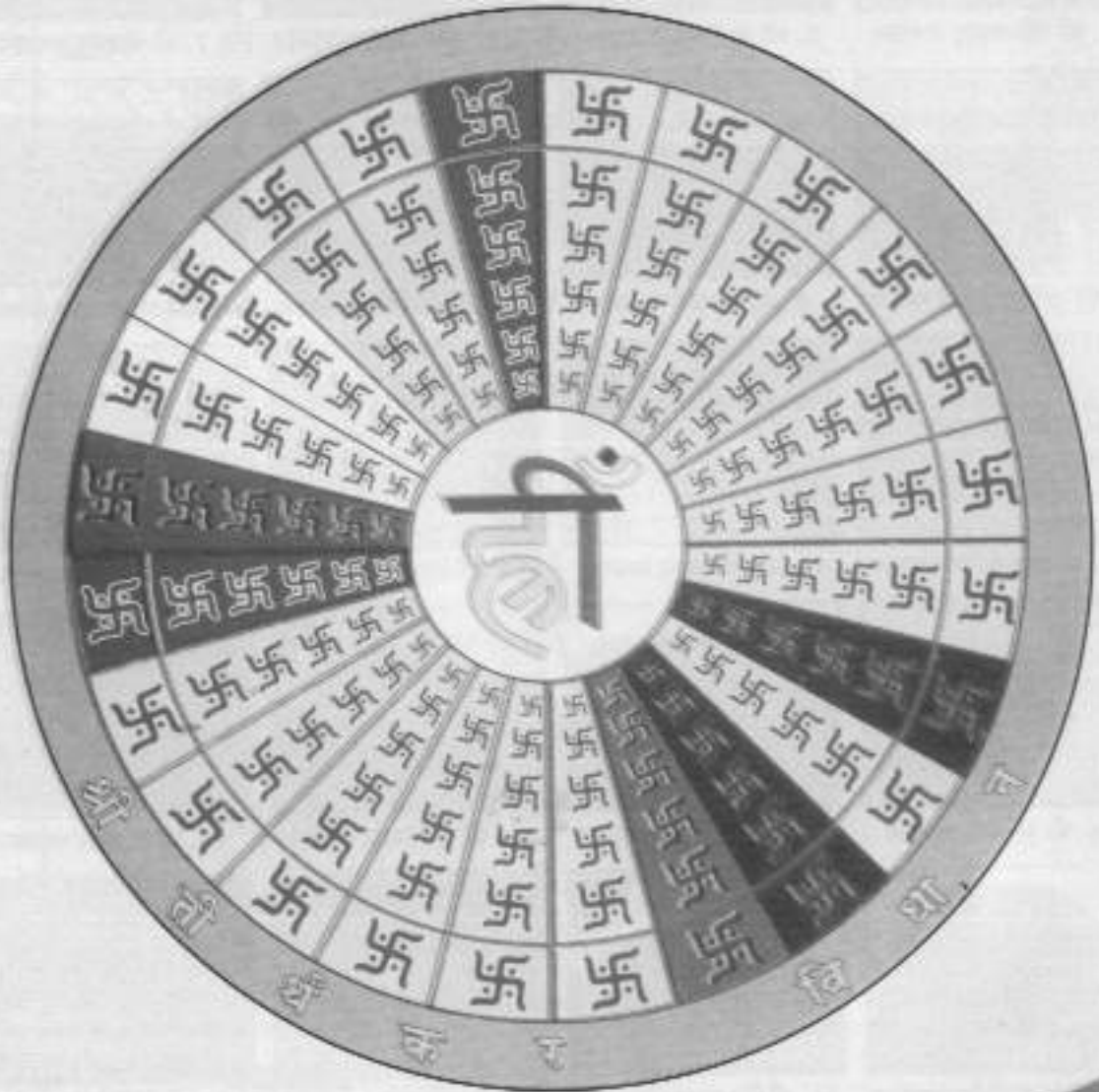

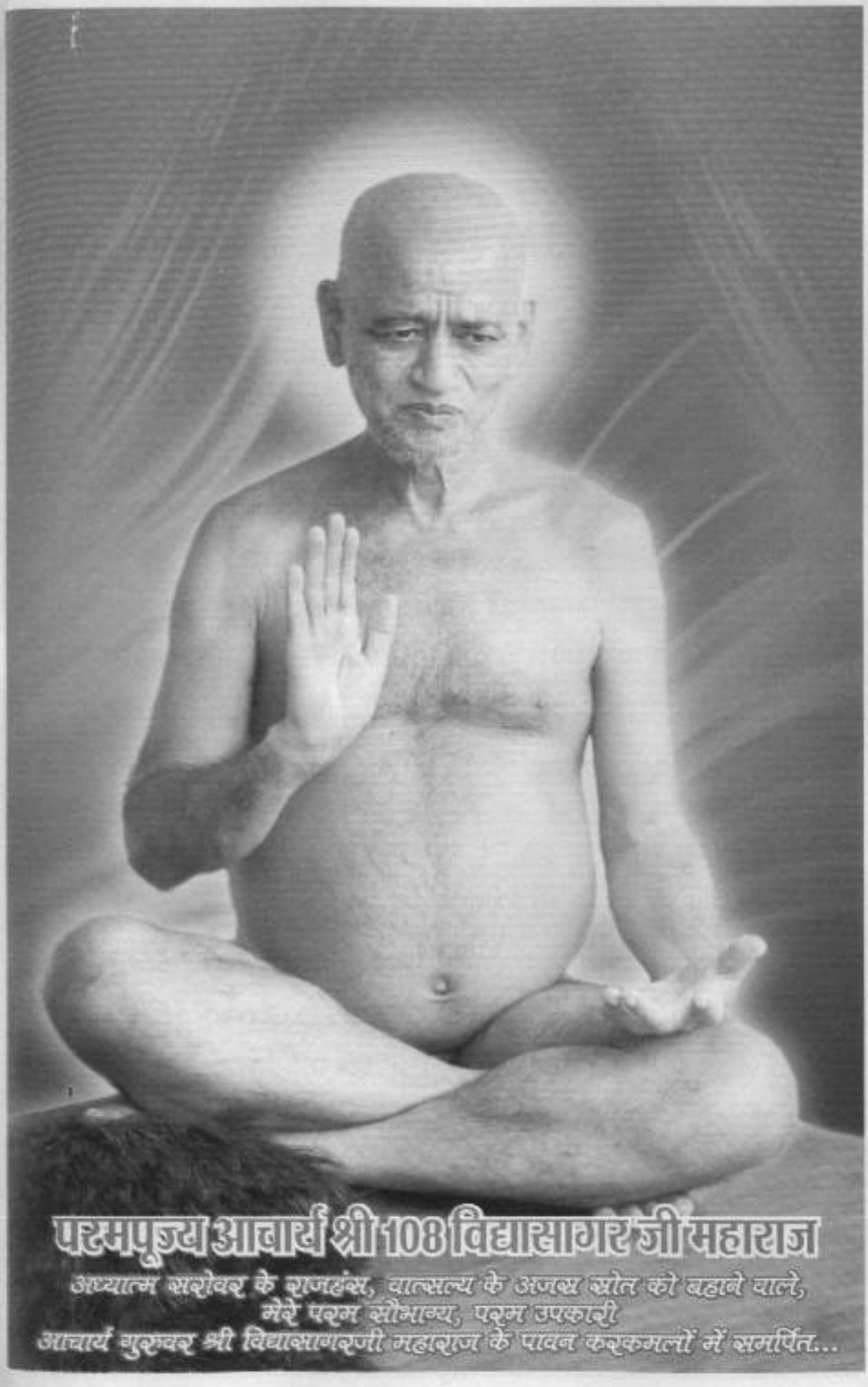
परमपूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
अध्यात्म सरोवर के राजहंस, वात्सल्य के अजस्र स्रोत को बहाने वाले,
मेरे परम सौभाग्य, परम उपकारी
आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के पावन करकमलों में समर्पित...

परम पूज्या आर्यिकारत्न 105 पूर्णमति माताजी

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।1।।

श्रीमन्नम्र- सुरासुरेन्द्र- मुकुट-, प्रद्योत- रत्नप्रभा-,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन- सिद्ध- सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।2।।

सम्यग्दर्शन- बोध- वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्री- नगराधिनाथ- जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सुक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।3।।

नाभेयादिजिनाःप्रशस्त-वदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर- प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु- प्रतिविष्णु- लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि- पुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधि- ऋद्धयः श्रुततपो, वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।5।।

ज्योतिर्व्यन्तर- भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलि- चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्यादिषु।
इक्ष्वाकार- गिरौ च कुण्डल- नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।6।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः, सम्मेद-शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः, कुर्वन्ते ते (मे) मंगलम्।।7।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।8।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर- प्रवेश- महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।9।।

इत्थं श्रीजिन- मंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य- सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै- र्धर्मार्थ- कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय- रहिता निर्वाण- लक्ष्मीरपि।।10।।

।।इति श्री मंगलाष्टक स्तोत्रम्।।

विद्यासागर-विश्व-वन्द्य-श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरम्।।

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दि)

श्रीमन्न-तामर-शिरस्तट-रत्न-दीप्ति-
तोयाव-भासि-चरणाम्बुज-युग्म-मीशम्।
अर्हन्त-मुन्नतपद-प्रद-माभि-नम्य,
तन्मूर्ति-षूद्य-दभिषेक-विधिंकरिष्ये।।1।।

अथ पौर्वाह्णिकदेव - वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल - कर्म - क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दनास्तवसमेतं श्रीपंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(इति अभिषेक प्रतिज्ञाये पुष्पांजलि क्षिपामि)

याः कृत्रिमास् तदितराः प्रतिमा जिनस्य,
संस्ना - पयन्ति पुरुहूत - मुखा - दयस्ताः।
सद्भाव लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्
तत्रैव मुज्ज्वल-धिया कुसुमं क्षिपामि।।2।।

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः श्रीप्रस्तरे पूर्ण - शशांक - कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमा - लिखामि।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लेखनं करोमि।

कनकादि-निभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर अभिषेक की थाली में सिंहासन स्थापित करें)

भृंगार - चामर - सुदर्पण - पीठ - कुम्भ -
तालध्वजा - तप - निवारक - भूषिताग्रे।
वर्धस्व - नन्द - जय - पाठ - पदा - वलीभिः
सिंहासने जिन भवन्त - महं श्रयामि।।5।।

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवे।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ ! भगवन्निह पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(यह पढ़कर प्रतिमा जी विराजमान करें)

शातकुम्भीयकुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नानचन्दनादिसुचर्चितान्।।7।।

ॐ ह्रीं चतुः-कोणेषु चतुः कलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में चार कलश स्थापित करें)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि - गानै -
र्वादित्र - पूर - जय - शब्द - कलप्रशस्तैः।
उद्गीय - मान - जगती - पति - कीर्ति - मेनां,
पीठस्थलीं वसु - विधार्चन - योल्लसामि।।8।।

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावें तथा वादित्र या घण्टा आदि का
शब्द करते हुए जय-जयकार करें।)

कर्म - प्रबन्ध - निगडै - रपि हीन - ताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्ति - वशतः परमादि - देवम्।
त्वां स्वीय - कल्मष - गणोन्मथ - नाय देव !
शुद्धोदकै - रभिनयामि महाभिषेकम्।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामीति स्वाहा।

दूराव नम्र सुर नाथ किरीट कोटी
संलग्न रत्न किरणच्छवि धूस रांघ्रिम्
प्रस्वेद ताप मल मुक्त मपि प्रकृष्टै
र्भक्त्या जलै र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।10।।

इष्टै र्मनोरथ शतैरिव भव्य पुंसां,
पूर्णै: सुवर्ण कलशै र्निखिलावसानै:
संसार सागर विलंघन हेतु सेतु
माप्लावये त्रिभुवनैक पतिं जिनेन्द्रम्।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि वर्द्धमान पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परम देवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खण्डे भारत देशे..... प्रदेशे..... नगरे श्री 1008..... जिन चैत्यालय मध्ये वीर निर्वाण सं0..... मासोत्तम मासे..... पक्षे..... तिथौ ..... शुभ दिने मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकाणां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नम:।

तीर्थोत्तम - भवै - नीरै:, क्षीर - वारिधि - रूपकै:।
स्नपयामि सुजन्माप्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

(यह पढ़ते हुये कलश से 108 धारा प्रतिमा जी पर छोड़े)

पानीयचंदनसदक्षतपुष्पपुञ्ज, नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन।
कर्माष्टकक्रथनवीरमनंतशक्तिं,सम्पूजयामिसहसामहसांनिधानम्।।13।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा मुहु - र्निज - करै - रमृतोप - मेयै:
स्वच्छै - र्जिनेन्द्र ! तव चन्द्र - करा - वदातै:।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त - रम्ये
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।14।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमा जी पोछें)

स्नानं विधाय भवतोऽष्ट - सहस्र - नाम्ना -
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु - रिष्टि - मिन तेऽष्ट - तयीं विधातुं
सिंहासने विधि - वदत्र निवेशयामि।।15।।

(यह पढ़कर प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें)

जल - गन्धाक्षतै: पुष्पैश्, चरु - दीप - सुधूपकै:।
फलै - रर्घे - र्जिनमर्चे, जन्मदु:खापहानये।।16।।

ॐ ह्रीं पीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावें)

नत्वा परीत्य निज - नेत्र - ललाट - योश्च
व्यातु - क्षणेन हरता - दघ - संचयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पाद - योगाद्
भूयाद् - भवातपहरं धृतमादरेण।।16।।

(यह पढ़कर गन्धोदक नेत्र व ललाट पर लगावें)

इमे नेत्रे जाते सुकृत - जल - सिक्ते - सफलिते
ममेदं मानुष्यं कृति - जन - गणा - देय - मभवत्।
मदीयाद् - भल्लाटा - दशुभतर - कर्माटन - मभूत्
सदेदृक् पुण्यार्हन् मम भवतु ते पूजनविधौ।।18।।

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़े)

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी,तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि- शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार।।3।।

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो धरता, निज गुण रास।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को,नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दों जिनदेव को, करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछू उपाव।।6।।

भविजन को भव-कूप तें, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भण्डार।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में,भविजन को शिवगैल।।8।।

तुम पद-पङ्कज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलें आप तें आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहें,नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे कुधी,जय जय जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टि तें, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।

जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार।।20।।

वन्दों पाँचों परमगुरु सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मङ्गलकरन, पूरन परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।

मङ्गल मूरत परम पद, पञ्च धरो नित ध्यान।
हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान।।23।।

मङ्गल जिनवर पद नमों, मङ्गल अर्हन्त देव।
मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव।।24।।

मङ्गल आचारज मुनि, मङ्गल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मङ्गल करो, वन्दौं मन-वच-काय।।25।।

मङ्गल सरस्वती मात का, मङ्गल जिनवर धर्म।
मङ्गलमय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म।।26।।

या विधि मङ्गल से सदा जग में मङ्गल होत।
मङ्गल 'नाथूराम' यह भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

नित्य पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णंमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजितमंत्रोऽयं, सर्व-विघ्नविनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतः।।3।।

एसो पंच-णमोयारो,सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मङ्गलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक- विनिर्मुक्तं, मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

पञ्चकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।1।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पञ्चकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनाष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र-दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं।
स्याद्वादनायक मनन्तचतुष्टयार्हम्।।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय।
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय।।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ्मयाय।
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव परभाव-विभासकाय।।

स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्यवल्गान्।
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।

अर्हन् पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद्विमल -केवलबोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मःस्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मङ्गल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधि-ज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं, संभिन्न-संश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण- विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्बृहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक-बुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

जंघानलश्रेणि-फलाम्बु-तन्तु, प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

अणिम्नि दक्षाकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

(इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

देव शास्त्र गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

देव जिनेन्द्र दिगम्बर गुरु को, जिनवाणी को वंदन हैं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्धों का अभिनंदन है।।
जड़ रत्नों की रक्षा करते, काल अनंत गँवाया है।
तीन रत्न शाश्वत निधि पाने, दास शरण में आया है।।1।।

वीतरागता सार जगत में, जब से मैंने जाना है।
प्रभु पूजा से सिद्धालय को, पाना मैंने ठाना है।।
हृदयांगन में करूँ प्रतीक्षा, नाथ बुलाने आया हूँ।
ज्ञान वेदी पर आन विराजो, यही भाव ले आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिसमूह!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह !विद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह !अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिसमूह
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह !विद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिसमूह!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

ज्ञान सिंधु लहराता मुझमें, फिर भी राग में जलता हूँ।
जलन सही ना जाती मुझसे, प्रभु आश पर पलता हूँ।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, राग आग का शमन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो
जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

चंदन सा शीतल स्वभाव पा, द्वेष अनल में झुलस गया।
किन्तु सौम्य जिन मूरत लख कर, सारे जग को भूल गया।।

देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, द्वेष दाह का शमन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

अक्षय पुर का वासी होकर, खंडित सुख को चाह रहा।
नंत बार धिक्कार मुझे है, निज स्वभाव से दूर रहा।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अक्षय पद का वरण करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

कल्पतरु सम स्वभाव मेरा, ज्ञान पुष्प सुरभित होते।
काम भोग की आँधी में सब, फूल गिरे धूमिल होते।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, निज स्वरूप में रमण करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

समता रस का कूप भरा है, फिर भी तृष्णा प्यासी है।
स्वयं नाथ होकर इच्छा की, बनी चेतना दासी है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अध्यातम रस पान करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

ज्ञान सूर्य चेतन प्राची में, अनंत किरणों वाला हैं।
फिर भी मिथ्यातम ने घेरा,छाया घोर अंधेरा है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, मोह तिमिर का नाश करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ....।

चेतन गृह में चिन्मय धूप, निरंतर जलती रहती है।
फिर भी भाव कर्म की शक्ति, मुझको छलती रहती है।।

देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, वसु कर्म विध्वंस करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रत्नत्रय तरुवर पर सुंदर शिवफल प्राप्त किया स्वामी।
पुण्य फलों में राग भाव कर, भटक रहा मैं भवगामी।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, विधिबंधन को नाश करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं स्वामी।
दर्शन ज्ञान चरित गुण आदि, निज में प्रगट करूँ स्वामी।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अनर्घ्य पद को प्राप्त करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

जयमाला

(चौबोला छंद)

चार घातिया सर्व नाश कर अर्हत पद को पाया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, प्रभु को शीश नवाया है।।
छियालीस गुण कहने को है, अनंत गुण के धारी हैं।
नंत चतुष्टय युक्त जिनेश्वर, तीन लोक हितकारी हैं।।1।।

बिन इच्छा खिरती उपकारी, मेघ गर्जना समवाणी।
स्व पर भेद विज्ञान कराती, तीन जगत की कल्याणी।।
तालु ओष्ठ कंठादि न हिलते, नहीं बदलती मुख कांती।
द्वादशांग ओंकारमयी हैं, सर्व अंग से है खिरती।।2।।

वर्तमान के भरत क्षेत्र में, सिद्ध और अरहंत नहीं।
तीन परमपद धारी दिखते, सूरी पाठक और मुनी।।

सूरीश्वर पाठक साधू गण, रत्नत्रय के धारी हैं।
पथ भूलों को राह दिखाते, गुरुवर भव दुख हारी हैं।।3।।

मन वच तन से गुरुचरणों में, अपना शीश झुकाता हूँ।
जिनवर सी पावन मुद्रा लख, जीवन अर्पण करता हूँ।।
विदेह जाने की नहीं शक्ति, अतः यही से नमन करूँ।
सीमंधर से अजितवीर्य तक, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।।4।।

एक साथ इक शत सत्तर भी, तीर्थंकर हो सकते हैं।
किंतु न्यूनतम बीस तीर्थंकर, विदेह में हो सकते हैं।।
ढाई द्वीप के पन विदेह में, विद्यमान जिन को वंदन।
समवसरण के मध्य विराजे, श्रद्धा से कर लूँ अर्चन।।5।।

शीघ्र दर्श प्रत्यक्ष मुझे हो, यही भावना भाता हूँ।
भावों से जब वंदन करता, समीप ही मैं पाता हूँ।।
मुक्ति का ही लक्ष्य बनाकर, सिद्ध प्रभु का ध्यान धरूँ।
अभेद रत्नत्रय को पाऊँ, सिद्धक्षेत्र में वास करूँ।।6।।

सम्यक् दर्शन देव, शास्त्र से ज्ञान, गुरु से चारित हो।
बीस तीर्थ दर्शन से शांति, सिद्ध दर्श से सिद्धि हो।।
देव शास्त्र गुरु पर श्रद्धा हो, बीस तीर्थंकर वंदन हो।
सिद्ध शुद्ध पावन परमेष्ठी अष्टकर्म मम खंडन हो।।7।।

-:: दोहा ::-

अनुपम जग में आप हो, इच्छित फल दातार।
शाश्वत शिव फल दीजिये, प्रभु पूजा आधार।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिव पथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सोलह - कारण - पूजन

स्थापना

(हरिगीतिका छंद)

शुभ नाम तीर्थंकर सु कारण, भावना सोलह कही।
सुर पंच कल्याणक मनाते, रत्न वृष्टि हो रही।।
जिन धर्म तीरथ रथ चलाते, तीर्थंकर हितकार हैं।
भविजीव को भवसिंधु तारें, भावना सुखकार हैं।।1।।

-:: दोहा ::-

उत्तम सोलह भावना, भावे बारम्बार।
तीर्थनाथ की अर्चना, देती शिव सुख सार।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(नरेन्द्र छंद)

मैं हूँ निर्मल शुद्ध आतमा, रूप नहीं लख पाया।
जनम जरामृत के दुःखों को, देख देख घबराया।।
सोलह कारण शुद्ध भावना, श्रद्धा युत जो भावे।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, तीर्थंकर पद पावे।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

क्रोधादिक का ताप न मुझमें, द्वेष स्वरूप न मेरा।
किन्तु विकारों में झुलसा हूँ, ताप मिटा दो मेरा।।सोलह...।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

आतम अक्षय रूप अखंडित, उसे कभी न निहारा।
पर परणति में उलझ रहा हूँ,मिला न कहीं सहारा।।सोलह...।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

आत्म रूप है पुष्प सा कोमल, पावन गंध न भायी ।
अब तक इंद्रिय मन विषयों की,दुर्गंधी मन भायी। ।सोलह... ।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनायपुष्पं ...।

ज्ञानानंद सुधा रस आतम, फिर क्यों क्षुधा सताती।
व्यंजन षटरस खाये अनगिन, तृप्ति नहीं हो पाती। ।सोलह... ।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्यं ....।

आत्म ज्ञान दीपक निज में है, उसको नहीं जलाया।
बाहर लाखों दीप जले पर,मिटा नहीं अँधियारा। ।सोलह... ।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो मोहांधकारविनाशनायदीपं ....।

कर्म स्वभाव भिन्न मुझसे है, ये जड़ मैं चेतन हूँ।
फिर भी ये बलजोर नाथ कमजोर हुआ मैं क्यों हूँ। ।सोलह... ।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अष्टकर्मदहनायधूपं ....।

स्वानुभूति फल मधुर स्वयं में, कभी नहीं चख पाया।
कर्म फलों के रस को पीकर,काल अनंत बिताया। ।सोलह... ।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तयेफलं ....।

जग के सारे नश्वर पद तज, प्रभु शरण में आया।
सिद्धों के वसु गुण पाने यह, अर्घ्य बनाकर लाया।।
सोलह कारण शुद्ध भावना, श्रद्धा युत जो भावे।
तीन लोक में पूज्य श्रेष्ठ शुभ, तीर्थंकर पद पावे।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

सोलह कारण भावना, तीर्थंकर पद हेतु।
गुणमाला अर्पण करूँ, पा जाऊँ शिव सेतु।।1।।

(चाल - शेर)

जय तीर्थनाथ की करूँ मैं आज अर्चना।
जय दर्श विशुद्ध्यादि को मम भाव वंदना।।
शुभ भावना के भाव से तीर्थेश हो गये।
हम भव्य जीव आपके ही दास हो गये।।2।।

शंकादि दोष मुक्त शुद्ध हो गया दर्शन।
दर्शन विशुद्धि भावना को भाव से नमन।।
चारों विनय धरे वही सु-साधना करें।
शिवद्वार खोल मोक्ष नार दर्श वो करें।।3।।

व्रत शील को निर्दोष रूप पालते सदा।
निज आत्मा को देह से ही मानते जुदा।।
निज ज्ञान को वे ज्ञान भाव श्रुत में लगाते।
अभीक्ष्ण ज्ञान में सदा उपयोग रमाते।।4।।

संसार से भयभीत है विरक्त भावना।
तन भोग से निरीह हुए मोक्ष कामना।।
शक्ति न छिपाये कभी चऊँ दान जो करें।
इच्छा निरोध करके ही वे घोर तप करें।।5।।

बारह प्रकार के तपों से कर्म नशाते।
ऐसे महा तपस्वियों को शीश झुकाते।।
जो ध्यान लीन साधकों के विघ्न टारते।
सम्यक् समाधि अंत हो ये भाव धारते।।6।।

रोगी मुनि की सेवा जो नि:स्वार्थ ही करें।
निरोग हो स्वयं अनंतवीर्य को धरें।।
अरिहंत भक्ति आत्म शक्ति मुक्ति प्रदाता।
गुणगान जो करे उसे न पाप सताता।।7।।
आचार्य देव के गुणों की भक्ति जो करें।
संयम की नाव पाय के भव सिंधु को तरे।।
है ज्ञानवान उपाध्याय बहुश्रुत धरें।
आगम पढ़े सुने सदा वो सर्व गुण भरें।।8।।
आवश्यकों को नित्य जो अवश्य आचरें।
मन वश करे, स्वतंत्र हो, निष्काम पद वरें।।
दश धर्म सत्यधर्म की हो जग प्रभावना।
पूजा विधान दान से हो धर्म भावना।।9।।
जिन धर्म देव शास्त्र गुरु को प्रणाम हो।
इनके गुणों में प्रीत हो वात्सल्य भाव हो।।
शुभ भावनाओं की प्रभु जी शक्ति दीजिये।
हे तीर्थनाथ भावना को 'पूर्ण' कीजिये।।10।।

-:: घत्ता ::-

जय सोलह कारण, भव दुख वारण, कर्म निवारण कारण हैं।
तीर्थंकर पद की, अनुपम सुख की, दाता भविजन तारण हैं।।11।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिव पथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

नवदेवता पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

अरि चार घाति विनाश कर, अरहंत पद को पा लिया।
पुरुषार्थ प्रबल किया प्रभो, मुक्तीरमा को वर लिया।।
अरहंत पथ पर चल रहे, आचार्य पद वंदन करूँ।
उवज्झाय साधु श्रेष्ठ पद का, भक्ति से अर्चन करूँ ।।1।।
जिन धर्म आगम चैत्य चैत्यालय शरण को पा लिया।
भव सिंधु पार उतारने, नौका सहारा ले लिया।।
यह भावना मेरी प्रभो, मम ज्ञान महल पधारिये।
निज सम बना लीजे मुझे, जिनराज पदवी दीजिये।।2।।

-:: दोहा ::-

सुख दाता नव देवता, तिष्ठो हृदय मँझार।
भावों से आह्वान करूँ, करो भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयसमूह !
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयसमूह !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य चैत्यालयसमूह!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - माता तू दया करके .....)

जिनको अपना माना, उनसे ही दुख पाया।
फिर भी क्यों राग किया, यह समझ नहीं आया।।
यह राग की आग मिटे, ऐसा जल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो
जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

प्रभो ! काल अनादि से, भव का संताप सहा।
अब सहा नहीं जाता, यह मेटो द्वेष महा।।
इस द्वेष की ज्वाला को, अब शांत करो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।2।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं....।

जिसको मैंने चाहा, सब नश्वर है माया।
जिस तन में हूँ रहता, क्षणभंगुर वह काया।।
क्षत विक्षत जग सारा, अब जाऊँ कहाँ स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।3।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्....।

इस काम लुटेरे ने, आतम धन लूट लिया।
मैं मौन खड़ा निर्बल, बस तेरा शरण लिया।।
विश्वास मुझे तुम पर, आतम बल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।4।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

इस क्षुधा रोग से मैं, प्रभुवर लाचार रहा।
व्यंजन की औषध खा, ना कुछ उपचार हुआ।।
प्रभु तू ही सहारा है, यह रोग नशे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।5।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

पर तत्त्व प्रशंसा में , महिमा पर की आयी।
नर तन में रहकर भी, निज की ना सुध आयी।।
अब ज्ञान ज्योति प्रगटे, आशीष मिले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।6।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

कर्मों की आँधी में, चेतन गृह बिखर गया।
आया अब दर तेरे, निज आतम निखर गया।।
शुभ ध्यान अनल में ही, वसु कर्म जले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।7।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

पापों का बीज बोया, कैसे शिव फल पाऊँ।
तप धारूँ कर्म नशे, तब सिद्ध शिला पाऊँ।।
मुझे पास बुला लेना, यह अरज सुनो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।8।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

वसु कर्मों ने मिलकर, दिन रात जलाया है।
गुरुदेव कृपा पाकर, यह अर्घ्य बनाया है।।
यह पद अनर्घ्य अनमोल, हो प्राप्त मुझे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।9।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

-:: जाप्य ::-

(ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः) ।।9 बार।।

जयमाला

-:: दोहा ::-

नव देवों की भक्ति से, सब अरिष्ट नश जाय।
आत्म सिद्धि को प्राप्त कर, अष्टम वसुधा पाय।।1।।

-:: चौपाई ::-

जय अरहंत देव जिनराई, तीन लोक में महिमा छाई।
घाति कर्म चउ नाश किये हैं, भव्य जनों में वास किये हैं।।2।।

दोष अठारह दूर किये हैं, छयालीस गुण पूर्ण हुये हैं।
समवसरण के बीच विराजे, तीर्थंकर पद महिमा राजे।।3।।

क्षणभंगुर सारा जग जाना, जड़ चेतन को भिन्न पिछाना।
कल्याणक सब पंच मनाये, देव इंद्र हर्षित गुण गाये।।4।।

प्रभो! आपने प्रभुता पायी, दो हमको समता सुखदायी।
दुष्ट करम ने मुझको घेरा, निज स्वभाव से मुख को फेरा।।5।।

प्रभु आप सिद्धालय वासी, दर दर भटका मैं जगवासी।
अब निज भूल समझ में आई, सिद्धदशा ही मन में भायी।।6।।

करो नमन स्वीकार हमारा, भव सागर से करो किनारा।
कर्म भँवर में मेरी नैया, गुरुवर तुम बिन कौन खिवैया।।7।।

गुण छत्तीस मुनीश्वर धारे, इस कलयुग में आप सहारे।
दीक्षा देकर राह दिखाते, खुद चलते चलना सिखलाते।।8।।

उपाध्याय पद है तम नाशे, गुण पच्चीस ज्ञान परकासे।
अट्ठाईस गुणों के धारी, साधू पद की महिमा भारी।।9।।

श्री जिनधर्म अहिंसा प्यारा, गूँज उठा है जग में नारा।
आगम आतम बोध कराता, फिर चेतन का शोध कराता।।10।।

जिनने आगम को अपनाया , अहो भाग्य तुम सा पद पाया।
अनेकांत मय धर्म सहारा, द्वादशांग को नमन हमारा।।11।।

कर्म निकाचित् निधत्ति विनाशे ,बिम्ब जिनेश्वर आत्म प्रकाशे।
निज स्वरूप का बोध कराती, जिन सम जिन मूरत कहलाती।।12।।

जो जन नित जिन मंदिर जावे, पाप नशे औ पुण्य बढ़ावे।
परमातम का ध्यान लगावे, शुद्ध होय मुक्तीपुर जावे।।13।।

नव देवों को शीश झुकाऊँ , गुण गाऊँ और ध्यान लगाऊँ।
रहूँ सदा मैं प्रभुवर चरणा, भव भव मिले आपकी शरणा।।14।।

-:: दोहा ::-

पूर्व पुण्य से हो रहा, नव देवों का दर्श।
अल्प बुद्धि कैसे लहे, अनंत गुण का स्पर्श।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य- चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिव पथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।।इत्याशीर्वादः।।

ॐ

श्री तीर्थंकर विधान प्रारंभ

मंगलाचरण

-:: दोहा ::-

चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य वसु धार।
अनंत चतुष्टय युक्त जिन, प्रणमूँ बारंबार।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जीवन एक मरुस्थल जैसा, कर्म ताप भरपूर है।
शांति नहीं है मन में किञ्चित, भेद ज्ञान से दूर है।।
ऊँचा कुल पाकर भी करता, नीच पाप मय कर्म है।
धन दौलत माया को पाकर, मानव भूला धर्म है।।2।।

हेय तत्त्व आदेय तत्त्व का, भान नहीं है किञ्चित भी।
विषय भोग में गँवा रहा है, मौलिक मानव जीवन ही।।
इसीलिए पथ भूलों को, चौबीस जिनेश्वर आश्रय हैं।
भाव सहित पूजा विधान कर, पा लेते सिद्धालय हैं ।।3।।

वर्तमान चौबीसी पूजा, है विधान मंगलकारी।
श्रद्धा से जो पूजन करते, होते शिवसुख अधिकारी।।
दुर्भावों को तुरत मिटाता, कषाय मल का शमन करे।
साधर्मी में प्रेम बढ़ाता, वीतराग पथ गमन करे।।4।।

कर्मोदय से घिरा हुआ हो, मन सुख कहीं न पाता हो।
तन मन के हो दुःख भयंकर, आतम में नहीं साता हो।।
पाप पुण्य में संक्रम करता, मनवांछित सुख पूर्ण करे।
सर्व ग्रहों को शांत कराता, सर्व व्याधियाँ दूर करे।।5।।

तीर्थंकर पूजन जो करता, आतम आनंद पाता है।
कालांतर में स्वयं जिनेश्वर, होकर मुक्ति पाता है।।
चौबीसों तीर्थंकर की जो, पूजन करता भक्ति से।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाकर, नाता जोड़े मुक्ति से।।6।।

श्री चौबीसी समुच्चय जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय आदि जिनेश्वर अंतिम, महावीर प्रभु दया निधान।
आत्म शक्ति का आश्रय ले तीर्थंकर पद पाया अभिराम।।

भवसागर के तीर ले चलो, तीर्थंकर मेरे जिनराज।
भाव सहित वंदन करता हूँ, पावन हो मन मंदिर आज।।

जहाँ-जहाँ पर आप विराजे, नमन मेरा स्वीकार करो।
पास बुला लो या आ जाओ, पूजन को स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

अनगिन सागर का जल पीकर, तृषा नहीं बुझ पाई है।
अनुपम शीतल समता जल की, याद कभी ना आई है।।
हृदय कलश लेकर आया हूँ, श्रद्धा से करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

भव ज्वाला से झुलस गया हूँ, मुझे बचालो हे स्वामी।
पंचेन्द्रिय सुख नहीं चाहता, अनंत सुख चाहूँ स्वामी।।
पास नहीं कुछ मेरे जिनवर, भाव समर्पण है चंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

आत्मज्ञान वैभव के अक्षत, से अब तक अनजान रहा।
अक्षय निधि दानी हे जिनवर ! तव दर्शन वरदान रहा।।

क्षणभंगुर काया का मैंने, किया आज तक अभिनंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

काम भयंकर अभिमानी जो, तीखे तीर चलाता है।
किंतु आपकी मुद्रा लख क्यों, अपनी नजर झुकाता है।।
परम ब्रह्म ज्ञानी जिनवर मैं, करता हूँ जीवन अर्पण।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

क्षुधा रोग के कारण मैंने, बहु उपचार किये स्वामी।
भेद ज्ञान औषध नहीं पायी, अतः व्यथित हूँ मैं स्वामी।।
शरणागत पर करुणा कीजे, यही प्रार्थना है भगवन्।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मैंने अपने ज्ञान भानु को, मिथ्या घन में छिपा दिया।
इसीलिए निज घर ना सूझा, किंतु आपने दिखा दिया।।
हे जिनवर अज्ञान मिटा दो, ज्ञान दीप ले करूँ नमन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

अष्ट कर्म विध्वंस करूँ अब, चिन्मय धूप जलाऊँ मैं।
हे सर्वज्ञ जिनेश्वर मेरे, सिद्धालय कब पाऊँ मैं।।
है अधीर यह भक्त तुम्हारा, कह दो कुछ आशीष वचन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

मोक्ष महाफल अति दुर्लभ है, सुलभ करो मेरे जिनवर।
पुण्य फलों में अहं भाव से, रिक्त करो मेरे प्रभुवर।।

दिखला दो शिवपंथ मुझे भी, शीश झुका करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जड़ द्रव्यों का मूल्य किया पर, आत्म द्रव्य अनमोल रहा।
फिर भी निज को जड़ द्रव्यों से, मैं मूरख क्यों तोल रहा।।
शिवपथ की आशा ले आया, अर्घ्य चढ़ा करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

श्री चौबीस जिनेश को, बारंबार प्रणाम।
एक यही बस कामना, पाऊँ शिवपुर धाम।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, तीर्थंकर को करूँ प्रणाम।
रत्नत्रय को प्राप्त करूँ मैं, हो जाऊँ निश्चल निष्काम।।
प्रभो ! आपकी भक्ति से मैं, पाऊँ शाश्वत मुक्तिधाम।
संयम पथ का अनुरागी शिवराह चलूँ अविरल अविराम।।2।।

आदि जिनेश्वर आदिनाथ, प्रभु अरज सुनाने आया हूँ।
कर्म जयी जिन अजितनाथ, मैं तुमसा बनने आया हूँ।।
हे जिनवर संभव करुणा कर , भवदधि पार लगा देना।
हे अभिनंदन अभिनंदनीय, कर्मों के बंध छुड़ा देना।।3।।

मैं अल्पमति हूँ सुमतिनाथ, सन्मति प्रदान मुझको कर दो।
जग में ना कोई वैरी हो, पद्मप्रभ मैत्री से भर दो।।

जय-जय सुपार्श्व जिनराज मेरी, दृष्टि को स्व सन्मुख कर दो।
चन्द्रप्रभ चरण शरण में हूँ, बस एक नजर मुझ पर कर दो।।4।।

हे पुष्पदंत हो कर्म अंत, शिवपंथ सुविधि बतला देना।
शीतल जिनराज हमारे हो, क्रोधानल शीतल कर देना।।
हे श्रेयनाथ दो श्रेय पंथ वसु कर्मशैल चकचूर करूँ।
श्री वासुपूज्य शत इंद्र पूज्य, मैं राग द्वेष को दूर करूँ।।5।।

हे विमल नाथ ! निर्मल कर दो, उपकार सदा ही स्मरण करूँ।
हे नाथ अनंत बली मेरे शक्ति दो सम्यक् मरण करूँ।।
धर्मनाथ पद शीश नवाकर, आर्त रौद्र का नाश करूँ।
धर्मध्यान को धारण करके, शुक्लध्यान को प्राप्त करूँ।।6।।

हे शांतिनाथ तव शांत मूर्ति लख, परम शांत रस पान करूँ।
श्री कुंथुनाथ जिन चरणों में, अब निज का ही नित ध्यान धरूँ।।
हे अरहनाथ तव चरणों में शुभ, भाव सँजोकर लाया हूँ।
इस मोह मल्ल को चूर करो श्री मल्लिनाथ दर आया हूँ।।7।।

हे मुनिसुव्रत ऐसा व्रत दो मैं, नाथ स्वयं का बन जाऊँ।
अब हार गया जग से स्वामी नमिनाथ शरण को पा जाऊँ।।
हे नेमिनाथ मैं डूब रहा, भव पार करो मेरे स्वामी।
उपसर्ग विजेता पार्श्व प्रभु सब, जग के प्रिय अंतर्यामी ।।8।।

हे मंगलकारी महावीर अति, वीर मुझे आतम बल दो।
कलयुग में हो आप सहारे, हम भक्तों को संबल दो।।
हे तीर्थंकर ज्ञान सरोवर, मैं प्राणी अज्ञानी हूँ।
भव-भव में बस जन्म मरण की, दुख से भरी कहानी हूँ।।9।।

याचक बनकर आया तेरे, दर पर पाने शुभ आशीष।
हे मेरे चौबीस जिनेश्वर, पद में आज नवाऊँ शीश।।
श्री चौबीस जिनेश्वर पद में वंदन करता बारंबार।
अंतर्यामी त्रिभुवन नामी, हम सबके जीवन आधार।।10।।

-:: दोहा ::-

मन वच तन से पूजते, वे होते भव पार।
मैं तव चरण सदा रहूँ, क्यों ना हो उद्धार।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संता। हरो।
नित पूज रचाऊँ , ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री आदिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

आदि जिनेश्वर आदिनाथ प्रभु के चरणों में करूँ नमन।
नाभिराय के राजदुलारे माँ मरुदेवी के नंदन।।
पतित जनों को नाथ आपने दिया मुक्ति का अवलंबन।
श्रद्धा भाव विनय से करता तव चरणों का आह्वानन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

क्षीरोदधि का क्षीर वर्ण सम, श्रद्धा जल लेकर आया।
श्री चरणों में भेंट चढ़ाने, और नहीं कुछ भी लाया।।
आदीश्वर जिनराज आपने, श्रद्धा जल यदि स्वीकारा।
पा जाऊँगा निश्चित ही मैं, जन्म मृत्यु से छुटकारा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ...।

चंदन जलता स्वयं किंतु, अपनी सुगंध फैलाता है।
तव चरणों की पूजा का वह, द्रव्य स्वयं बन जाता है।।

आदीश्वर जिनराज हमारे, चंदन को यदि स्वीकारा।
पा जाऊँगा भवाताप से, निश्चित ही मैं छुटकारा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

उज्ज्वल अक्षत तंदुल लेकर, द्वार आपके आया हूँ।
दूर करोगे पाप बोझ से, आशा लेकर आया हूँ।।
आदीश्वर जिनराज अर्चना के अक्षत स्वीकार करो।
अखंड अक्षय सुख दो मुझको, नश्वरता से दूर करो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

रोग भयंकर विषय भोग का, कहीं नहीं उपचार हुआ।
विवश हो गया मारा-मारा, हार गया लाचार हुआ।।
आदीश्वर जिनराज भक्ति के, सुमन यदि स्वीकारोगे।
है विश्वास अटल यह मेरा, निज सम आप बना लोगे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

सुमेरु पर्वत जितना खाया, क्षुधा रोग ना शांत हुआ।
कई समंदर रिक्त किये पर, तृषा रोग ना शमन हुआ।।
आदीश्वर जिनराज चरण में, चरु चढ़ाने आया हूँ।
पूर्ण भरोसा तुम पर स्वामी, क्षुधा मेटने आया हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

छाया मिथ्या घोर अँधेरा, गिरा अँधेरे में हर बार।
श्रद्धा दीपक आप जला दो, निज दर्शन कर लूँ इस बार।।
आदीश्वर जिनराज आपका, यह उपकार न भूलूँगा।
जब तक श्वास रहेगी घट में, तेरी ही जय बोलूँगा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

किया बहुत पुरुषार्थ मगर, कर्मों का नाश न कर पाया।
अहंकार को तजकर प्रभु जी, आप शरण में हूँ आया।।
आदीश्वर जिनराज यदि मैं, एक नजर पा जाऊँगा।
संसारी फिर नहीं रहूँगा, मुक्तिनाथ कहलाऊँगा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

मोक्ष मिलेगा इस आशा में, काल अनंता बिता दिया।
दुष्कर्मों ने ऐसा लूटा, नाम धर्म का मिटा दिया।।
आदीश्वर जिनराज शीश फल, अपना आज नवाऊँगा।
पार किया ना तुमने जिनवर, और कहाँ मैं जाऊँगा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तेये फलं ....।

मेरे पास रखा ही क्या है, कैसे अर्घ्य बनाऊँगा।
आतम धन से निर्धन हूँ मैं, अब तुम सम बन जाऊँगा।।
आदीश्वर जिनराज आज यदि, अपना भक्त बनाओगे।
सच कहता हूँ शीघ्र मुझे भी, सिद्धालय में पाओगे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

सर्वार्थसिद्धि को तजकर स्वामी, नगर अयोध्या में आये।
कर्मभूमि के आदि जिनेश्वर, मरुदेवी उर में आये।।
शुभ आषाढ़ कृष्ण द्वितीया को, धन्य हुई यह वसुंधरा।
शरद पूर्णिमा का चंदा ही, मानो धरती पर उतरा।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

तीन लोक में सब जीवों को, कुछ पल सुख का भान हुआ।
जन्म हुआ है 'आदि' प्रभु का, देवों को यह ज्ञान हुआ।।
चैत वदी नवमी का दिन था, नाभिराय गृह जन्म लिया।
गिरि सुमेरु पर पांडुक वन में, क्षीरोदधि से न्हवन किया।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममंगलमंडितायश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जन्म कल्याणक की खुशियाँ थी, तप संयम में बदल गई।
नीलांजन का नृत्य देख, दृष्टि शिव पाने मचल गई।।
चैत कृष्ण की नवमी शुभ थी, पंच मुष्टि कचलोंच किया।
जय-जय ऋषभनाथ जिनवर ने, उत्तम मुनि पद धार लिया।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन वदी एकादशी को, प्रभु चार घातिया नाश किया।
कर पुरुषार्थ प्रबल जिनवर ने, केवलज्ञान प्रकाश लिया।।

समवसरण में सब जीवों के, मिथ्यातम का नाश हुआ।
हुई प्रफुल्लित धरती ही क्या, प्रमुदित सब आकाश हुआ।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस के दिन, कैलाश गिरि ने यश पाया।
आठों कर्म विनाशे प्रभु ने, अष्टम वसुधा को पाया।।
तीर्थंकर से परिणय करके, मुक्तिरमा भी धन्य हुई।
जय-जय आदीश्वर नारों से, पावन धरा अनन्य हुई।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

भक्ति भरी आराधना, कर लो प्रभु स्वीकार।
शरण आपकी पा गया, हो जाऊँगा पार।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय आदिनाथ तीर्थंकर, धर्म सारथी तुम्हें प्रणाम।
निज स्वभाव साधन से तुमने, पाया शाश्वत मुक्तिधाम।।
पंद्रह मास रतन बरसे औ, माँ को सोलह स्वप्न दिये।
तीन ज्ञान के धारी जिनवर, भूतल पर विख्यात हुये।।2।।

जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महा विशाल।
नाभिराय अंतिम कुलकर से, जन्में मरुदेवी के लाल।।
देवों ने अति हर्ष भाव से, पाण्डु शिला अभिषेक किया।
बालपने में ही जिनवर ने आत्म शक्ति को दिखा दिया।।3।।

राज्य अवस्था में ही सारे, जग के कष्ट मिटाये थे।
मोक्ष पंथ के राही थे पर, शुभ षट्कर्म सिखाये थे।।
नीलांजन का नृत्य देखकर, वस्तु स्वरूप विचार किया।
लौकांतिक देवों ने आकर, नत हो जय-जय कार किया।।4।।

सिद्धारथ वन में जाकर प्रभु, निज आतम का किया मनन।
नमः सिद्धेभ्यः भावों से कह , सब सिद्धों को किया नमन।।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्लध्यान में हुए मगन।
चार घातिया कर्म नाश कर, पाया केवलज्ञान गगन।।5।।

मैं संसारी कर्म जाल में, फंसो चतुर्गति किया भ्रमण।
रुचि न जागी सिद्ध स्व पद की, अतः कर रहा जन्म मरण।।
समवसरण में नाथ आपने, सप्त तत्त्व उपदेश दिया।
वृषभसेन गणधर से श्रोता, भरतराज ब्राह्मी आर्या।।6।।

धर्मचक्र का किया प्रवर्तन मंगल मय जब हुआ विहार।
धन्य हुआ कैलाशधाम जब, हुआ कर्म का उपसंहार।।
बिना आपकी शरण जिनेश्वर, अनंत भव में भ्रमण किया।
सिद्धालय को पा जाऊँ बस, इसी भाव से शरण लिया।।7।।

आज आपकी पूजा करके, मेरे मन आनंद हुआ।
पुण्य कर्म का उदय हुआ औ, पाप कर्म भी मंद हुआ।।
हे प्रभुवर तव पथ पर चलकर, शाश्वत सुख को पा जाऊँ।
घबराया हूँ इस भव वन में, कब शिवनगरी आ जाऊँ।।8।।

आदि तीर्थ करतार जिनेश्वर, मुक्ति के प्रभु हो आधार।
दुष्कर्मों का नाश कीजिये, शीघ्र करो मेरा उद्धार।।
ज्ञान नहीं है शब्द नहीं हैं, भावों की गूंथी यह माल।
नमन करूँ स्वीकारो जिनवर, श्रद्धा से अर्चित जयमाल।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

-:: घत्ता ::-

हे प्रथम जिनेश्वर, श्री आदीश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री अजितनाथ जिन पूजन

स्थापना

(सखी छंद)

श्री अजितनाथ पद वंदन, स्वीकारो मम अभिनंदन।
अति पुण्य उदय है आया, करने आया हूँ अर्चन।।
प्रभु आप स्वयं वैरागी, मैं तव चरणन अनुरागी।
है काल अनंत गंवाया, अब प्रीत प्रभु से जागी।।
मैं ध्याऊँ शाम सवेरा, मेटो भव-भव का फेरा।
नहीं और लगाओ देरी, भक्तों ने प्रभुवर टेरा।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(सखी छंद)

भवसागर डूब रहा हूँ, कर्मों से ऊब रहा हूँ।
अब पार लगा दो नैया, चरणों में आन खड़ा हूँ।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

प्रभु बहुत लगाया चंदन, ना किया प्रभु पद वंदन।
यह भूल हुई प्रभु मुझसे , मेटो सारा दुख क्रंदन।। श्री ...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

पर को ही अपना माना, निज को खंडित पहचाना।
यह भूल हुई है भारी, नहीं दिखता कहीं ठिकाना।। श्री ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

यहाँ मोह की मदिरा पी है, अपनी ही सुध बिसरी है।
फिर दोष दिया है पर को, चेतन कलियाँ बिखरी हैं।। श्री ...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

तृष्णा ने जाल बिछाया, मैं समझ नहीं कुछ पाया।
हो गया क्षुधा का रोगी,चरु औषध पाने आया।।
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

अज्ञान अँधेरा छाया, मिथ्यातम ने भरमाया।
निज घर को ही प्रभु भूला, नहीं दिखता चेतन राया।।श्री...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

हूँ स्वयं ही पर का कर्ता, मिथ्या भ्रम सारी जड़ता।
समकित की धूप मिले तो, सारे बंधन हर लेता।।श्री...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

निज सुख पलभर न पाया,सुख दुख फल में भरमाया।
शिव सुख फल रस का प्याला, अब जी भर पीने आया।।श्री...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

अब तक कई अर्घ्य चढ़ाये,प्रभु एक नहीं मन भाये।
वसु द्रव्य चढ़ा प्रभु आगे, यह दास चरण सिर नाये।।श्री...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

कृष्ण अमावस ज्येष्ठ मास को, विजया माता हर्षाए।
विजय विमान त्याग कर प्रभुजी, नगर अयोध्या में आए।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णअमावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कर्मों पर जय पाने वाले, अतः अजित जिन नाम दिया।
माघ शुक्ल दशमी को जन्में, पाण्डु शिला पर न्हवन किया।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

लौकांतिक देवों ने आकर, किया जगत में जय जयकार।
माघ शुक्ल नवमी को प्रभु ने, तप धारण का किया विचार।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारह वर्ष मौन रहकर फिर, पाया केवलज्ञान महान।
पौष शुक्ल एकादशी के दिन, दिया मुक्ति संदेश महान।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कूट सिद्धवर पावन भू से, चैत्र शुक्ल पंचमी का काल।
अजितनाथ ने मोक्ष प्राप्त कर, सम्मेदाचल किया निहाल।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

अजितनाथ के पद कमल, मैं पूजूँ धर प्रीत।
पर भावों से हे प्रभो, हो जाऊँ अब रीत।।1।।

(सखी छंद)

जय -जय श्री अजित जिनंदा, विजया माता के नंदा।
मैं शरण तिहारी आया, भव्यों के आप हो चंदा।।2।।

इंद्रिय मन पर जय पाई, बन गए आप मुनिराई।
प्रभु सार्थक नाम अजित है, हो गए आप जिनराई।।3।।

हुई समवसरण की रचना, झर रहें फूल सम वचना।
सब इंद्र देव भी नत हैं, प्रभु महिमा का क्या कहना।।4।।

प्रभुवर की ऐसी वाणी, यह जन-जन की कल्याणी।
कब पुण्य उदय मम आये, साक्षात् सुनूँ जिनवाणी।।5।।

वसु प्रातिहार्य की गरिमा, तीर्थंकर प्रभु की महिमा।
निर्दोष परम अतिशायी, है चतुर्मुखी जिन प्रतिमा।।6।।

प्रभु छियालीस गुण धारी, हैं अनंत गुण भंडारी।
हम अल्पमति किम गाये, चरणों में है बलिहारी।।7।।

प्रभु आप वरी शिव नारी, मैं भटक रहा संसारी।
प्रभु निज सम मुझे बना लो, पा जाऊँ पद अविकारी।।8।।
नहीं वचनों में कुछ शक्ति, बस हृदय बसी तव भक्ति।
बालक को ना ठुकराना, प्रभु देना अविचल मुक्ति।।9।।

-:: दोहा ::-

अजित प्रभु की अर्चना, संचित दुरित पलाय।
दास खड़ा कर जोड़ कर, नाशूँ सकल कषाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं .....।

-:: घत्ता ::-

श्री अजित जिनेश्वर, हे परमेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री संभवनाथ जिन पूजन

स्थापना

(चौबोला छंद)

भव-भय हारी संभव जिन के, श्री चरणों में करूँ नमन।
निज चैतन्य विहारी जिनवर, दूर करो मेरे बंधन।।
द्रव्य भाव नोकर्म रहित जो, सिद्धालय के वासी हैं।
मन मंदिर में आन विराजो, हम जिन पद अभिलाषी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - नंदीश्वर श्री जिन धाम ...)

पावन समता रस नीर, पाने मैं आया।
प्रभु जन्म मृत्यु का नाश, करने हूँ आया।।

हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो निज आतम का ज्ञान, हे अंतर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

समता रस चंदन सार, अब तक ना पाया।
प्रभु भवाताप का नाश, करने मैं आया।। हे...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

अविनश्वर पद का नाथ, मुझको ज्ञान नहीं।
शब्दों से किया है ज्ञान, निज पहचान नहीं।। हे...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

इंद्रिय के विषय मनोज्ञ, मन को भाये हैं।
निज शील रूप का दर्श, करने आये हैं।। हे...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

तृष्णा का उदर विशाल,अब तक है खाली।
आनंद अमृत से नाथ, भर दो ये प्याली।। हे...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

तिहुँलोक प्रकाशक ज्ञान, की पहचान नहीं।
है मिथ्यातम घनघोर, निज का भान नहीं।। हे...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

इस कर्म शत्रु को नाथ, निज गृह में पाला।
मेरे ही धन को लूट, निर्धन कर डाला।। हे...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

जग फल सब नीरस नाथ, तव शरणा आया।
शिवमय रस से परिपूर्ण, फल पाने आया।। हे...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

पर द्रव्यों की ही चाह, अब तक भायी है।
आतम अनर्घ्य की बात, नहीं सुहायी है।। हे...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(चौपाई)

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी प्यारी, मात सुसेना है अवतारी।
ग्रैवेयक से आये स्वामी, माथ नवाऊँ अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लअष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा आयी, श्रावस्ती नगरी हर्षायी।
पांडु शिला अभिषेक किया है, तिहुँ जग में आनंद हुआ है।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

मगसिर शुक्ल पूर्णिमा प्यारी, परिग्रह तजकर दीक्षा धारी।
देवों ने जयकार किया हैं, तव चरणों में नमन किया है।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी आई, केवलज्ञान लक्ष्मी पाई।
समवसरण की महिमा भारी, संभव जिन सबके हितकारी।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

धवलकूट विख्यात हुआ है, अष्ट कर्म का नाश किया है।
चैत्र शुक्ल षष्ठी सुखकारा, मन वच तन से नमन हमारा।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(सग्विणी छंद)

हे जिनेश्वर करूँ मैं सदा प्रार्थना।
आप सुन लीजिये भक्त की भावना।।
नाथ संभव ! करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।।1।।
सर्व ज्ञाता प्रभु हो विधाता प्रभो।
आज आया शरण पार कर दो विभो।।नाथ....।।2।।

अश्व का चिह्न पद पद्म में शोभता।
पुण्य तीर्थेश का सर्व मन मोहता।।
नाथ संभव ! करूँ आपकी अर्चना।
आत्मसिद्धी मिले एक ही कामना।।3।।

एक दिन मेघ का नाश होते दिखा।
सर्व वैभव तजा और संयम लखा।। नाथ....।।4।।

वर्ष चौदह किये मौन की साधना।
पा लिया ज्ञान कैवल्य शुद्धातमा।। नाथ....।।5।।

श्री समोसर्ण रचना करे धनपती।
नर पशु देव देवी औ आये यती।। नाथ....।।6।।

नाथ की दिव्य अमृत ध्वनि जब खिरे।
जैसे तरु से निरंतर ही सुमना झरें।। नाथ....।।7।।

शक्ति से सिद्ध जाना है यह आत्मा।
जो चले राह शिवपुर हो परमात्मा।। नाथ....।।8।।

हे प्रभु भक्त पे अब कृपा कीजिए।
नाथ तेरा ही हूँ मैं बचा लीजिए।। नाथ....।।9।।

एक ही भावना 'पूर्ण' कर दीजिए।
नाथ संभव भवाताप हर लीजिए।। नाथ....।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं .....।

-:: घत्ता ::-

श्री संभव जिनवर, हे परमेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, "विद्यासागर पूर्ण" करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री अभिनंदननाथ जिन पूजन

स्थापना

(अडिल्ल छंद)

परम पूज्य अभिनंदन नाथ जिनेश हैं,
कोटिक रवि शशि तेज धरे परमेश हैं।
पुण्योदय से आज शरण में आ गया,
वीतराग चिद्रूप हृदय को भा गया।।1।।

बिना आपके काल अनंता हो गया,
गुरू कृपा से भक्त आपका हो गया।
मन मंदिर में प्रभु बुलाने आया हूँ,
पूजन करके जिनगुण पाने आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(नरेन्द्र छंद)

तन की प्यास बुझाने वाला, सरिता का जल लाया।
आत्म तत्त्व की प्यास जगा दे, वह जल पाने आया।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

तन का ताप मिटाने वाला, शीतल चंदन भाया।
राग आग संताप मिटाने,आप शरण में आया।। हे ...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

परम शुद्ध अक्षय पद पाने, भावाक्षत ले आया।
भव समुद्र से पार उतरने, नौका पाने आया।। हे ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

अपनी अनुकंपा से जिनवर, इतनी शक्ती देना।
विषय भोग से हार गया हूँ, कामजयी कर देना।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

पर द्रव्यों से भूख मिटी ना, क्षुधा रोग है भारी।
निज आतम अनुभव चरु पाने,आया शरण तिहारी।।हे...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मेरे ही मिथ्यात्व कर्म से,छाया है अंधियारा।
प्रभो आपके चरण दीप से, पाऊँ मैं उजियारा।।हे ...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

कर्म शत्रु से करी मित्रता, इसका ही फल पाया।
चउ गतियों में भ्रमण कराया,कर्मों की ये माया।।हे ...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

अशुभ भाव के कारण मैंने, कभी नहीं सुख पाया।
संवर और निर्जरा द्वारा, शिवपथ पाने आया।।हे ...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

प्रभो आपके दर्शन पाकर, निज दर्शन ना पाया।
सिद्धशिला का आसन पाने,अर्घ्य सजा के लाया।।हे ...।। 9।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

विजय विमान से आये प्रभु जी, नगरी लगती अतिशायी।
शुभ वैशाख शुक्ल षष्ठी को, माँ सिद्धार्था हर्षायी।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ट्म्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ शुक्ल बारस को स्वामी, अभिनंदन ने जन्म लिया।
नृपति स्वयंवर के प्रांगण में, इंद्र शचि सुर नृत्य किया।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नश्वर बादल को लख प्रभु ने, संयम अंगीकार किया।
माघ शुक्ल द्वादश को लौकांतिक देवों ने गान किया।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष शुक्ल की चतुर्दशी को केवलज्ञान उपाया था।
समवसरण की रचना करके, धनपति अति हर्षाया था।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वैशाख शुक्ल षष्ठी के दिन,सम्मेद शिखर से मोक्ष हुआ।
श्री अभिनंदन तीर्थंकर से, भवि जीवों को लक्ष्य मिला।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठयां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(मुक्त : पद्धरि छंद)

जय अभिनंदन जिनवर महान, गुण गाता है सारा जहान।
हे त्यागमूर्ति वात्सल्य धाम, तीर्थंकर को शत्-शत् प्रणाम।।1।।
चौथे तीर्थंकर आप नाथ, पाकर वसुंधरा हुई सनाथ।
सोलह वर्षों तक मौन रहे, फिर क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुये।।2।।
घाति क्षय कर अरिहंत हुये, भवि जीवों के शिवपंथ हुये।
प्रभु तीन अधिक थे शत गणधर, श्री वज्रनाभि पहले श्रुतधर।।3।।
थी मुख्य मेरूषेणा आर्या, सुर नर पशु गण दर्शन पाया।
करके विहार उपकार किया, भव्यों का प्रभु कल्याण किया।।4।।
प्रभु आप नंत गुण के भंडार, वंदन से हो सब दुःख क्षार।
प्रभु की अमृत झरणी वाणी, है परम् प्रमाणी जिनवाणी।।5।।
निज आत्म तत्त्व है उपादेय, है भाव विकारी नित्य हेय।
है जीव तत्त्व उपयोगमयी,बिन चेतन तत्त्व अजीव सही।।6।।
आश्रव औ बंध अहितकारी, संवर औ निर्जर हितकारी।
जो रत्नत्रय आश्रय लेते, वे मुक्तिरमा को वर लेते।।7।।

प्रभु ने इस विध उपदेश दिया, पथ भूलों को संदेश दिया।
मैं त्याग करूँ बहिरातम का, औ लक्ष्य करूँ परमातम का।।8।।
अंतर आतम होकर स्वामी, बन जाऊँ मैं शिवपथ गामी।
जय-जय जिनवर महिमा निधान, भगवन्! कर दो अब कर्म ह्नन।।9।।
तुम कर्म विजेता जगन्नाथ, मेरी भव व्याधि हरो नाथ।
नहीं माप सके जलधि अथाह, जल बिम्ब पकड़ने का प्रयास।।10।।
त्यों गुण वर्णन करना जिनवर, है अल्पमति मेरी प्रभुवर।
मैं करूँ भाव से पद प्रणाम, प्रभु देना निश्चित मुक्तिधाम।।11।।

-:: घत्ता ::-

चौथे तीर्थंकर, भव्य हितंकर, किस विध हम गुणगान करें।
प्रभु कृपा कीजिये, ज्ञान दीजिये, तव चरणों में आन खड़े।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

अभिनंदन स्वामी, हे जगनामी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री सुमतिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(सखी छंद)

हे नाथ सुमति के दाता, तव चरणन शीश नवाता।
अब भाग्य उदय है आया, तव पूजन करने आया।।1।।
प्रभु तीन लोक के स्वामी, मैं भटक रहा भवगामी।
इस भवसागर से तारो, दुखिया हूँ नाथ उबारो।।2।।
यह भक्त पुकारे आओ, प्रभु अब ना देर लगाओ।
मेरे मन मंदिर रहना, मुझको अब भगवन बनना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - पाँचों मेरु ....)

गंगा जल सम नीर चढ़ाय, जन्म रोग का नाश कराय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।
जिन पूजा है जग में सार, किया न अब तक आत्म विचार।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

भव आताप सहा नहीं जाय,नाशन हेतु चंदन लाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।जिन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

शुभ भावों के अक्षत लाय, पद अक्षय अनुपम प्रगटाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

निज अखंड पद रूप अनूप, पाऊँ जिनवर ब्रह्म स्वरूप।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।जिन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

उत्तम संयम चरु सुहाय, क्षुधा रोग अविलम्ब नशाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।जिन...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

ज्ञान दीप अनमोल जलाय, मोह तिमिर अज्ञान मिटाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।जिन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

ध्यान अग्नि में कर्म जलाय,सिद्धालय का दर्श कराय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार ।।जिन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

प्रभु भक्ति ही शिवफल दाय,भक्त प्रभु जी शीश नवाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।जिन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

प्रभु अनर्घ्य पद ध्यान लगाय, शिव अनमोल रतन शुभ पाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।
जिन पूजा है जग में सार, किया न अब तक आत्म विचार।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

श्रावण शुक्ला द्वितीया थी, माँ मंगला उर खुशियाँ थी।
प्रभु नगर अयोध्या आये, इंद्रादिक सुर मुस्काये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

प्रभु जन्म लिया सुखदाता, एकादशी चैत्र कहाता।
शुभ स्वर्ण देह के धारी, हर्षित नगरी है सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

वैशाख शुक्ल नवमी को, सब त्याग दिये परिजन को।
जय सुमतिनाथ तीर्थंकर , हो प्राणिमात्र क्षेमंकर।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जब प्रतिमा योग को धारा, अद्भुत प्रकाश उजियारा।
वो चैत्र सुदी ग्यारस थी, केवललक्ष्मी प्रगटी थी।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जय सुमतिनाथ तीर्थंकर, मैं पाऊँ सुख अविनश्वर।
प्रभु अचल हुए अविचल से, शुभ कूट सम्मेदाचल से।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लएकादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

प्रभु क्षेत्र से दूर हूँ, रखना मेरा ध्यान।
शिव आलय में आ बसूँ, दो ऐसा वरदान।।1।।

(चौपाई)

हे पंचम तीर्थेश नमस्ते, गिरी शिखर से मुक्त नमस्ते।
अरि नाशक अरहंत नमस्ते, वीतराग जिन संत नमस्ते।।2।।
जन्म अयोध्या नगर नमस्ते, भव्य जीव आधार नमस्ते।
पितु मेघप्रभ माँ मंगला से, जन्म लिया है प्रभु नमस्ते।।3।।
दुखहारी सुखकार नमस्ते, त्रिभुवन पति हितकार नमस्ते ।
सत्य तथ्य शिवकार नमस्ते, दोष अठारह मुक्त नमस्ते।।4।।
शील धर्म परिपूर्ण नमस्ते, भविजन पालक नाथ नमस्ते।
एक शतक सोलह गणधर से, सुमतिनाथ जिनराय नमस्ते।।5।।
पंचम गति आवास नमस्ते, चिदानंद चिद्रूप नमस्ते।
राग-द्वेष से रहित नमस्ते, नंत गुणों से सहित नमस्ते।।6।।
भक्त करे त्रय योग नमस्ते, स्वीकारो जिनईश नमस्ते।
पतित जनों के शरण नमस्ते, पावन शिवपुर पंथ नमस्ते।।7।।
पद पूजित शत इंद्र नमस्ते, सुमति-सुमति दातार नमस्ते।
जन्म नमस्ते , मोक्ष नमस्ते, जिन जीवन है धन्य नमस्ते।।8।।
मोक्ष कल्पतरु नाथ नमस्ते, कामधेनु चिन्मणी नमस्ते।
ज्ञान सिंधु उत्तीर्ण नमस्ते, 'विद्यासागर पूर्ण' नमस्ते।।9।।

-:: दोहा ::-

दुर्बुद्धि कुमति तजूँ, धारूँ सुमति सुखकार।
परमातम से मिलन हो, अर्पण गुणमणि हार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री सुमति जिनंदा, आनंद कंदा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री पद्मप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय पद्म जिनेश्वर मेरे, पावन पद्माकर सुखधाम।
भव दुखहर्ता, मंगलकर्ता, षष्टम तीर्थंकर अभिराम।।
हरो अमंगल प्रभु अनादि का, भाव यही लेकर आया।
मन मंदिर है मेरा सूना, आह्वानन करने आया।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, पद्म जिनेश्वर प्रभु महेश।
पूजा को स्वीकारो स्वामी, दिखला दो मुक्ति का देश।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

जन्म मरण की इस ज्वाला में, अब तक मैं जलता आया।
सिंधु नीर से बुझी न ज्वाला, अतः भक्ति का जल लाया।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

भवाताप से व्यथित हुआ हूँ,अगणित दुख पाये स्वामी।
तप्त हृदय शीतल कर दो, संताप हरो अंतर्यामी।।श्री...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

नश्वरता में ही सुख माना, अक्षय पद ना जाना है।
दर्श आपका पाया जबसे, निज पद पाना ठाना है।।श्री...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

इंद्रिय सुख के महाजाल में, भगवन् फँसकर तड़फ रहा।
मुझे बचा लो काम विषय से, तुम्हें छोड़कर जाऊँ कहाँ।।श्री...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

तरह-तरह के व्यंजन खाकर, क्षुधा न मन की मिट पाई।
मन की इच्छाओं पर स्वामी, अब तक विजय नहीं पाई।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मोह महातम नाश हेतु, यह दीपक भेंट चढ़ाना है।
अंतर घट में हो उजियारा, ज्ञान ज्योति प्रकटाना है।।श्री...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

पर परणति के नाश हेतु , यह धूप सुगंधित लाया हूँ।
अष्ट कर्म को जला जलाकर, धूम्र उड़ाने आया हूँ।।श्री...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

दुष्कर्मों के फल को भोगा, चतुर्गति में किया भ्रमण।
मोक्ष महाफल पाने भगवन्, आया तेरी चरण शरण।।श्री...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जल से फल का वैभव सारा, आज चढ़ाने आया हूँ।
निज अनर्घ्य पद देना स्वामी,भाव संजोकर लाया हूँ।।श्री...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

माघ कृष्ण षष्ठी के शुभ दिन, हुआ गर्भ कल्याण महान।
पंद्रह मास रतन बरसाये, किया सुरों ने मंगलगान।।
उपरिम ग्रैवेयक से आये, मात सुसीमा हर्षाई।
धरणराज की शुभ नगरी में, अतिशय खुशियाँ हैं छाईं।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

कार्तिक कृष्णा तेरस के दिन, त्रिभुवन में आनंद हुआ।
कौशांबी नगरी में आकर, देवों ने जयगान किया।।

मेरु सुदर्शन पांडुक वन में, हर्षित हो अभिषेक किया।
सुराङ्गनाओं ने प्रभु आगे, थिरक-थिरक कर नृत्य किया।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जाति स्मरण जब हुआ प्रभु को, कार्तिक कृष्ण त्रयोदश थी।
लौकांतिक देवों ने आकर, तप संयम की अर्चा की।।
पद्मप्रभ ने मुनिव्रत धारा, जिन पद से अनुराग किया।
पर तत्त्वों से चित्त हटाया, जग वैभव को त्याग दिया।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

चैत्र शुक्ल की पूर्णमासी थी, चार घाति अवसान किया।
पाकर केवलज्ञान प्रभु ने, भव बंधन का नाश किया।।
सप्त तत्त्व का समवसरण में, किया प्रभु सुंदर उपदेश।
षट् द्रव्यों के प्रभु प्रणेता, जय-जय जयप्रभु पद्म जिनेश।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी के दिन, अष्ट कर्म का नाश किया।
मोहन कूट सम्मेदाचल से, सिद्धालय में वास किया।।
अंतिम शुक्ल ध्यान धरकर जब, ऊर्ध्व लोक में किया गमन।
सादि अनंत सिद्ध पद पाया, भव्य जनों ने किया नमन।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

पद्म चिह्न शोभित चरण, नमूँ अनंतों बार।
प्रभु कृपा हो भक्त पर, करें भवाम्बुधि पार।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय पद्मप्रभ जगनामी, आप सर्व जग हितकारी।
शरण आ गया नाथ आपकी, दुःख सह रहा अति भारी।।

बहु आरंभ परिग्रह से प्रभु, नरक गति में जा पहुँचा।
दुःख सहे अनगिनती स्वामी, वचनों से नहीं जाए कहा।।2।।
वैतरणी में गिरा कभी तो, सेमर तरु असि धार बने।
क्षुधा तृषा से व्यथित हुआ औ, शीत उष्ण के दुःख सहे।।
राग भाव से अपना माना, वो ही वैरी बने वहाँ।
आर्तध्यान से मरकर स्वामी, पशु गति में जा पहुँचा।।3।।
एकेन्द्रिय भी कभी बना तो, दुष्कर्मों का बोझ सहा।
देव गति भी पाकर भगवन्, विषय भोग में मस्त रहा।।
प्रभु पूजन भक्ति नहीं कीनी, पर परिणति में भटक गया।
दुर्लभ नर तन पाकर प्रतिपल, कर्म फलों में अटक गया।।4।।
प्रभु आपने जग वैभव को, हेय जानकर ठुकराया।
आत्म साधना के साधन से, परम शुद्ध पद को पाया।।
भव्य जनों को समवसरण में, वस्तु तत्त्व का ज्ञान दिया।
है अनंत उपकार आपका, परमातम का ज्ञान दिया।।5।।
एक शतक ग्यारह थे गणधर, उनको भी मैं नमन करूँ।
साम्य भाव धर उर अंतर में, राग-द्वेष का हनन करूँ।।
पद्म जिनेश्वर आप कृपा से, शरण तिहारी आया हूँ।
बालक पर उपकार करो प्रभु, तुम सम बनने आया हूँ।।6।।
नाथ आपने भूले भटके, भव्यों को शिव द्वार दिया।
सिद्धालय की आशा लेकर, मैं भी चरण शरण आया।।
बाल सूर्य सम वर्ण आपका, पद्मप्रभ जिनराज महान।
जयमाला अर्पण करता हूँ, पा जाऊँ मैं भी निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

-:: घत्ता ::-

श्री पद्म जिनेशा, नमित सुरेशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेंद्र छंद)

श्री सुपार्श्व प्रभु के चरणों में, पूजन करने आया।
चिद्भावों को विशुद्ध करके, कर्म नशाने आया।।
दर्श किया तो लगा मुझे यों, सिद्धालय को पाया।
हृदय कमल में बस जाओ प्रभु, भक्ति सुमन ले आया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(स्रग्विणी छंद)

जन्म और मृत्यु का रोग भारी प्रभो।
सब मिटा दो अहो दुःखहारी विभो।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
जन्म का नाश निश्चित करूँगा विभो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

कर्म आताप से नाथ जर्जर हुआ।
शांति मुझको मिली जब से दर्श हुआ।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
भव का संताप नाश करूँगा विभो।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

जो पाया अभी तक वो नाश हुआ।
आपको देख शाश्वत का भान हुआ।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
पद अक्षय को निश्चित वरूँगा विभो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

भा रही थी मुझे काम बंध कथा।
आपके दर्श से भा रही आतमा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
शुद्ध आतम का दर्श करूँगा विभो।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

भूख व्याधि मुझे नाथ तड़फा रही।
तृष्णा नागिन प्रभु जी डसी जा रही है।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
अक्ष मन के विषय को तजूँगा विभो।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मोह माया का तूफान भटका रहा।
ज्ञान नभ में घना मेघ मंडरा रहा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
आप सम पूर्णज्ञानी बनूँगा विभो।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

कर्म बंधन की कारा में कब से पड़ा।
नाथ मुझको छुड़ा लो मैं दर पे खड़ा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
अष्ट कर्मों का नाश करूँगा विभो।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

यूँ ही जीवन गंवाया है निष्फल रहा।
राग-द्वेष ने लूटा है उपवन महा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
मोक्षलक्ष्मी का स्वामी बनूँगा विभो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

आप ही मोक्षलक्ष्मी के स्वामी महा।
भव से तारो मुझे मैं व्यथित हूँ यहाँ।।

आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
अर्चना से जिनेश्वर बनूँगा विभो।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

पंचकल्याणक

(स्रग्विणी छंद)

भाद्र शुक्ला की षष्ठी मनोहर अति।
गर्भ में आ गये तीन जग के पति।।
स्वप्न को देख माँ पृथ्वी हरषा गई।
जय सुपार्श्व प्रभो देवियाँ कह रही।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जन्म वाराणसी में प्रभु ने लिया।
सुप्रतिष्ठ के गृह को पवित्र किया।।
ज्येष्ठ शुक्ला की बारस तिथि आ गई।
सर्व आनंद की ही छटा छा गई।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म उत्सव ही दीक्षा में बदला तभी।
राग पथ त्याग वैराग्य धारा तभी।।
रूप हैं निर्विकारी महाव्रत धरें।
श्री सुपार्श्व प्रभुजी की जय-जय करें।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

कृष्ण फाल्गुन की षष्ठी तिथि आ गई ।
नाशे चउ घातिया निज निधि मिल गई।।
हुई रचना समोसर्ण की सुखकरी।
ध्वनि सुपार्श्व प्रभुवर की है हितकरी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठयां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

सप्तमी कृष्ण फाल्गुन की जब आ गई।
वसु विधि नाशकर शिवरमा मिल गई।।

मोक्ष का धाम कूट प्रभास रहा।
दर्श कर पा रहे यात्री शांति महा।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

जय सुपार्श्व सप्तम तीर्थंकर, दीनानाथ कहाते हो।
हम अज्ञानी रागी-द्वेषी, तुम जगनाथ कहाते हो।।
स्वस्तिक चिह्नित पद कमलों में, करते वंदन बारम्बार।
श्री सुपार्श्व जिनराज हमारे, करते हैं भविजन को पार।।1।।

कहूँ नाथ क्या आज आपसे, मैं दुखिया भववासी हूँ।
तेरी अनुपम करुणा का ही, नाथ हुआ अभिलाषी हूँ।।
आज आपकी महिमा सुनकर, आया हूँ श्री चरणों में।
कृपा आपकी हो जाये तो, लीन रहूँगा चरणों में।।2।।

नहीं सुनोगे मेरी अरजी, और कहाँ मैं जाऊँगा।
अन्य आपसा सच्चा भगवन्, और कहाँ मैं पाऊँगा।।
भटक रहा हूँ भव-वन में, सन्मार्ग मुझे अब दे देना।
कौन सुनेगा जग में मेरी, नाथ मुझे अपना लेना।।3।।

बहुविध उपसर्गों को सहकर, जगत पूज्य अरहंत हुये।
ऊर्ध्व, मध्य औ अधोलोक से, प्रभु आप जगवंद्य हुये।।
पंचानवे गणधर प्रभु के थे, मीनार्या थी प्रमुख महान।
बारह कोठे में श्रोतागण, सुन वाणी करते कल्याण।।4।।

अरिहंत पद पाकर प्रभु ने, सप्त तत्त्व उपदेश दिया।
राग-द्वेष से भव बढ़ता है, जीवों को संदेश दिया।।
सुपार्श्वनाथ जिनवर को पूजूँ, नित्य उन्हीं का ध्यान करूँ।
रागादिक का नाश करूँ मैं, मुक्तिवधू अविराम वरूँ।।5।।

जिसने भी तव चरण धूल को, अपने शीश चढ़ाया है।
महा भयानक भव सागर से, उसको पार लगाया है।।
तेरे उद्धारक चरणों पर, नाथ मेरी बलिहारी है।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, "पूर्ण" ज्ञान के धारी हैं।।6।।

-:: दोहा ::-

यद्यपि दोष का कोष हूँ, अज्ञानी हूँ नाथ।
फिर भी भक्ति प्रबल है, चरण नमाऊँ माथ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

हे सुपार्श्व स्वामी, अंतर्यामी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

मुझमें इतनी शक्ति नहीं है, कैसे नाथ पुकारूँ मैं।
मेरे मन मंदिर आवो या, भावों से आ जाऊँ मैं।।
जैसा प्रभुवर आप कहोगे, वैसा मुझको करना है।
लक्ष्य यही है चन्द्रप्रभ जी, भवसागर से तरना है।।
भक्त अकेला तड़फ रहा है, विरह वेदना सुन लेना।
आह्वानन करता हूँ स्वामी, देहालय में आ जाना।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(त्रिभंगी छंद)

प्रासुक जल लाया, चरण चढ़ाया, मन निर्मल ना कर पाया।
तन का मल धोया, मन ना धोया, बुझी न ज्वाला शरणाया।।

अष्टम तीर्थंकर, घातिक्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

प्रभु भवदधि पारग, शांति विधायक, भवि शिव मारग कारक हो।
तव धुनि हितकारी, शीतल कारी, भवाताप के हारक हो।। अष्टम..।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

सारा जग नश्वर, प्रभु अविनश्वर, भवि रक्षक हो त्रिभुवन में।
अक्षय पद देना, राह दिखाना, भटक गए हैं भव वन में। ।अष्टम..।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

प्रभु विषय विरत हो, आत्म निरत हो, ब्रह्मचर्य व्रत अतिशायी।
मम काम नशा दो, आतम बल दो, काम शूर है बलशाली। ।अष्टम..।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

प्रभु आप निराकुल, मैं हूँ व्याकुल, क्षुधा रोग का रोगी हूँ।
प्रभु परम वैद्य हो, क्षुधा ध्वंस हो, कर्म फलों का भोगी हूँ। ।अष्टम..।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

जिन वचन तिहारे, कर्म निवारे, सत्पथ मारग प्रगटाये।
अज्ञान हटायें, ज्ञान जगायें, आरति कर मन हर्षाये। ।अष्टम..।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

प्रभु आप सिद्ध हो, जग प्रसिद्ध हो, शुद्ध गंध को हम लाये।
प्रभु शुद्ध बना दो, ऐसा वर दो, सिद्धालय को हम जाये। ।अष्टम..।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

प्रभु आप सफल हैं, जग निष्फल है, इंद्रिय सुख को ना चाहूँ।
सान्निध्य तिहारा, श्रीजिन प्यारा, मोक्ष महा फल पा जाऊँ। ।अष्टम..।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

हम दास तिहारे, आये द्वारे, सिद्धशिला में बस जायें।
पद अर्घ्य चढ़ाये, शरणे आये, चन्द्रप्रभ सम बन जायें।।

अष्टम तीर्थंकर, घातिक्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

गर्भ दिवस पर मात लक्ष्मणा, देखे सोलह स्वप्न महान।
चैत्र कृष्ण पंचमी को त्यागा, वैजयंत का महा विमान।।
चंद्र कांति सम चन्द्रप्रभ की , महिमा वृहस्पति गाते।
रत्नों की बौछार हो रही , सुर नरपति भी हर्षाते।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

पौष कृष्ण एकादशी को नृप , महासेन घर जन्म लिया।
मेरु सुदर्शन पर ले जाकर, जिन बालक का न्हवन किया।।
प्रभु के जन्म कल्याणक को लख, छाया हर्ष अपार हैं।
चँद्रपुरी में गूँज रहें हैं, घर-घर मंगलाचार है।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

प्रभुवर के तप कल्याणक की, महिमा वच से कही न जाय।
संयम तप वैराग्य का उत्सव,करके सुर नर मुनि हर्षाय।।
वस्त्राभूषण त्याग दिये सब, पंच महाव्रत धार लिया।
जन्म दिवस के दिन ही प्रभु ने,संयम से अनुराग किया।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

तीन माह छद्मस्थ रहें प्रभु , निज आतम में होकर लीन।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन, केवलज्ञान हुआ स्वाधीन।।
केवलज्ञान है कल्पतरु सम, जिसका फल उपदेश महान।
जो भी आस्वादन करता है, बन जाता है वह भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

महा मोक्ष कल्याण आपका, नमूँ जोड़कर हाथ प्रभो!।
और नहीं कुछ मुझे चाहिये, रहूँ आपके साथ प्रभो।।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी के दिन, ललित कूट से मुक्त हुये।
कर्म नष्ट कर सिद्धक्षेत्र में, मुक्तिरमा से युक्त हुये।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

वीतराग अरहंत प्रभु को, मन वच तन से करूँ प्रणाम।
नंत चतुष्टय के धारी है, करते है भविजन कल्याण।।
भावों से भरकर करते है, आज प्रभु का हम गुणगान।
चिंतामणि श्री चन्द्रप्रभ जी, करते सब कर्मों की हान।।1।।

चन्द्रपुरी के महासेन नृप, हुए यशस्वी अति गुणवान।
उनकी प्रिय रानी के उर से, जन्में तीर्थंकर भगवान।।
जन्म हुआ जब प्रभु आपका, देवों ने जयगान किया।
प्रभु के तन को देख सभी ने, निज चेतन को जान लिया।।2।।

राज पाट में न्याय नीति से, यौवन में जब लीन हुये।
किंतु स्व-पर का भेद जानकर, सिंहासन आसीन हुये।।
देख चमकती बिजली तत्क्षण; नष्ट हुई तो किया विचार।
सारा जग क्षणभंगुर माया, वस्त्राभूषण लिये उतार।।3।।

तीन माह तक मौन रहे और, कठिन तपस्या की जिनवर।
द्वादश तप के ही प्रभाव से, कर्म निर्जरा की प्रभुवर।।
सप्तम गुणथानक में पहुँचे, आत्म तत्त्व का करके ध्यान।
चार घातिया क्षय करते ही, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।।4।।

थे तिरानवें गणधर प्रभु के, मुख्य आर्यिका वरुणा मात।
श्रोता दानवीर्य आदि ने, वचन सुने होकर नत माथ।।
नाथ आपने समवसरण में, सार वस्तु को बतलाया।
नहीं सुनी मैंने जिनवाणी, अत: शरण में अब आया।।5।।

हे चन्द्रप्रभ आप पंथ पर, चलकर जिन पद पाऊँगा।
तव प्रसाद से लोक अग्र पर, सिद्धशिला को जाऊँगा।।
चन्द्र चिह्न शोभित चरणों में, आज नवाऊँ अपना शीश।
परम पवित्र सिद्ध पद पाऊँ, ऐसा दो मुझको आशीष।।6।।

-:: दोहा ::-

कोटि भानु शशि से महा, जिनवर ज्योर्तिमान।
चन्द्रप्रभ तीर्थेश हैं,अनंत गुण की खान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

चन्द्रप्रभ स्वामी, हे शिवधामी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद :।।

श्री पुष्पदंत जिन पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

जय-जय विदेही आप जिनवर, पुष्पदंत जिनेश्वरम्।
श्री सुविधिनाथ जिनेश जय-जय, जय भवोदधि तारणम्।।
मैं करूँ निर्मल भाव पूजन , ज्ञान सूर्य प्रकाशकम्।
मम आतमा में आ पधारो, हे मेरे परमेश्वरम्।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

द्रव्यार्पण

(अडिल्ल छंद)

जन्म जरा मृत्यु से मैं भयभीत हूँ।
काल अनंता से तृष्णा में लिप्त हूँ।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

तन की तपन मिटाने वाला है चंदन।
भवाताप का नाश कराता जिन वंदन।।सुविधिनाथ ...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

अनुपम शांत निराकुल अक्षय पद पाऊँ।
अक्षत चरण चढ़ा कर जिन पद गुण गाऊँ।।सुविधिनाथ ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

मार्दव गुण को आज पाने आया हूँ।
काम विकार निवार करने आया हूँ।।सुविधिनाथ...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

इच्छाओं की भूख मिटाने आया हूँ।
रत्नत्रय नैवेद्य पाने आया हूँ ।।सुविधिनाथ...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

अंतर को आलोकित करने आ गया।
मोह महाबली नाश करने आ गया।।सुविधिनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

आठों कर्म विचित्र आतम में छाये।
प्रभु शरण में आते ही सब नश जाये।।सुविधिनाथ ...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

सुविधिनाथ विधि अंत हमारे कीजिये।
सिद्धों जैसा सुख अनंत फल दीजिये।। सुविधिनाथ ...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जग में सबका मूल्य, आप अनमोल हैं।
अनर्घ्य पद पाने को जिनवर ठौर हैं।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(अडिल्ल छंद)

दिखलाते हैं प्रभु के महा प्रभाव को।
माँ ने देखे सोलह सपने रात को।।
फाल्गुन कृष्णा नवमी की यह बात थी।
माँ जयरामा के उत्सव की रात थी।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

अंतिम जन्म ही लिया धरा पर नाथ ने।
नृप सुग्रीव के गृह काकंदी ग्राम में।।
मगसिर शुक्ला एकम को शुभ लग्न में।
मेरू पर अभिषेक हुआ सुर मग्न हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

मेघ विलय लख आ गये स्वामी वन में।
लिये पालकी देव सब आये क्षण में।।
जन्मोत्सव की शहनाई बदली तप में।
लौकांतिक सुर कहे धन्य जिनवर जग में।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जिन महिमा को गूँथ सके ना शब्द हैं।
नाश हो गई त्रेसठ प्रकृति कर्म हैं।।

कार्तिक शुक्ला दूज केवलज्ञान लिया।
झुका झुकाकर माथ सबने नमन किया।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

मोक्ष निकट यह प्रभु आपने जान लिया।
मास पूर्व ही समवसरण का त्याग किया।।
सुप्रभ कूट से जिनवर ने मुक्ति पाई।
भाद्र शुक्ल अष्टम की शुभ बेला आई।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लअष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

मंगलमय श्री सुविधि जिनेश्वर, मंगलमयी प्रभु वाणी।
दुखी देख जग सर्व अंग से, खिरी प्रभु अंतर्वाणी।।
मकर चिह्न से चिह्नित पद है, मिले भाग्य से मुझको आज ।
भव सिंधु से पार लगा दो, जिनवर अद्‌भुत परम जहाज।।1।।

प्रभु आपने समवसरण में, दश धर्मों का ज्ञान दिया।
नहीं सुनी मैंने जिनवाणी, राग-द्वेष का पान किया।।
धर्म नीर बिन जीवन तरुवर, मिथ्यानल से जला दिया।
मोक्ष तत्त्व का अर्थ न समझा, नंत काल यों बिता दिया।।2।।

पुण्योदय से आज प्रभु मैं, समवसरण में आया हूँ।
दिव्यध्वनि से दश धर्मों का, अमृत पीने आया हूँ।।
जहाँ क्षमा है वहाँ धर्म है, स्व-पर दया का मूल महान।
क्रोध कषाय नरक ले जाती, सब दुःखों की यही प्रधान।।3।।

मान कषाय नष्ट कर देती, मार्दव मोक्ष नगर का द्वार।
सरल भाव सिद्धों का साथी, उत्तम आर्जव है सुखकार।।

लोभ कषाय नाश कर देती, शौच धर्म करता कल्याण।
सत्य धर्म मय जो हो जाता, निश्चित पाता है निर्वाण।।4।।
धन्य-धन्य संयम की महिमा, तीर्थंकर भी अपनाते।
उत्तम तप जो धारण करते, निश्चित शिव पदवी पाते।।
अहो दान की महिमा न्यारी, तीर्थंकर भी लें आहार।
उत्तम त्याग धर्म की जय हो, स्वर्ग मोक्ष का है दातार।।5।।
सर्व परिग्रह त्याग आकिंचन, सिद्ध स्व पद का दाता है।
सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म है, ब्रह्मचर्य सुख दाता है।।
दिव्य वचन सुन लगा मुझे अब, भव सागर का अंत हुआ।
शरण आपकी जो भी आया, भक्ति से भगवंत हुआ।।6।।
प्रभु आपकी धर्म सभा में, अट्ठासी गणधर स्वामी।
श्रीघोषा थी प्रमुख आर्या, बुद्धिवीर्य श्रोता नामी।।
कर्म अंत करने को स्वामी, शरण आपकी आया हूँ।
पंच परावर्तन मिट जाये, यही आस ले आया हूँ।।7।।

-:: सोरठा ::-

नाथ निरंजन आप, पुष्पदंत जिनराज जी।
स्वीकारो जयमाल, कर्म नष्ट कर दो प्रभो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री सुविधि जिनेशा, हे परमेशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री शीतलनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

मैं निज घर को भूला भगवन्, पर घर में फिरता रहता।
बिना भाव से मात्र द्रव्य से, तुम्हें रिझाने मैं आता।।

निज गृह की पहचान नहीं प्रभो ! तुमको कहाँ बिठाऊँगा।
मैं अज्ञानी भगवन् कैसे, अनंत गुण को गाऊँगा।।
है विश्वास अटल यह मेरा, श्रद्धालय में आओगे।
अपने एक अनन्य भक्त को, निज गृह में पहुँचाओगे।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - नंदीश्वर श्री जिन धाम .....)

जल से निर्मल जिनराज, रूप तुम्हारा है।
जन्मादि रोग क्षय हेतु, नाथ सहारा है।।
शीतल जिनराज महान, दर्शन सुखकारी।
सारा संसार असार, पाया दुख भारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

चंदन से शीतल नाथ, वाणी है तेरी।
मैं क्रोधाग्नि में दग्ध, भूल रही मेरी।।शीतल...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ....।

निर्मल अक्षय सुख खान,पदवी के धारी।
प्रभु मुझमें भरे विकार, नाशो अविकारी।। शीतल ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

पुष्पों सम गुणकी राशि,निज शुद्धातम है।
फिर भी विषयों का दास, बनता आतम है।।शीतल...।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

षट् रस नैवेद्य जिनेश, तृष्णा उपजावे।
अष्टादश दोष विनाश, करने हैं आये।।शीतल...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

प्रभु ज्ञान ज्योति तमहार, विश्व प्रकाश किया।
निज ज्ञान ज्योति के हेत, नहीं पुरुषार्थ किया।।
शीतल जिनराज महान, दर्शन सुखकारी।
सारा संसार असार, पाया दुख भारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

कर्माष्टक नाशे नाथ, आतम गुण प्रगटे।
हम कर्मों से संतप्त, चारों गति भटके।।शीतल...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

पुण्योदय आया आज, फल को भेंट करूँ।
निज मधुर मोक्ष फल हेतु, श्रद्धा बीज धरूँ।।शीतल...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

परिणाम शुद्ध कर अर्घ्य, चरणों में लाये।
भक्तों के भाव जिनेश, आप समझ जाये।।शीतल...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(चौपाई)

चैत्र वदी अष्टम तिथि आई, मात सुनंदा है हरषाई।
स्वर्गपुरी से प्रभु जी आये, पूर्वाषाढ़ नखत कहलाये।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

त्रिभुवन में शीतलता छायी, विश्व योग उत्तम फलदायी।
माघ वदी बारस अवतारी, किया न्हवन देवों ने भारी।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

हिम का नाश देख जिनवर ने, जग वैभव सब त्यागा क्षण में।
माघ वदी द्वादश के दिन में, बने मुनीश सहेतुक वन में।।3।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

पौष कृष्ण की चतुर्दशी थी, पूर्वाषाढ़ा शुभ घड़ियाँ थी।
भद्दलपुर में चार कल्याणक, तीर्थंकर हैं ज्ञान प्रकाशक।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

आश्विनशुक्ला अष्टमतिथि में,कूट विद्युतवर गिरिशिखर से।
शेष पचासी प्रकृति नाशी, हुए जिनेश्वर मुक्तिवासी।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लअष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(तर्ज - अहो जगत गुरु ....)

सौम्य मूर्ति जिन आप, त्रिभुवन के हो स्वामी।
कल्पतरु है चिह्न मुक्ति दो शिवधामी।।
जय-जय शीतलनाथ, जय-जय श्री भगवंता।
दशम् तीर्थंकर आप,नमते मुनिगण संता।।1।।

पंच महाव्रत धार, नाथ हुए वैरागी।
पुनर्वसु नृपराज, दे आहार बड़भागी।।
प्रभु कर में पयधार, दे भव सेतु बनाया।
तीन वर्ष छद्मस्थ, मौन में समरस पाया।।2।।

आर्त रौद्र दो ध्यान, भव-भव में दुखकारी।
धर्म शुक्ल प्रशस्त, मुक्ति के अधिकारी।।
चार घातिया नष्ट, त्रेसठ प्रकृति नाशी।
जीत अठारह दोष, निज चेतन गृहवासी।।3।।

समवसरण में नाथ, शीतल की बलिहारी।
सब प्राणी तज वैर, मन में समताधारी।।
इक्यासी गणधर, प्रमुख थे कुंथु ज्ञानी।
मुख्य आर्यिका श्रेष्ठ, धरणा गुण की खानी।।4।।

चतुर्निकायी देव, प्रभु की महिमा गाये।
मुनिगण भक्ति समेत बार-बार सिर नायें।।

प्रभुवर आपके गुण, पार न कोई पावे।
नाम मात्र से नाथ, भव सिंधु तिर जावे।।5।।

प्रभु हम दीन अनाथ, चरण शरण में आये।
वीतराग पद छोड़, और न दूजा भाये।।
हे प्रभु दया निधान, मुझ पर करुणा कर दो।
झोली मेरी रिक्त, उसमें शिव फल भर दो।।6।।

-:: दोहा ::-

इस अपार संसार में, जिन पूजा ही सार।
वीतराग का ध्यान ही, मोक्षपुरी का द्वार।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

हे शीतल नाथा, गाऊँ गाथा,भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ,'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद :।।

श्री श्रेयांसनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

हे श्रेयनाथ मेरे भगवन ! मैं श्रेय पंथ पाने आया।
मैं चला अभी तक मोह पंथ, भगवंत संत को ना पाया।।
निज रूप नहीं जाना मैंने, कैसे वसु द्रव्य सजाऊँ मैं।
श्रद्धा का थाल लिया कर में, हे स्वामी तुम्हें पुकारूँ मैं।।
मैंने मन आँगन स्वच्छ किया, विश्वास प्रभु जी आयेंगे।
प्रभु काल अनादि से सोये, बालक को आज जगायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - हे दीनबंधु .....)

उत्तम क्षमा का जल नहीं, पिया मेरे प्रभो।
कषायों की कलुषता मिटी नहीं प्रभो।।
जन्मादि रोग नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

शीतल सुगंध द्रव्य लेप भी किया प्रभो।
निज आत्मा का ताप भी मिटा नहीं प्रभो।।
राग ताप नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

संयोग औ वियोग का ये सिलसिला रहा।
उत्पन्न जो हुआ उसी का नाश भी हुआ।।
गुण अखंड पाने हेतु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

श्रद्धा बिना ही धर्म को करता रहा प्रभो।
निज ब्रह्म् रूप को नहीं लखा मेरे प्रभो।।
काम बाण नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

तृष्णा महाभयंकरी है नागिनी प्रभो।
निज ज्ञान नागदमनी से बचाइये प्रभो।।
तृष्णा का रोग नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मोहांधकार का विनाश कीजिये प्रभो।
दैदीप्यमान पूर्णज्ञान दीजिये प्रभो।।
ज्ञान दीप्ति पाने हेतु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

मैं पाप कर्म का विनाश कर नहीं सका।
चिर काल से थका हुआ था आप दर रुका।।
अष्ट कर्म नाश हेतु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

मैं पाप और पुण्य के फलों में लिप्त था।
बोया बबूल और आम चाहता रहा।।
मोक्ष फल की भावना से आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

स्वानुभूति दिव्य अर्घ्य आपके समीप हैं।
क्या चढ़ाऊँ नाथ अर्घ्य आपको विदित है।।
सिद्ध पद के हेतु प्रभु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

माता विमला गर्भ पधारे, पुष्पोत्तर से गमन किया।
ज्येष्ठ वदी मावस को सारे, देव लोक ने नमन किया।।
सिंहपुरी में पिता विमल के, गृह में जय-जयकार किया।
मात गर्भ में प्रभुवर राजे, किञ्चित भी नहीं कष्ट दिया।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णअमावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

फाल्गुन वदी ग्यारस को जन्में, देवासन भी कांप उठे।
शचि कहे जिनवर से स्वामी, मेरा जन्म मरण छूटे।।
शीतल मंद सुगंधित वायु , बहती है हौले - हौले।
क्षीरोदधि का क्षीर नीर ले, देव सभी जय-जय बोले।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

रूकी बहारें ऋतु बसंत की, देख प्रभु वैराग्य धरा।
फाल्गुन कृष्णा ग्यारस के दिन, श्रवण ऋक्ष में तप धारा।।
विमलप्रभा पालकी मनोहर, वन पहुँची सुर नर के साथ।
किये तीन उपवास साथ में, एक हजार हुए मुनिनाथ।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

माघ वदी मावस अपराह्ने, पूर्णज्ञान का सूर्य उगा।
पंच सहस धनु उन्नत नभ में, समवसरण की लगी सभा।।
दिव्यध्वनि से श्री जिनवर ने, जीवों का उद्धार किया।
जय श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, देवों ने गुणगान किया।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णअमावस्यायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

सावन के महिने में शीतल, पूर्ण चंद्र का उदय हुआ।
सम्मेदाचल संकुल कूट से, जिन श्रेयांस को मोक्ष हुआ।।
एक सहस मुनि साथ पधारे, शिवलक्ष्मी भी धन्य हुई।
मोक्ष कल्याणक महिमा मेरे, पुण्योदय से गम्य हुई।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

श्री श्रेयांश जिनेश को, नमन करूँ शत बार।
मात्र आप आधार हैं, देख लिया संसार।।1।।

(चाल - शेर)

जय श्रेयनाथ आप श्रेयपंथ दिखाते।
संसारी जीव आप पाद पद्म में आते।।
हे विश्व वंद्य श्रेयनाथ अर्चना करें।
हो आपको नमोस्तु नाथ वंदना करें।।2।।

जो भव्य जीव आप तीर्थ स्नान करें हैं।
वे अष्ट कर्म मल समूह नष्ट करें हैं।।हे ...।।3।।

हैं ग्यारवें तीर्थंकरा श्रेयांस जिनवरा।
प्रभु आप में रहे नहीं अब दोष अठारा।। हे ...।।4।।

हे नाथ जग प्रकाश एक रूप आप ही।
उपयोग नंत ज्ञान दर्श दोय रूप भी।।हे ...।।5।।

जिन दर्श ज्ञान वृत्त से त्रिरूप हो तुम्हीं।
आर्हन्त्य के अनंत चतुष्टय स्वरूप भी।। हे...।।6।।

पंच परम इष्ट ब्रह्म पंच रूप हो।
जीवादि द्रव्य जानते तुम षट् स्वरूप हो।। हे...।।7।।

सातो नयों की देशना दी सात रूप हो।
आठों गुणों से युक्त सिद्ध आठ रूप हो।। हे...।।8।।

क्षायिकी नव लब्धियों से नव स्वरूप हो।
दश धर्म के धारी जिनेश दश स्वरूप हो।। हे...।।9।।

ग्यारह प्रतिमाओं का उपदेश दे दिया।
भक्तोंने ग्यारवें जिनेश को नमन किया।।हे...।।10।।

जिनराज दिव्यदेशना सौभाग्य से मिली।
पावन घड़ी है आज हृदय की कली खिली।।हे...।।11।।

कोई नहीं जिनेश है इस जग में हमारा।
चारों गति में देख लिया तू ही सहारा।।हे ...।।12।।

-:: दोहा ::-

अगणित गुण गण के धनी, मुक्तिरमा के नाथ।
मेरा भी कल्याण हो, हूँ त्रियोग नत माथ।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

हे श्रेय जिनेश्वर, श्री परमेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद :।।

श्री वासुपूज्य जिन पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

जय वासुपूज्य जिनेश पद में, वंदना शत बार है।
जिसने लिया है नाम श्रद्धा, से हुआ भव पार है।।
जबसे प्रभु तव दर्श पाया, एक अतिशय हो गया।
कोई नहीं भाता मुझे अब, मन विरागी हो गया।।
भव से बचाकर नाथ अपने, सिद्धमहल बुलाइये।
या भक्त भव्यों के हृदय में, आइये प्रभु आइये।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(गीता छंद)

शुचि पद्मद्रह का नीर लेकर, आपको अर्पण करूँ।
मिथ्यात्व मल मेरा नशा दो, हे प्रभु अर्चन करूँ।।
हे वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

भवताप को चंदन जिनेश्वर, मेट ना सकता कभी।
प्रभु आ गया हूँ मैं भटक कर, पद शरण देना अभी।।
हे वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

तंदुल धवल के पुंज पावन, शुभ्र चरणों में धरूँ।
मैं चार विध आराधना से, चार गति के दुःख हरूँ।।हे...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

शुभ पुष्प नंदन वन सुगंधित, चरण में अर्पण करूँ।
दुष्काम का संताप हरने, शीश चरणों में धरूँ।।हे...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

यह सरस पावन सौम्य रस युत,चरु चरण युग में धरूँ।
जिनराज भव व्याधि मिटा दो,नमन तव पद में करूँ।।हे...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

तव पद कमल की आरती कर, ज्ञान दीप जला सकूँ।
सब मोह पथ को त्याग कर मैं, मोक्ष पथ अपना सकूँ।।हे...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

शुभ गंध लेकर आ गया हूँ,ध्यान निज का कर सकूँ।
ये कर्म अष्ट विनष्ट कर मैं, मोक्षगामी हो सकूँ।।हे...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

प्रभु कर्म फल के राग की रुचि,अब नहीं किञ्चित करूँ।
यह मोक्षफल परमात्म पद पा,शिवमहल में पग धरूँ।।हे...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

हो आप सर्व समर्थ जिनवर, अर्घ्य क्या अर्पण करूँ।
प्रभु आप ही के नंत गुण का, रात दिन सुमिरण करूँ।।हे ...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(तर्ज - जय[2] आदिनाथ भगवान[2], इक्षुरस का किया पारणा ....)

जय-जय वासुपूज्य भगवान, जय जय तीर्थंकर भगवान...
महाशुक्र वैभव तज आये, आषाढ़ कृष्णा षष्ठी दिन आये।
माँ विजया के गर्भ में आये, वसुपूज्य पितु हर्ष मनाये।।
वासुपूज्य गर्भोत्सव के दिन, देव करें जयगान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान, जय-जय तीर्थंकर भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

फाल्गुन कृष्णा का दिन आया,चौदस वारुण योग बताया।
मेरु पर अभिषेक कराया, इंद्रों ने शुभ अवसर पाया।।
इंद्राणी ने हर्ष हर्षकर, नृत्य किया गुणगान ।
जय-जय वासुपूज्य भगवान .....।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी आई, पुष्पाभा पालकी भी आई।
मनुज देव ने उसे उठाई, उद्यान मनोहर तक पहुँचाई।।
जाति स्मरण हुआ प्रभुवर को, लीन हुए निज ध्यान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान .....।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

माघ शुक्ल की दोज मनोरम, तेंदु तरु तल बाग मनोहर।
केवलज्ञानप्रकाशितजिनवर,जय हो जय जगपूज्य जिनेश्वर।।
समवसरण में राजे स्वामी, दे उपदेश महान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान .....।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

भादो शुक्ल चतुर्दशी आयी, उडु विशाख शिवलक्ष्मी पाई।
छह सौ एक साथ मुनिराई, कर्म नष्ट कर मुक्ति पाई।।
चंपापुर निर्वाण धाम जहाँ, हुए पाँच कल्याण।
जय-जय वासुपूज्य भगवान .....।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

इंद्र नरेंद्र सुरों से पूजित, वासुपूज्य मेरे भगवान।
विश्व विजेता विश्व विभूति, जिनवर महिमा महा महान।।
महिष चिह्न युत पद कमलों को, जो मनमंदिर में धारे।
पूज्य पदों की परम कृपा से, भक्त स्वयं निज को तारे।।1।।

तीन ज्ञान के धारी स्वामी, जन्म समय से थे गुणवान।
वसुदेव पितु माँ विजया ने, दिया सभी को अनुपम दान।।
प्रभु आपका जन्म जानकर, आनंदित सुर नर सारे।
ऐरावत गज लेकर आये, लाए वाद्य यंत्र सारे।।2।।

तीन प्रदक्षिणा दे नगरी की, इंद्राणी जिनगृह आई।
निद्रालीन किया माता को, मन में हर्षित हो आई।।
प्रथम किये जिन शिशु के दर्शन, सूरज जैसा अतिशायी।
सौंप दिया कर में प्रभु जी को, इंद्र अचंभित था भारी।।3।।

सहस्र नयन से निरख-निरख कर, मेरु सुदर्शन न्हवन किया।
इंद्राणी ने वस्त्राभूषण, पहनाकर श्रृंगार किया।।
चंपापुर में आकर सबने, मात पिता को नमन किया।
तांडव नृत्य किया अति अद्भुत, जिन बालक को सौप दिया।।4।।

अष्ट वर्ष की आयु में ही, प्रभु ने अणुव्रत धार लिया।
ब्रह्मचर्य आजीवन रखकर, पंच मुष्टि कचलोंच किया।।
दीक्षा लेकर चार ज्ञान युत, मौन रहे एक वर्ष प्रमाण।
क्षपक श्रेणी चढ़ मोह नाश कर, पद पाया अरहंत महान।।5।।

देश-देश में विहार करके, मुक्ति का उपदेश दिया।
धर्म-शुक्ल शुभ ध्यान के द्वारा, मोक्ष मिले संदेश दिया।।

श्रावक मुनिव्रत को दर्शाया, दीक्षा विधि भी बतला दी।
छ्यासठ गणधर थे जिनवर के, मुख्यार्या वरसेना थी।।6।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, कल्याण हुए चंपापुर में।
धन्य-धन्य चंपापुर नगरी, धन्य धरा इस भूतल में।।
हे जिनवर मैं शिवपद पाऊँ, यही भावना है स्वामी।
"पूर्ण" करो मेरी अभिलाषा, वासुपूज्य त्रिभुवननामी।।7।।

-:: दोहा ::-

प्रभु कृपा से प्राप्त हो, परम आत्म कल्याण।
जयमाला चरणन धरूँ, हे जिन पूज्य महान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री वासुपूज्य जी, लाया अरजी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री विमलनाथ जिन पूजन

स्थापना

(चौपाई)

विमलनाथ प्रभु दर पर आया, श्री चरणों में शीश झुकाया।
जब से भगवन् दर्शन पाया, और न कोई मन को भाया।।1।।
काल अनंता व्यर्थ बिताया, आतम को पहचान न पाया।
पर को जान, मान ही आया, मन मंदिर में नहीं बिठाया।।2।।
क्षमा कीजिए हे सुखधामी ,हृदय वेदी पर आओ स्वामी।
भक्ति भाव का चौक पुराया, श्रद्धा थाल सजाकर लाया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

परमातम आनंद सरोवर,भक्ति पुष्प समर्पित है।
रत्नत्रय की मुक्ता चुगता, मानस हंस प्रमुदित है।।
सम्यग्दर्शन कलश कनकमय, ज्ञान नीर को ले आऊँ।
जन्म मरण के नाश हेतु श्री, विमलप्रभु के गुण गाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

हे प्रभुवर तुम शांत सौम्य हो, शीतल चंदन ले आया।
क्रोधानल से दूर रहूँ मैं, अत: शरण में हूँ आया।।
तप्त हो रहा भवाताप से, समता सर स्नान करूँ।
गुण अनंत मय चंदन पाने, आत्म तत्त्व का ध्यान धरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

जान नहीं पाते अक्षर से, अक्ष अगोचर जिनवर हैं।
ज्ञान परोक्ष प्रभु जी मेरा, ध्याऊँ कैसे जिनवर मैं।।
आत्म शक्ति के द्वारा फिर भी,जिन पद का सम्मान करूँ।
इंद्रिय सुख क्षणभंगुर सारा, शाश्वत सुख का पान करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविगलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

तन की ही परिणति को मैंने, अब तक माना धर्म प्रभो।
शुद्धातम के भाव न जागे, बना रहा अनजान प्रभो।।
गुण अनंत मय पुष्प खिले हैं, हे जिनवर तव उपवन में।
कभी नहीं मुरझाने वाले, महके ज्ञान सरोवर में।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

क्षुधा तृषा से रहित जिनेश्वर, दोष अठारह रहित रहें।
आनंद रस नैवेद्य अनुपम, पाकर निज में लीन रहें।।
विषय भोग की चाह नहीं है, हे जिनवर मेरे मन में।
अनाहारी विमलेश्वर प्रभु को, धारूँ मैं अपने मन में।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

काल अनादि ज्ञान स्वरूपी, निजानंद को पा न सका।
तत्त्व ज्ञान की अद्भुत महिमा, नहीं इसे पहचान सका।।
आत्म ज्ञान का दीप जलाकर, पूजा मेरी सफल करो।
असंख्यात् आतम प्रदेश के, दीपों में प्रभु तेल भरो।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

द्वेष भाव भी नहीं आपके, राग अंश का नाम नहीं।
ध्यानाग्नि प्रगटी है ऐसी, जला दिये हैं कर्म सभी।।
आत्म विशुद्धि अनुपम ऐसी, भाव सुगंधी फैल रही।
सिद्धशिला तक जा पहुँची है, पथ दिखलादो हमें वही।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

सुख-दुखी मैं हुआ आज तक, कर्म फलों का वेदन कर।
स्वानुभूति मय अमृत फल को, चखा नहीं अब तक जिनवर।।
मोक्ष महाफल शीघ्र मिलेगा, मुझको ये विश्वास प्रभो।
सम्यक् मूल चरित्र वृक्ष पर, शिवफल पाना आश प्रभो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

मैं पर का नहीं कर्ता होता, पर भी मेरा क्या करता।
निमित्त भाव से कर सकता पर, उपादान से क्या करता।।
पुण्योदय से आप कृपा से, भास रहा है आत्म स्वरूप।
पा जाऊँ अब निज प्रभुता को, छूट जाए यह भव दुःख कूप।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

वदी ज्येष्ठ दशमी आई, माँ जयश्यामा हरषाई।
तजकर शतार जिन आये, कंपिला देव सजवाये।।
पंद्रह महिने तक बरसे, बहुमूल्य रतन नभगण से।
सब जन-जन मंगल गाये, हम गर्भ कल्याण मनाये।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

प्रभु जन्म पुनः नहीं धारे,नृप कृतवर्मा सुत प्यारे।
जिन पांडु शिला पर लाये, इंद्रों ने न्हवन कराये।।
सुद माघ चौथ थी प्यारी, सुरपति शचि भी हरषाई।
शचि जन्मोत्सव मनाये, एक भव में मुक्ति पाये।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जब मेघ नाश को देखा, सब छोड़ दिया जग लेखा।
लौकांतिक विभु गुण गाया, तप दुद्धर विभु मन भाया।।
पालकी देवदत्ता थी, उद्यान सहेतुक पहुँची।
तप कल्याणक सुखदाई, जय विमलनाथ जिनराई।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

त्रय वर्ष रहे छद्मस्था, प्रभु मौन रहे निज स्वस्था।
वदि माघ सु षष्ठी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई।।
पहले पाटल तरु नीचे, फिर अधर गगन में पहुँचे।
जय विमलनाथ क्षेमंकर, जय त्रयोदशम् तीर्थंकर।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

शुभ कृष्ण अष्टमी आई, आषाढ़ मास सुखदाई।
गिरि कूट सुवीर शिखर से, शिवनार वरी गिरिवर से।।
प्रभु आठों करम नशाये, औ निजानंद पद पाये।
हम मोक्ष कल्याण मनाये, कब पास आपके आये।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णअष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(चौपाई)

विमलनाथ जिन भवभय हारी, ज्ञान मूर्ति शिशु सम अविकारी।
परम दिगंबर मुद्रा धारी, शरणागत को मंगलकारी।।1।।

तेरहवें तीर्थंकर स्वामी, दयामूर्ति समता अभिरामी।
तेरह विध चारित्र बताया, दिव्यध्वनि में ज्ञान कराया।।2।।

पाँच महाव्रत पाँच समितियाँ, तीन गुप्ति पाले दिन रतियाँ।
निश्चय पंच महाव्रत धारी, पाता शिवपद अतिशय कारी।।3।।

हिंसा झूठ परिग्रह सारे, कुशील चोरी पाप निवारे।
पूर्ण रूप से इनको त्यागे, सम्यग्दर्शन युत अनुरागे।।4।।

मिथ्यादर्शन जब तक रहता, शून्य सभी हो चारित चर्या।
मिथ्यातम है पहले जाता, फिर संयम है क्रम से आता।।5।।

ईर्या भाषैषणा समिती, निक्षेपण आदान सुनीती।
प्रतिष्ठापन ये पाँच समिती, मुनी जनों को इनसे प्रीती।।6।।

बिन विवेक है क्रिया अधूरी, मोक्षमहल से रहती दूरी।
जब तक है मिथ्यात्व वासना, समिति का है नाम लेश ना।।7।।

वचन गुप्ति मनो गुप्ति पाले, काय गुप्ति धारे भव टाले।
मन वच तन जो संयम धारे, योगों की दुष्प्रवृति निवारे।।8।।

तीर्थ प्रवर्तक आप कहाये, आतम हित चारित्र बताये।
गुरू कृपा से जागे शक्ती, प्रभु चरणों की कर लूँ भक्ती।।9।।

दुर्भावों को दूर भगाऊँ, सोयी आतम शक्ती जगाऊँ।
नाथ आपका पथ अनुगामी, बन जाऊँ मैं शिवपथ गामी।।10।।

-:: दोहा ::-

पूजा विमल जिनेश की, भक्ति भरी जयमाल।
अल्पमति मम 'पूर्ण' हो, गाऊँ तव गुणमाल।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

जय जय विमलेश्वर, हे अखिलेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री अनंतनाथ जिन पूजन

स्थापना

(अडिल्ल छंद)

अनंत ज्ञानी ज्योतिर्मय जिनराय जी।
कर्म अंत कर मोक्ष गये शिवराय जी।।
करुणाकर स्वीकारो प्रभु वंदन मेरा।
आ गया चरणों में मेटो भव फेरा।।1।।
शक्ति जब तक मुझमें दर ना छोड़ूँगा।
जैसी आज्ञा प्रभु आपकी मानूँगा।।
आह्वानन करता हूँ नाथ आ जाओ।
भावों के उच्चासन प्रभु समा जाओ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - हे दीन बंधु ....)

अनादि काल से जनम मरण किया प्रभो।
इक बार भी सम्यक् मरण नहीं किया विभो।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
जन्म मृत्यु नाश हेतु अर्चना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

शीतल मलय सुगंधित चंदन है चढ़ाया।
भवताप मिटाने प्रभो शरण में हूँ आया।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
संसार ताप नाश हेतु अर्चना करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

अक्षय प्रभु अनंतनाथ सुख निधान हैं।
नश्वर सुखों में रुल रहा दुख महान हैं।।

अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अखंड पद की प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

निष्काम आप नाम है न कोई काम है।
न नाम है न धाम है निज में विराम है।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अखंड ब्रह्मचर्य हेतु अर्चना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

आनंद सरोवर निमग्न आप हैं प्रभो।
तृष्णा के जाल में फँसा उबार लो प्रभो।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
क्षुधा व्यथा के नाश हेतु अर्चना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

ज्ञान भानु का उदय हुआ प्रभो तुम्हें।
दिखता नहीं है ज्ञान अंधकार में हमें।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
ज्ञान के प्रकाश हेतु अर्चना करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

द्रव्य कर्म भाव कर्म नाश कर दिये।
ध्यान लीन हो गये निज दर्श पा लिये।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अष्ट कर्म मेटने को अर्चना करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

भौतिक सुखों की कामना से धर्म भी किया।
अतएव क्रिया मात्र से शिव शर्म ना लिया।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
मोक्षलक्ष्मी प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

वसु द्रव्य लेय श्रेष्ठ आत्म द्रव्य मिलाऊँ।
अनंतनाथ के चरण में शीघ्र चढ़ाऊँ।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
सिद्ध पद के हेतु नाथ अर्चना करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

कार्तिक कृष्णा एकम् को, आये सपने माता को।
पुष्पोत्तर तजकर आये, सुर नर मुनि जन हर्षाये।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

ज्येष्ठा वदी बारस आई, सुर गृह गूँजी शहनाई।
नृप सिंहसेन हर्षाये, सारी साकेत सजाये।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

बजी जन्मोत्सव की बधाई, उल्का गिरने को आई।
तब एक हजार नृप संग में, दीक्षा ली सहेतुक वन में।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जब चैत्र अमा काली थी, तब ज्ञान सूर्य लाली थी।
प्रभु समवसरण में राजे, और बारह सभा विराजे।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

जब केवलज्ञान हुआ था, उस तिथि में मोक्ष हुआ था।
गिरि शिखर स्वयंभू कूट , प्रभु गये करम से छूट।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

स्वारथ का संसार सब, स्वारथ का परिवार।
परमारथ की प्राप्ति हित, जिन भक्ती आधार।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय चौदहवें तीर्थंकर, अनंतनाथ प्रभु दया निधान।
दे उपदेश भव्य जीवों को, करते आप सदा कल्याण।।
दीक्षा धर सर्वज्ञ हुए जब, जन-जन का उद्धार किया।
रत्नत्रय मय मोक्षमार्ग है, दिव्यध्वनि का सार दिया।।2।।

जीव समास चतुर्दश चौदह, मुख्य मार्गणा बतलाई।
गुणस्थान जीवों के चौदह, परिभाषा भी बतलाई।।
तत्त्वों का श्रद्धान नहीं वह, मिथ्यातम कहलाता है।
उपशम समकित से गिरकर ही, सासादन में आता है।।3।।

सम्यक् मिथ्या दही गुड़ मिश्रित, भाव मिश्र गुण में आते।
चौथे अविरत सम्यग्दृष्टि, स्व-पर तत्त्व श्रद्धा लाते।।
त्रस थावर में विरताविरति, पंचम देश विरत कहते।
संयम सकल प्रगट हो जाता, उसे प्रमत्तविरत कहते।।4।।

जहाँ संज्वलन मंद उदय हो, अप्रमत्तविरति होते।
अष्टम गुण से ही उपशम औ, क्षपक श्रेणी भी चढ़ जाते।।
कभी पूर्व में प्राप्त हुए ना, वो अपूर्व परिणाम धरे।
नवमाँ है अनिवृत्तिकरण समकालीन भाव अभेद धरे।।5।।

दशम सूक्ष्म सांपराय गुण हैं, सूक्ष्म लोभ का उदय रहे।
पूर्ण रूप से दबे मोह तो, ग्यारहवाँ गुणथान कहे।।
सकल मोह का क्षय हो जाता, क्षीण मोह द्वादश प्यारा।
चार घातिया नाश हुए तो, सयोग केवली गुण न्यारा।।6।।

योग नष्ट होते ही पाया, अयोग केवली स्थान महा।
कर्म अघाति नष्ट हुये वैदेही पहुँचे सिद्धशिला।।
ज्ञाता दृष्टा रहे जीव तो, राग-द्वेष मिट जाता है।
स्व सन्मुख दृष्टि जो रखता, मोक्ष परम पद पाता है।।7।।

समवसृति में प्रभु आपने, इस विध जो उपदेश दिया।
दिव्यध्वनि सुन लगा मुझे यों, चिदानंद निज देश दिया।।
हर्ष भाव से पुलकित होकर, प्रभु मैंने की है पूजन।
पूजा का सम्यक् फल होवे, कटे हमारे भव बंधन।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

जय जय जिनवर जी,अनंतनाथ जी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री धर्मनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

धर्मनाथ जिनवर चरणों में, अपना शीश झुकाता।
सूरज से भी तेज उजाला, नाथ आपमें पाता।।
कृपा दृष्टि मिल जाये तो मैं, बिना पंख उड़ सकता।
मध्यलोक से लोक शिखर तक, क्षण भर में जा सकता।।
यदि आप मम गृह आये तो, कर्मों से लड़ पाऊँ।
शाश्वत मुझमें ठहर गये तो, तुम जैसा बन जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - पाँचों मेरु असि ....)

शुद्ध ज्ञान का जल भर लाय, धार देत त्रय शांति कराय।
परम जिनराय, जय - जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

निज स्वभाव चंदन सुखदाय, मन को अतिशय तृप्त कराय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

सांसारिक पद नहीं सुहाय, उत्तम अक्षय ध्रुव पद पाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।। आत्म ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

शील पुष्प की सुरभि प्रदाय, कामदेव को शीघ्र भगाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।आत्म ...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

वंदन तीनों काल जिनाय, क्षुधा रोग अविलंब नशाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।। आत्म ...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

ज्ञान ज्योति शाश्वत जल जाय, कर्म हवायें बुझा न पाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।। आत्म ...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

धर्म धूप साधन बन जाय, अष्ट कर्म विध्वंस कराय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।। आत्म ...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

भक्ति भाव से जिन गुणगाय,प्रभु कृपा से शिव फल पाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।। आत्म ...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

शुभ भावों का अर्घ्य बनाय, पद अनर्घ्य जिनवर दर्शाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।। आत्म ...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

सर्वार्थसिद्धि तज आये, सुरबाला मंगल गाये।
तेरस वैशाख वदी है, माँ सुव्रता उर हर्षी है।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णत्रयोदश्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

सुद माघ त्रयोदशि आयी, प्रभु जन्मोत्सव सुखदायी।
नृप भानुराज हर्षाये, तीर्थंकर सुत को पाये।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जब जन्मोत्सव खुशियाँ थी, तब उल्कापात हुयी थी।
वैराग्य धरे जिनराजा, एक लाख संग मुनिराजा।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जब पौष पूर्णिमा आयी, प्रभु केवलज्ञान उपायी।
प्रभु राजे हैं पद्मासन, है दिव्य आपका शासन।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

सुदि ज्येष्ठ चतुर्थी आयी, शिवरमा वरी जिनरायी।
सूदत्त कूट मन भाया, सम्मेद शिखर सिर नाया।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

धर्मनाथ तीर्थेश के, गुण है नंतानंत।
गुणमाला कंठे धरे, होता भव का अंत।।1।।

(चौपाई)

धर्मनाथ जिनवर को वंदूँ, धर्म विधायक विभुवर वंदूँ।
भानुराज सुत को अभिनंदूँ, मात सुव्रता नंदन वंदूँ।।2।।

चार ध्यान उपदेशक वंदूँ,धर्मध्यान आराधक वंदूँ।
शुक्लध्यान के धारक वंदूँ,प्राणिमात्र उपकारक वंदूँ।।3।।
कूट सुदत्त अधीश्वर वंदूँ,सिद्धशिला के वासी वंदूँ।
कर्म अरिंजय स्वामी वंदूँ,मृत्युंजय अभिनामी वंदूँ।।4।।
चिन्मय चिदानंद जिन वंदूँ,परमानंद जिनेश्वर वंदूँ।
परम शांत मूरत अभिवंदूँ,महापूज्य त्रिपुरारि वंदूँ।।5।।
पंचम गति के दायक वंदूँ,इंद्रिय रहित जिनेश्वर वंदूँ।
काय रहित निष्कायक वंदूँ,योग रहित योगीश्वर वंदूँ।।6।।
वेद रहित जिन लिंगी वंदूँ,रहित कषाय जिनेश्वर वंदूँ।
ज्ञानी परम संयमी वंदूँ,केवलदर्शी जिन को वंदूँ।।7।।
लेश्यातीत भाव से वंदूँ,भव्यातीत दशा को वंदूँ।
क्षायिक समकित जिन को वंदूँ,सैनी रहित मार्गणा वंदूँ।।8।।
सदा अनाहारी प्रभु वंदूँ,ज्ञान शरीरी जिनवर वंदूँ।
पंद्रहवें तीर्थेश्वर वंदूँ,धर्मनाथ अखिलेश्वर वंदूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

हे धर्म दिवाकर, गुण रत्नाकर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री शांतिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

ऊर्ध्व लोक के अग्रभाग पर, रहते हो त्रिभुवननामी।
सात राजू दूरी पर स्वामी, दूर रहूँ मैं भवगामी।।
प्रभु आप और बीच हमारे, आज बहुत ही दूरी है।
आप वीतरागी मैं रागी, श्रद्धा बंधन डोरी है।।

वचनों में नहीं शक्ति प्रभु जी कैसे आज बुलाऊँ मैं।
भाव भक्ति मेरी सुन लेना, शांति जिनेश पुकारूँ मैं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

शुद्धातम का शुद्ध नीर श्रद्धा झारी में भर लाया।
प्रभु दर्श करते ही मिथ्यातम का अंतिम दिन आया।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, स्वभाव जल पाने आया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

काल अनादि भवाताप से, दुःख अनंत सहा करता।
निज चैतन्य सदन में प्रभुवर, क्रोधानल धू-धू जलता।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, शीतलता पाने आया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

हीरा मोती माणिक आदि, अक्षत लेकर आया हूँ।
राग-द्वेष बंधन मिट जाये, यही भावना लाया हूँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिन चरणांबुज में अक्षय पद पाने आया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

निजानंद पुष्पित बगियाँ में, प्रभु विहार नित करते हो।
अपनी ही फुलवारी में नित, ब्रह्म रूप रस पीते हो।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, कामजयी होने आया।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

श्रद्धा रस से भरा हुआ, नैवेद्य समर्पित करता हूँ।
निजानुभव से तृप्त प्रभु की, वीतरागता वरता हूँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, शुचिमय चरु पाने आया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

अति विरक्त होकर जिन मेरे, आप निरखते निज निधियाँ।
रत्नदीप से करूँ आरती, मेरी भी खोलो अखियाँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, परम ज्योति पाने आया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

प्रभु आपके सिद्धमहल में, ज्ञान धूप घट जलते हैं।
अतः कर्म के कीट पतंगे, दूर-दूर ही रहते हैं।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, शुद्ध धूप पाने आया।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

मम श्रद्धा मंडप में आओ, मुक्ति का उत्सव कर दो।
फल लाया हूँ प्रभु चढ़ाने, एक नजर मुझ पर कर दो।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, मुक्तिरमा वरने आया।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

बिन श्रद्धा के नाथ हजारों, मैंने अर्घ्य चढ़ाये हैं।
दिखा दिखाकर इस दुनिया को, धर्मी भी कहलाये हैं।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, पद अनर्घ्य पाने आया।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

(सखी छंद)

भादो वदी सप्तमी आई, कुरुवंश में खुशियाँ छाई।
छप्पन दिक् देवी आई, माता ऐरा हर्षाई।।
नृप विश्वसेन अर्चित है, प्रभु के कारण चर्चित है।
सर्वार्थसिद्धि तज आये, इंद्रों ने रत्न बरसाये।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

वदी जेठ चतुर्दशी आई, जन्में त्रिभुवन जिनराई।
सब जग में आनंद छाया, सुर गिरि अभिषेक कराया।।
हस्तिनापुर नगरी प्यारी, प्रभु तीन पदों के धारी।
अतिशय दश है सुखकारी, जय शांतिनाथ त्रिपुरारि।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

प्रभु जाति स्मरण हो आया, वैराग्य सहज मन भाया।
छह खंड राज को छोड़ा, विष भोगों से मुख मोड़ा।।
सिद्धार्थ पालकी चढ़के, सु आम्रवनी में पहुँचे।
लौकांतिक शीश नवाये, मुनि शांतिनाथ गुण गाये।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

बैठे नंदी तरु नीचे, फिर ज्ञान गगन में पहुँचे।
सुदी पौष तिथि दशमी को, उपदेश दिया भवि जन को।।
खिरी समवसरण में वाणी, गणधर गूँथी कल्याणी।
दश केवलज्ञान के अतिशय, प्रभु शांतिनाथ की जय-जय।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जब जेठ वदी चौदस थी, तब पाई शिव लक्ष्मी थी।
संग नौ सौ थे मुनिराया, गिरि कूट कुंदप्रभ भाया।।
प्रभु अष्टम वसुधा पाये, हम भी शिव आस लगाये।
सम्मेद शिखर की जय-जय, श्री शांतिनाथ की जय-जय।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

-:: दोहा ::-

जिन शासन के दीप हो, प्रभो शांत अवधूत।
नाम मात्र से शांति हो, पाऊँ शांत स्वरूप।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

शांति विधायक शांति जिनेश्वर, नर सुरपति से वंदित हैं।
सोलहवें तीर्थंकर स्वामी , तीन लोक में पूजित हैं।।
द्वादश कामदेव चक्रीश्वर, पंचम पद के धारी हैं।
बालपने से अणुव्रत धारी, प्राणी मात्र हितकारी हैं।।2।।

छह खंडों के अधिपतियों को, शीघ्र आपने जीत लिया।
चक्र दिखाकर मात्र पुण्य से, चक्री का नहीं मान किया।।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्त कर, धर्मादि पुरुषार्थ किया।
जाति स्मरण जब हुआ आप को, राज तजा वैराग्य लिया।।3।।

रत्नत्रय साधन के द्वारा, तुमने जिनपद राज किया।
चक्रवर्ती की अतुल निधि का,सहज भाव से त्याग किया।।
मंदरपुर के नृप सुमित्र ने, भक्ति से आहार दिया।
क्षीरधार मुनि कर में देकर, शिवपथ को पहचान लिया।।4।।

क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुये तब, केवलज्ञान प्रकाश हुआ।
विचरण करके देश-देश में, मोक्षमार्ग उपदेश दिया।।
राज्य दशा में चक्ररत्न के, भय से नृप ने नमन किया।
प्रगट हुई चिद्रूप दशा तो, श्रद्धा से तव शरण लिया।।5।

श्रीसम्मेद शिखर पर स्वामी, शुक्लध्यान आसीन हुये।
कूट कुंदप्रभ पुनीत धरा से, सिद्धक्षेत्र में पहुँच गये।।
अहो भाग्य है मेरा प्रभुवर, दर्श करूँ दो नयनों से।
शांति जिनेश्वर का गुण गाऊँ, तन से मन से वचनों से।।6।।

शांतिनाथ जगदीश्वर स्वामी, मुझको भी ऐसा वर दो।
अनुकूल प्रतिकूल योग में, समता हो ऐसा कर दो।।
प्रभु आपके चरण पखारूँ, मिथ्या तिमिर विनाश करूँ।
तीर्थंकर पद वंदन करके, पंच पाप मल नाश करूँ।।7।।

शांतिनाथ प्रभु का दर्शन कर, सम्यग्दर्शन प्राप्त करूँ।
शांति विधाता का सुमिरण कर, सम्यग्ज्ञान प्रकाश वरूँ।।
शांतिनाथ मूरत अर्चन कर, सम्यग्चारित हृदय धरूँ।
विघ्न विनाशक चरण चित्त धर, बारंबार प्रणाम करूँ।।8।।

श्री जिनवर का सुयश गान कर, शाश्वत मुक्तिधाम वरूँ।
शांति जिनेश मोक्ष पद दाता, परम शांत रस पान करूँ।।
करुणासागर चरणांबुज का, दर्शन कर भव भार हरूँ।
प्रभु आपके पथ पर चलकर, भव समुद्र को पार करूँ।।9।।

-:: दोहा ::-

शांति प्रभु के चरण को, चित् सिंहासन धार।
श्रद्धा द्वीप उजाल कर, ध्याऊँ बारंबार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री शांति जिनेशा, भविजन ईशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद :।।

श्री कुंथुनाथ जिन पूजन

स्थापना

(अडिल्ल छंद)

कुंथुनाथ जिनराज दया के सिंधु हैं।
नाथ दिवाकर आप सुधाकर इंदु हैं।।
प्राणीमात्र की रक्षा करते नाथ हैं।
इसीलिए शत इंद्र झुकाते माथ हैं।।1।।

सिद्धालय में जिनवर आप समा गये।
निज देहालय में परमेश्वर आ गये।।
प्रभो आपका भक्ति से आह्वान करूँ।
आकर फिर ना जाना ये ही अरज करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

प्रासुक जल अर्पण करने से, शुद्ध बनेंगे सोचा था।
किंतु अशुभ भावों को हमने , नहीं मिटाना चाहा था।।
जनम मरण से व्याकुल होकर, वचनामृत पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, प्रासुक जल पूजन लाये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

कभी अतीत के विकल्प करते, कभी अनागत के संकल्प।
भव आताप बढ़ाते रहते, बीत गया यों काल अनंत।।
सिद्धशिला की शांति पाने, भवाताप हरने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, श्रद्धा चंदन ले आये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

जगत उपाधि पाने हेतु , आधि व्याधि से ग्रसित रहे।
कुगुरु कुदेव कुधर्म की सेवा, मिथ्यादर्शन गृहीत धरें।।
इसीलिए अविनाशी बनने, निज वैभव पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, अखंड अक्षत ले आये।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

इंद्रिय मन के विषय मनोहर, मिष्ट जहर जैसे लगते।
आत्म शील के नाशक हैं सब, दुख उत्पन्न सदा करते।।
चिन्मय रूप मनोहर पाने, आप्त काम होने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, पुष्प अचेतन ले आये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

तन के कारण किञ्चित किंतु , मन के हित आहार किया।
तन की भूख तनिक से मिटती, क्षुधा व्याधि को बढ़ा दिया।।
क्षुधा रोग उपसर्ग जीतकर, ज्ञान सुधा पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, ले नैवेद्य चले आये।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

बाह्य रोशनी से बाहर में, सारा तमस मिटा डाला।
चेतन गृह में मोह बढ़ाकर, मिथ्यातम से भर डाला।।
महाबली नृप मोह कर्म का, सर्वनाश करने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, मणिमय दीपक ले आये।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

धूप दशांगी चढ़ा चढ़ाकर, धूम्र उड़ाई नभ तल में।
कर्म शक्ति को बढ़ा बढ़ाकर, भटक रहे है भव-वन में।।
तप अग्नि में कर्म काठ को नाथ जलाने हैं आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, धूप सुगंधी ले आये।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

कर्तापन से कार्य जगत में, किये बहुत दुख पाया है।
फल पाने की इच्छा ने ही, आतम को तड़फाया है।।
जग के फल दुखदायी तजकर, शिवफल पाने हैं आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, शुद्ध मनोहर फल लाये।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

पर द्रव्यों का भोग अभी तक, किया बहुत मैंने स्वामी।
पर पद की अभिलाषा में ही, जीवन व्यर्थ किया स्वामी।।
जड़ वैभव को चढ़ा आज, चैतन्य विभव पाने आये।
कुंथुनाथ जिनराज शरण में, अर्घ्य बनाकर ले आये।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(अडिल्ल छंद)

श्रीमती को सोलह सपने दिखलाये।
श्रावण वदी दशमी को गर्भ में आये।।
तीनों पद के धारी प्रभुवर धन्य हैं।
नगर हस्तिनापुर भी लगता रम्य है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

सूर्यसेन राजा के घर में जन्म लिया।
एकम सुदी वैशाख दिवस पावन किया।।
कामदेव तेरहवें रूप मनहारी।
पांडु शिला अभिषेक हुआ अतिशय कारी।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जाति स्मरण से प्रभु आप संयम धरा।
सब संसार असार जाना तप निखरा।।
विजय पालकि चढ़े चले निर्जन वन में।
तिलक तरु के नीचे प्रभुवर तप करने।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडितायश्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

चैत्र शुक्ला तृतीया घाति नष्ट किया।
समवसरण को रच कुबेर हर्षित हुआ।।
शिवपथ बतलाया प्रभो ने ज्ञान दिया।
दिव्यध्वनि से प्रभु विश्व कल्याण किया।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

ध्यानाग्नि से अष्ट कर्म को दग्ध किया।
एकम सुदी वैशाख मुक्ति वरण किया।।
श्री सम्मेदाचल से जिनवर सिद्ध हुए।
कूट ज्ञानधर गिरिवर की जय बोल रहे।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

कुंथुनाथ भगवान है, करुणा के अवतार।
इस असार संसार में प्रभु भक्ती ही सार।।1।।

(पद्धरि छंद)

जय कुंथुनाथ हे जगन्नाथ , करुणा के सागर प्राणिनाथ।
जय कुमति निकंदन कुंथुनाथ, हे कल्मष भंजन कुंथुनाथ।।2।।
जय सुख वारिधि हे कुंथुनाथ, गुणवंत हितंकर कुंथुनाथ।
जय शिवरमणी के प्राणनाथ, षष्टम चक्रेश्वर कुंथुनाथ।।3।।
जय श्रीमति नंदन कुंथुनाथ, पितु सूर्यसेन सुत कुंथुनाथ।
पैंतिस गणधर थे आप नाथ, थे मुख्य स्वयंभू मुनीनाथ।।4।।
हैं कई हजार शिष्यों के नाथ, श्रोता नर नारी इंद्रनाथ।
अष्टादश दोष विमुक्त नाथ, प्रभु नंत चतुष्टय युक्त नाथ।।5।।
मोहारिजयी श्रीकुंथुनाथ, शत इंद्र नमाते शीश नाथ।
चिन्मय चिंतामणि आप नाथ, कुन्थ्वादि जीव के दया नाथ।।6।।
जय कौरव वंशी कुंथुनाथ, अज चिह्न चरण है आप नाथ।
मैं तव चरणों में नमूँ माथ, मुक्ति तक देना साथ नाथ।।7।।
प्रभु मोक्षनगर में करें वास, जिनपदवी की बस लगी आस।
जिनराज दर्श की अभिलाष, वसु कर्म दुष्ट का करूँ नाश।।8।।
अब हो जाऊँ स्वाधीन नाथ, इसलिए नवाऊँ आज माथ।
प्रभु सादर सविनय नमन आज, जयमाला अर्पण मुक्ति काज।।9।।

-:: दोहा ::-

नंत चतुष्टय लीन है, चित् स्वभाव अविकार।
मुझ पर भी कर दो कृपा, करूँ भवोदधि पार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री कुंथु जिनेश्वर, हे करुणेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

श्री अरनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

अरहनाथ के चरण कमल को, निशदिन बारंबार प्रणाम।
निष्कलंक निश्चल निष्कामी, निजानंद निष्कल गुणधाम।।
जग आकर्षण छोड़ सभी मैं, आया जिनवर द्वार प्रभो।
पुण्योदय से आज मिले हो, कर देना उद्धार विभो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - नंदीश्वर श्री जिन ....)

जल मल का करता नाश, जल वो ले आया।
मम कर्म पंक धुल जाय, आश लिये आया।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
प्रभु किया परम उपकार, श्रद्धा उर लाया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

चंदन है जग विख्यात, तन आतप हारी।
मन का मेटो संताप, भव व्याधि घेरी।।अरनाथ ...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

नश्वर तन के हित नाथ, बहुविध कर्म करे।
शाश्वत आतम को भूल, रूप अनेक धरे।।अरनाथ ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

पुष्पांजलि चरण चढ़ाय, शील स्वभाव जगे।
भव सिंधु के उस पार, मेरी नाव लगे।।अरनाथ ...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

यह चरु करूँ मैं भेंट, ऐसा वर देना।
क्षुध् व्याधि पूर्ण हो नष्ट, ऐसा कर देना।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
प्रभु किया परम उपकार, श्रद्धा उर लाया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

सूरज उगते ही प्रात, तम को विनशाये।
यह दीप समर्पित आज, आतम उजियारे।।अरनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

प्रभु आत्म ध्यान की धूप, सम्यक् ज्ञानमयी।
इस राग द्वेष को नाश, होऊँ कर्म जयी।।अरनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

फल चरण चढ़ाऊँ नाथ, शिवफल चाह रखूँ।
कर्मों को करके क्षीण, शिवफल को निरखूँ।।अरनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

पर पद में हो आसक्त, निज पद को भूला।
जब दर्श किया जिनराज, मुक्तिद्वार खुला।।अरनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

मंगल छिन्न स्वप्न सोलह, श्री मात सुमित्रा को आये।
अपराजित अनुत्तर तजकर, नगर हस्तिनापुर आये।।
फाल्गुन शुक्ला तृतीया को नृपराज सुदर्शन हर्षाये।
सुरपति रत्नों को बरसाये, कल्याणक मन को भाये।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

मगसिर शुक्ला चौदश के दिन, तीर्थंकर जग में आये।
एक चार वसु योजन स्वर्णिम, सहस आठ कलशा लाये।।
सिद्धशिला जाने वाले को, पाण्डु शिला पे ले आये।
कोटी साढ़े बारह बाजे, तरह-तरह के बजवाये।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

मगसिर सुदि दशमी को स्वामी, मेघ नाश होते देखा।
वस्त्राभूषण तजे तुरत ही, नश्वर जग से मुख मोड़ा।।
चक्री पद को त्याग पालकी, वैजयंती में बैठ चले।
हजार नृप संग तेला करके, अरहनाथ मुनिनाथ बने।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

कार्तिक सुदि बारस को प्रभु ने, जिनवर की पदवी पायी।
छ्यालीस गुण प्रकट हुए और क्षायिक नव लब्धि पायी।।
नाम कर्म की तीर्थंकर शुभ, प्रकृति आज उदय आयी।
अरहनाथ के जयकारों से, सारी धरती गुँजायी।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

चैत्र अमावस्या को स्वामी, नाटक कूट निर्वाण लिया।
एक सहस मुनिनाथ साथ में, सम्मेदाचल धन्य किया।।
अव्याबाध सुखी होकर प्रभु, देह रहित स्वाधीन हुये।
पंचमगति को पाने हेतु, तव चरणों में लीन हुये।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

अरहनाथ भगवान को, मैं पूजूँ धर ध्यान।
आप भक्ति की शक्ति से, करूँ आत्म कल्याण।।1।।

(चाल - शेर)

अरनाथ आपके चरण को नित्य मैं नमूँ।
धर ध्यान आपका प्रभु भव सिंधु से तरूँ।।
देवाधिदेव अरहनाथ आपको नमूँ।
हे सातवें चक्रेश मुनिनाथ को नमूँ।।2।।

हे वर्तमान तीर्थनाथ आपको नमूँ।
हो कामदेव चौदहवें जिन आपको नमूँ।।
सौधर्म इंद्र आपके चरणों में है नमे।
गणधर मुनीन्द्र आपकी भक्ति में है रमे।।3।।

जो नित्य प्रभु आपके दर्शन को है पाता।
वो पाप नाश करके शीघ्र मोक्ष है पाता।।
हे नाथ भक्ति आपकी मन से करे सदा।
उसको न विघ्न व्याधियाँ सताती है कदा।।4।।

पूजा करे विनय से अरहनाथ आपकी।
हो पूर्ण मनोकामना उस भक्त के मन की।।
शंकादि दोष टारके समदर्श को पाता।
वो आठ अंग धारता निज ज्ञान को पाता।।5।।

तेरह प्रकार के चरित्र धार वो लेते।
शुद्धोपयोगी होय मुनि आत्म को ध्याते।।
वे ग्रीष्मकाल में गिरि शिखरों पे रहें हैं।
वर्षा ऋतु में तरु तले परीषह को सहे हैं।।6।।

हेमंत काल में मुनि बाहर शयन करें।
द्वादश प्रकार तप तपे मुनि को नमन करें।।
उपवास वास करते निज में रहें मुनीश।
चऊँ घाति घात करके पद पा गये हैं ईश।।7।।

रचना हुई समवसरण सब ताप अघहरा।
है तीस जिसमें श्रीकुंथु मुख्य गणधरा।।
हे नाथ आपका सुयश सुना मैं आ गया।
मैं भी बनूँ परमात्मा ये मन को भा गया।।8।।

अज्ञान मान वश यदि जो दोष हैं हुये।
हे नाथ माफ कीजिये तुम हो दया निधे।।

अरनाथ आपके चरण को नित्य मैं नमूँ।
धर ध्यान आपका प्रभु भव-सिंधु से तरूँ।।9।।

-:: दोहा ::-

मीन चिह्न युत है चरण, वंदन बारम्बार।
भावों से दर्शन करूँ, हो जाऊँ भव पार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

हे अरहनाथ जी, मेरी अरजी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री मल्लिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(चौबोला छंद)

बहुत बुलाया मैंने भगवन्, अब मैं ही खुद आऊँगा।
नहीं सुनाया अब तक तुमको, अब निज व्यथा सुनाऊँगा।।
सुनकर मेरी व्यथा कथा को, है विश्वास पुकारोगे।
अनंत दुख से व्याकुल मुझको, भव से पार लगाओगे।।
मल्लिनाथ है नाम तुम्हारा, दयासिंधु कहलाते हो।
श्रद्धा से जो भक्त पुकारे, उसके हृदय समाते हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(अडिल्ल छंद)

ज्ञान कलश में शुद्ध नीर निर्मल लिया।
मिथ्यामल धोने हेतु पद धार किया।।

मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके जन्म रोग को मैं हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

अनंत युग का प्यासा ज्ञान पिपासा है।
शांति शाश्वत मुझे मिलेगी आशा है।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके भवाताप को मैं हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

जन्म मरण की वेदना से रोता हूँ।
कर्म बंध के भार को मैं ढोता हूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके अक्षय जिनपद को नमूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

पंचेन्द्रिय की अभिलाषाएँ भटकाती।
ब्रह्म रूप में लीन नहीं होने देती।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके परम् ब्रह्म पद में रमूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

पूर्ण शुद्ध चेतन चिन्मय चिद्रूप हूँ।
फिर भी जड़ संबंध किया विद्रूप हूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके समता रस का पान करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

दीप भू पर नभ में सूरज तारे हैं।
अंधकार हरने बेवस बेचारे हैं।।

मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके ज्ञान दीप उर में धरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

कर्म सदा मेरी बुद्धि को भ्रष्ट करें।
धूप चढ़ाऊँ आज प्रभु सब कर्म जरें।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके वसु कर्म को नष्ट करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

इंद्रिय सुख के फल हेतु मैं व्याकुल हूँ।
प्रभु दर्श पा, शिव फल पाने आकुल हूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके मोक्ष महापद मैं वरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

अर्घ्य अर्पण कर निज गुण में लीन रहूँ।
जिन समान ही शीघ्र नाथ अरिहंत बनूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके मुक्तिवधू को मैं वरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(तर्ज - कर लो जिनवर का गुणगान....)

देव मनाये गर्भ कल्याण, आई शुभ की घड़ी।
आई शुभ की घड़ी, देखो मंगल घड़ी.....।।

अपराजित अनुत्तर छोड़ा, मिथिलापुर में आये।
निद्रा में शुभ स्वप्न देख, माँ प्रभावती सुख पाये।।
सुरपति करें प्रभु गुणगान, चैत्र सुदी एकम् है महान।
कर लो जिनवर का गुणगान,आई शुभ की घड़ी...।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिन्द्राय अर्घ्यं ....।

मगसिर सुदी एकादशमी को कुंभराज गृह आये।
जन्मोत्सव में मंगल उत्सव, गा अभिषेक कराये।।
देव मनाये जन्म कल्याण, ले गये पाण्डु शिला महान।
कर लो जिनवर का गुणगान, आई जन्म की घड़ी...।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जन्मोत्सव के समय प्रभु ने, विद्युत अस्थिर देखा।
जयंत पालकी में लेकर, सुर दल शालीवन पहुँचा।।
देव मनाये तप कल्याण, करने चले आत्म कल्याण।
कर लो जिनवर का गुणगान, आई तप की घड़ी...।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

अशोक तरु के नीचे प्रभु ने, केवलज्ञान उपाया।
चार घाति कर्मों का क्षयकर, समवसरण ही भाया।।
देव मनाये ज्ञान कल्याण, प्रभु की ध्वनि खिरी है महान।
कर लो जिनवर का गुणगान, आई ज्ञान की घड़ी...।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

फाल्गुन शुक्ला पंचमी को अपराह्न समय जब आया।
सम्मेदाचल संबल कूट से, महा मोक्ष पद पाया।।
देव मनाये मोक्ष कल्याण, पहुँचे जिनवर मुक्तिधाम।
कर लो जिनवर का गुणगान, आई मोक्ष की घड़ी...।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

मल्लिनाथ जिनराज की, जग में कीर्ति विशाल।
बाल ब्रह्मचारी प्रभो, नमन करूँ त्रयकाल।।1।।

(चौपाई)

वंदन जिन श्री मल्लिनाथा, हम गाये तव गुण की गाथा।
भेष दिगम्बर तुमने धारा, वीतराग को नमन हमारा।।2।।

प्रभु आप आतम रुचि जागी, बिन उपदेश नाथ वैरागी।
विद्युत अस्थिर होते देखा, छोड़ दिया जग वैभव लेखा।।3।।

जय श्री मल्लिनाथ हमारे, लाखों भविजन तुमने तारे।
जय-जय मुक्तिरमा पति देवा, सौ-सौ इंद्र करे तुम सेवा।।4।।

जय आनंद निधान जिनेशा, हरो अमंगल दोष अशेषा।
बाल ब्रह्मचारी जिनराई, मुक्तिरमा से प्रीत लगाई।।5।।

कुमार वय में दीक्षा धारी, द्रव्य भाव हिंसा परिहारी।
मोह मल्ल को नाश किया है, निज आतम को जान लिया है।।6।।

प्रभु सोलह कारण आराधे, तीर्थ प्रवर्तन सब सुख भासे।
मास पूर्व ही योग निरोधा, योग रहित हो शिव को साधा।।7।।

गणधर हुए अट्ठाईस सारे, उन्हें त्रियोग से नमन हमारे।
मैं संयम की पाऊँ नैया, शिवपथ के हो आप खिवैया।।8।।

स्वानूभूति तरणी गंभीरा, आये मोक्षपुरी के तीरा।
जिनवर काटे कर्म जंजीरा, चऊ गतियों की नाशी पीरा।।9।।

मैं भी ऐसा जीवन पाऊँ, निकट आपके शीश झुकाऊँ।
जपूँ सदैव प्रभु दिन रैना, जागे मेरी पुण्य सुसेना।।10।।

महान जिन श्रीमल्लिनाथा, नष्ट किया वसुविधि का खाता।
जिनवर मुक्तिपुरी के वासी, उसी पंथ का मैं प्रत्याशी।।11।।

प्रभुवर आत्म भवन में आये, अनंत सुख के उपवन पाये।
मल्लिनाथ पद शीश नवाये, प्रभु समान जिन पद हम पाये।।12।।

-:: दोहा ::-

कलश चिह्न लख चरण में, इंद्र करें जयकार।
संबल मल्लीनाथ दो, हो जाऊँ भव पार।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

हे मल्लि जिनेश्वर,मेरे ईश्वर,भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

हे मुनिसुव्रत मेरे भगवन्, सिद्धालय के वासी हो।
आह्वान करूँ आओ जिनवर,मम हृदय कमल विश्वासी हो।।
भावों के पीले पुष्पों से, बुला रहा हूँ आ जाओ।
कर्म शत्रु भी शांत हुए हैं, शीघ्र हृदय में बस जाओ।।1।।

मैं हूँ भक्त आपका सच्चा, आप मेरे सच्चे भगवान।
मेरी दुनिया छोटी सी है, रखना मेरा भगवन् ध्यान।।
हृदयांगन में करूँ प्रतीक्षा, बोलो ना कब आओगे।
आशा है विश्वास पूर्ण है, नाथ मेरे गृह आओगे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(हरिगीतिका छंद)

जग में जनम लेकर अनंतों, बार मैं मरता रहा।
जब आपका वैभव लखा तो, देखता ही मैं रहा।।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

स्पर्शित किया चंदन बहुत पर, ताप मिट पाया नहीं।
गंगाम्बु मुक्ताहार शीतल,काम कुछ आया नहीं।। हे...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

नश्वर सुखों की कामना में, शिवभवन ना पा सका।
पर भाव में अटका रुला हूँ,आत्म पद ना पा सका।।हे..।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्दाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

यह चाह विषयों की मिटा दो, पुष्प अर्पण है प्रभो।
दुष्कर्म का नेता यही है, काम को नाशो प्रभो।। हे ...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

चिरकाल से जड़ वस्तुओं में, स्वाद आया है प्रभो।
निज ज्ञान रस का स्वाद अब तक,जान ना पाया प्रभो।।हे..।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

दीपक शिखा से तम मिटेगा, भ्रम रहा मेरा प्रभो।
तमहारिणी वो ज्ञान छैनी, दूर तम करती विभो।।हे...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

प्रभु आपके ही ज्ञान घट में, ध्यान धूप सुगंध हैं।
मम पास धूप, सुगंध बिन है, गंध आप अनूप हैं।।हे...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

प्रभु दर्श जो मैंने किया निज, आत्म सुख फल चाहता।
चिर काल से इंद्रिय सुखों के, फल रहा मैं चाहता।।हे...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

निज आत्म वैभव का अतिशय, नाथ बतला दीजिये।
मम अर्घ को स्वीकार लो प्रभु, ज्ञानधार बहाइये।।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

प्रभु आनत दिवि से आये, औ राजगृहि में आये।
कृष्णा श्रावण द्वितीया दिन, माँ पद्मा उर आये जिन।।
छप्पन कुमारियाँ आई, अंत:पुर बजे बधाई।
माँ स्वप्न देख हर्षायें, नृपराज सुमित्र सुनायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

वैशाख वदी तिथि आई, बारस जन्में जिनराई।
अभिषेक किया मेरु पर, बस अर्ध निमिष में जाकर।।
जो जन्म मरण से डरते, वे प्रभु की पूजा करते।
मैं जामन मरण मिटाऊँ, प्रभो जन्मोत्सव मनाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

वैशाख वदी दशमी थी, प्रभु जाति स्मृति हुई थी।
जब केशलोंच कर लीना, सुर क्षीरोदधि में दीना।।
तेला कर दीक्षा धारी, थे संग सहस मुनिराई।
इंद्राणी चौक बनाया, दीक्षा कल्याण मनाया।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जब प्रभु रहे छद्मस्था, तब मौन रहे भगवंता।
वैशाख वदी तिथि नवमी, हो गये पूर्ण प्रभु ज्ञानी।।
चरणों मे कमल रचे हैं, जब प्रभु विहार करें हैं।
गुणथान सयोगी पाया, ज्ञानोत्सव देव मनाया।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

फाल्गुन कृष्णा बारस को, प्रभु पाये सिद्धालय को।
ज्यों है कपूर उड़ जाता, त्यों प्रभु तन भी उड़ जाता।।
प्रभु सम्मेदाचल आये, निज आतम ध्यान लगाये।
हम भी शुभ अर्घ्य चढ़ायें, औ मुक्तिरमा को पायें।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

सूरज से नीरज खिले, और स्वाति से सीप।
भव्य कमल तुम से खिले, आओ हृदय समीप।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, भक्ति सुमन चढ़ाता हूँ।
है विशाल तव यशगाथा मैं, पूर्ण नहीं कह सकता हूँ।।
शरण आपकी जो आता है, कर्मों का ग्रह मिट जाता।
जन्म मरण के दुःखों से वह, पल में छुटकारा पाता।।2।।

प्रभु स्वयं में आप विराजे, जान रहे हो सभी जहान।
भव्य जनों के कष्ट मिटाते, सदा प्रभु जी आप महान।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान हुए हैं, राजगृही में शुभ कल्याण।
अधो मध्य पाताल लोक में, गूँजा प्रभु का यश-जयगान।।3।।

रत्नत्रय आभूषण पहने, जड़ आभूषण का क्या काम।
दोष अठारा रहित हुए है, वस्त्र शस्त्र का लेश न नाम।।
तीन लोक के स्वयं मुकुट हो,स्वर्ण मुकुट का क्या है काम।
नाथ त्रिलोकी कहलाते हो, फिर भी रहते हो निज धाम।।4।।

भक्त निहारे प्रभु आपको, आप निहारे अपनी ओर।
आप हुए निर्मोही स्वामी, अनंत गुण का कहीं न छोर।।
धन्य आपकी वीतरागता, नहीं भक्त को कुछ देते।
फिर भी भक्त शरण में आकर, सब कुछ तुमसे पा लेते।।5।।

प्रभु आपके वचन श्रवण कर, आत्म ज्ञान को पाते हैं।
रत्नत्रय धारण कर साधक, शिव पथ में लग जाते हैं।।
चक्री इंद्रादिक के वैभव, पुण्य अतिशय से मिलते।
किंतु चाहते नहीं उन्हें ज्ञानी निज आतम में रहते।।6।।

काल अनंता बीत गया है, मोह शनीचर सता रहा।
लाखों को प्रभु पार किया है, भक्त हृदय यह बता रहा।।
नाथ आपकी महिमा को मैं, अल्पबुद्धि कैसे गाऊँ।
यही भावना भाता हूँ निज का, निज में दर्शन पाऊँ।।7।।

-:: दोहा ::-

प्रभो भक्त मैं आपका, दुख से हूँ संयुक्त।
एक नजर कर दो प्रभो, होऊँ दुख से मुक्त।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

मुनिसुव्रत स्वामी, हो जगनामी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री नमिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु के चरणों की पूजन का, भाव हृदय में आया।
नमिनाथ प्रभु नमन करूँ मैं, मन मेरा हर्षाया।।
चरण पखारूँ भक्ति भाव से, भव्य भावना भाऊँ।
दृढ़ वैराग्य जगा अंतर में, सिद्धालय में जाऊँ।।1।।

जिन भक्ती से प्रेरित होकर, नाथ शरण में आया।
मेरे जिनवर तुमको निज गृह, आज बुलाने आया।।
श्रद्धा गुण युत मम मंदिर में, शाश्वत नाथ समाना।
निकट रहूँगा सदा आपके, नमिनाथ प्रभु आना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

आतम कर्मों से मलीन है इसको धोने आया हूँ।
प्रभो! आपकी वाणी को श्रद्धा से पीने आया हूँ।।
सुधा नीर लेकर आया प्रभु जन्म जरा मृत नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

जड़ द्रव्यों की चिंता में ही जीवन चिता बनाई है।
शीत द्रव्य का लेप किया पर शांति आप में पाई है।।
बावन चंदन ले आया हूँ भवाताप प्रभु नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

आयु पल-पल घटती रहती मृत्यु से भय भारी है।
अक्षयपुर का वासी होकर नश्वर का अभिलाषी है।।
अतः आज भावों से अक्षत लाया हूँ भव नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

निज स्वभाव की गंध मिली ना, पुष्प सुगंधी लाये हैं।
तन के सुंदर आकर्षण में नरकों के दुःख पाये हैं।।

नाथ मुझे निष्काम बना दो काम बाण का नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

रसना की लोलुपता में ही शुद्धि का ना ध्यान रखा।
स्वातम रस का स्वाद लिया ना व्रत संयम से दूर रहा।।
निराहार जिन आप स्वभावी क्षुधा रोग मम नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

पर के दोष दिखे हैं लेकिन निज के दोष न दिख पाये।
अंतर में है घना अँधेरा सत्य स्वरूप न दिख पाये।।
ज्ञान दीप में तेल नहीं अज्ञान अँधेरा नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

ये कर्म बहुत दुख देते हैं कर्मों को दोष दिया करता।
स्वयं नहीं पुरुषार्थ जगाया भाव शुद्धि नहीं कर पाता।।
अब धूप समर्पित करता हूँ सब दुर्भावों का नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

भाव शुभाशुभ जब करता हूँ पुण्य-पाप फल पाता हूँ।
कर्म उदय में जब आते हैं व्याकुल हो फल सहता हूँ।।
हे मोक्ष निवासी नमिनाथ सब कर्म फलों का नाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

सारे पद जग के झूठे हैं शाश्वत ना, मिट जाते हैं।
शिवपद ही मन को भाया प्रभु तुम सा कहीं न पाते हैं।।

मद का काम नहीं शिवपथ में मम मद पूर्ण विनाश करो।
नमिनाथ अब दर्शन दो आतम वेदी पर वास करो।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

विजयराज फल स्वप्न कहे, अपराजित तजकर प्रभु आये।
आश्विन कृष्णा द्वितीया के दिन, माता वप्रा उर आये।।
मिथिलापुर नगरी में प्रतिदिन, नूतन मंगल गान करें।
धन्य गर्भ कल्याण देवियाँ, मना-मनाकर नृत्य करें।।1।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

आषाढ़ वदी दशमी तिथि को जिनबाल धरा पर जन्म लिये।
चार प्रकार सुरों के गृह में वाद्य बजे, घट नीर लिये।।
माया पुत्र रचा इंद्राणी, माँ की गोद सुला आई।
बाल प्रभु को निरख-निरख कर, पाण्डु शिला पर ले आई।।2।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जन्म दिवस के दिन प्रभुवर को, जाति स्मरण हुआ शुभ ज्ञान।
उत्तर कुरु पालकी बैठे, अंतर में निज आत्म विमान।।
द्वादश भावन भाई प्रभु ने, किया चैत्रवन में निज ध्यान।
एक सहस नृप ने दीक्षा ली, जय-जय जय दीक्षा कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

मगसिर सुदी एकादशमी को, कर्म घातिया नाश किया।
समवसरण में भव्यों के हित, प्रभुवर ने उपदेश दिया।।
मैंने भी सत्पथ पहिचाना, आतम का उद्धार किया।
परम ज्ञान कल्याण महोत्सव, आरति करके नमन किया।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

वैशाख वदी चौदस को धारा, प्रभु ने प्रतिमा योग महान।
अंतिम शुक्लध्यान के द्वारा, पद पाया अनुपम निर्वाण।।

कूट मित्रधर से जिनवर ने, मुक्तिरमा से मैत्री की।
इसीलिए सम्मेदाचल में, भव्य जनों ने यात्रा की।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

वंदनीय प्रभु आप हैं, नमिनाथ मुनीनाथ।
गुण मुक्ता जयमाल है, आत्मसिद्धि के काज।।1।।

(चाल - शेर)

जय-जय श्री नमिनाथ आप देव हैं महान।
त्रय ज्ञान धार जन्म लिया है दया निधान।।
इक्कीसवें तीर्थेश प्रभु आपको नमन।
मुझको भी करो पार प्रभु नाशिये करम।।2।।

जाति स्मरण हुआ प्रभु वैराग्य हो गया।
तन से ममत्व छोड़ केशलोंच भी किया।।
श्री दत्तराज नृप ने आहार दे दिया।
पय धार देके पाप का संहार कर लिया।।3।।

प्रभु शिष्य न धरे न चतुर्मास ही करे।
छद्मस्थ दशा मौन में विहार जो करें।।
जब घातिया को घात प्रभु केवली हुये।
नव लब्धियों को पाय ज्ञान के रवि हुये।।4।।

धरती पे ना चले अधर में ही गमन किया।
प्रभु भव्य के उद्धार को विहार है किया।।

प्रभु आपके सर्वांग से जो देशना खिरी।
गणधर कृपा हुई हमें जिनवाणी हैं मिली।।5।।

आतम स्वरूप शुद्ध है निश्चय स्वरूप से।
वसु कर्म मल मलीन है व्यवहार रूप से।।
प्रभु आपने ही वस्तु तत्त्व ज्ञान कराया।
प्रभु आपने ही मोक्ष का ये पंथ बताया।।6।।

प्रभु सर्व कर्म नाश मुक्तिधाम पा लिया।
इंद्र ने भी हर्ष से उत्सव मना लिया।।
अग्नि कुमार देव ने संस्कार रचाया।
भक्ति से भस्म को तभी मस्तक पे लगाया।।7।।

प्रभु नील कमल चिह्नित है चरण आपके।
मैं कर्म मल को धो सकूँ तव दर्श को पाके।।
नमिनाथ तीर्थनाथ की मैं वंदना करूँ।
शीघ्र मोक्ष को वरूँ मैं बंध ना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री नमि जिन स्वामी, हो जगनामी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री नेमिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

आयेंगे प्रभु नेमिनाथ जी, ऐसा मन यह कहता।
देव दुंदुभी बजा रहे हैं, ऐसा मुझको लगता।।
मंद सुगंध बयारें चलती, यह संदेशा देती।
गगन मार्ग से प्रभो आ रहे, श्रद्धा इंगित करती।।1।।

मन मंदिर में दीप जलाया, प्रभु आपके स्वागत में।
पलक पावड़े बिछा रखे हैं, प्रभु आपके आने में।।
नेमिनाथ जिन आप ज्ञान में, नहीं किसी को लाते।
किंतु भक्ति वश भक्तों के मन, प्रभुवर आप समाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

जन्म मरण से पीड़ित होकर, निज आतम को तड़फाया।
तत्त्व ज्ञान से प्यास बुझाने, नाथ शरण में हूँ आया।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
जन्म जरा मृत्यु से स्वामी, मुझको आज छुड़ा देना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

अहंकार से दग्ध हुआ हूँ, अंतर में ही जलता हूँ।
कृपा दृष्टि जब हुई प्रभु की, उसी कृपा पर पलता हूँ।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
भवाताप में झुलस रहा हूँ, मुझको आन बचा लेना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

उज्ज्वल धवल भवन के वासी, धवल आपका जीवन है।
नश्वर से संबंध नहीं प्रभु, रहते हो निज उपवन में।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
अक्षय पद का पथ नहीं जाना, मुझको नाथ बता देना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

भक्ति भाव के पुष्प मनोहर, श्री चरणों में अर्पित हैं।
इंद्रिय मन की विषय वासना, प्रभुवर आज विसर्जित हैं।।

नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
संयम से सुरभित हो जीवन, शिवपथ मुझे दिखा देना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

क्षुधा रोग को दूर करो प्रभु, यही हृदय को है भाया।
करुणा सागर सरल स्वभावी, वैद्य समझकर मैं आया।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
समता रस का पान कराकर, क्षुधा व्याधि को हर लेना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

प्रभु भक्ति के दीप तले निज, भेद ज्ञान की ज्योति जले।
निज को निज पर को पर जानूँ, यही प्रभु वरदान मिले।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
ज्ञानमहल में घना अँधेरा, केवल ज्योति जगा देना।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

मोह बली के कारण जग में, छाया घोर अँधेरा है।
किंतु आपने मोह बली को, निज शक्ति से घेरा है।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
कर्मों की आँधी से स्वामी, मुझको आप बचा लेना।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

प्रभु आपकी भक्ति तरु पर, शाश्वत शिवफल फलता है।
पंच परावर्तन मिटता है, स्वतंत्रता को पाता है।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
कर्म फलों का सर्व नाशकर, जीवन सफल बना देना।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

सिद्ध अष्ट गुण पाने हेतु, अष्ट द्रव्य कर में लाया।
ध्रुव अनर्घ पद पाने का अब, यह अपूर्व अवसर आया।।

नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आ जाना।
एक अकेला भटक रहा हूँ, चरण शरण आश्रय देना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(तर्ज - भक्ति वेकरार है, आनंद अपार है ....)

खुशियाँ अपरंपार हैं, आनंद अपार है।
देखो आज शौरीपुर में हो रही जय-जयकार है।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन, शिवादेवी उर आये जी।
अपराजित विमान से आये, सुर नर मंगल गाये जी।।
जग का तारण हार है, गर्भ कल्याणक सार है।
देखो आज शौरीपुर में हो रही जय -जयकार है।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन, शौरीपुर में जनमे जी।
समुद्र विजय नृप के आँगन में, देव नृत्य कर हरषे जी।।
जन्म कल्याणक सार है, अभिषेक की धार है।
देखो आज पांडु शिला पे हो रही जय-जयकार है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

पशु बंधन को देख प्रभु जी, करुणा उर में आई जी।
राजमति तज वन में जाकर, जिन दीक्षा को पाई जी।।
तप कल्याणक सार है, दीक्षा से भवपार है।
देखो सहस्र आम्र वन में, हो रही जय-जयकार है।।
यह तिथि महा सुखकार है, मेरा भी उद्धार है।
देखो सहस्र आम्र वन में . . . . . .।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

आश्विन शुक्ला एकम् को, प्रभु केवलज्ञान उपाया जी।
ऊर्जयंत पर समवसरण में, दर्शन कर सुख पाया जी।।

ज्ञान कल्याणक सार है, शिवनगरी का द्वार हैं।
देखो प्रभु के समवसरण में हो रही जय-जयकार हैं।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

आषाढ़ सुदी सप्तम को स्वामी, वसु विध कर्म नशाया जी।
श्री गिरनार उच्च पर्वत से, मोक्ष महा पद पाया जी।।
मोक्ष कल्याणक सार है, सर्व कर्म की हार है।
देखो श्री गिरनार गिरि पर देव करें जयकार हैं।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

त्रिभुवन के नायक,आतम ज्ञायक, प्रभु चिंतन में खो जाऊँ।
अर्घ्यों से वंदन, नाशूँ बंधन, मोक्षपुरी में बस जाऊँ।।1।।
हम शीश नवाये, प्रभु गुण गाये, हे नेमीश्वर विपद हरो।
शुभ आश लगाये,आनंद पाये, हमको निज पद माहिं धरो।।2।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय जय नेमिनाथ तीर्थंकर, बालब्रह्मचारी भगवान।
हे तीर्थेश परम उपकारी, करुणासागर दया निधान।।3।।
नृप समुद्र के सुत हो प्यारे, शिवा देवी माँ के नंदन।
शौरीपुर में आनंद छाया, धरा हो गई ज्यों चंदन।।4।।
बचपन से ही प्रभु आपने, अणुव्रत सा आचरण किया।
बाल क्रियायें देख देखकर, यादव कुल में हर्ष हुआ।।5।।
नारायण श्री कृष्ण देव ने, प्रभु का नाता जोड़ दिया।
राजुल से परिणय करने को, जूनागढ़ रथ मोड़ दिया।।6।।

जीवों की सुन करुण पुकारें, प्रभु के उर वैराग्य हुआ।
पशु बंधन को मुक्त किया कंगन तोड़ा निज भान हुआ।।7।।
राजुल ने तब देख लिया स्वामी ने रथ क्यों मोड़ लिया।
मुझसे आतम प्रीत तोड़ मुक्ति से नाता जोड़ लिया।।8।।
धिक् धिक् है संसार यहाँ औ,विषयभोग को है धिक्कार।
इंद्रिय सुख की ज्वाला में ही, धू धू कर जलता संसार।।9।।
जग की नश्वरता का प्रभु ने, किया चिंतवन बारंबार।
वस्त्राभूषण त्याग दिये औ, दूर किये है सभी विकार।।10।।
मोह शत्रु को नाश किया औ, पहुँच गये स्वामी गिरनार।
भवसागर के आप किनारे, भवि जीवों के हैं आधार।।11।।
इंद्रिय सुख के कारण मैंने, नाथ आज तक पूजा की।
आत्म स्वरूप लखा नहीं मैंने, भव सागर की वृद्धि की।।12।।
माना आप नहीं पर कर्ता, आत्म तत्त्व के ज्ञाता हो।
भक्तों को कुछ ना देते निज सम भगवान बनाते हो।।13।।
सर्वदर्शी हैं आप किंतु नहीं तुमको देख सके कोई।
ज्ञाता हो हम सब ही के नहीं जान सके तुमको कोई।।14।।
वंदनीय है स्वयं आप पर को नहीं वंदन करें मुनीश।
ऐसे त्रिभुवन तीर्थनाथ को कर प्रणाम धरकर पद शीश।।15।।

-:: दोहा ::-

मंगल उत्तम शरण हैं, नेमिनाथ भगवान।
भाव 'पूर्ण' प्रभु भक्ति से, होता दुख अवसान।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

श्री नेमि जिनेश्वर, दया अधीश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

हे पार्श्वनाथ आनंदधाम प्रभु, आज वंदना करते।
बाल ब्रह्मचारी जगतारी, नाथ अर्चना करते।।
तीन लोक में ढोल बजाकर, देव दुंदुभी गाते।
मोही जन को जगा जगाकर, शुभ संदेशा लाते।।
आज मेरे उर आँगन में प्रभु, उत्सव जैसा लगता।
त्रिभुवन के स्वामी आयेंगे, निश्चित ही मन कहता।।
इसीलिए सम्यक् रत्नों के, मैंने चौक पुराये।
श्रद्धा गृह के प्रमुख द्वार पर, तोरण हार सजाये।।
प्रभु प्रतीक्षा में रत्नों के, जगमग दीप जलाये ।
पद प्रक्षालन हेतु स्वर्ण के, थाल यहाँ ले आये।।

-:: दोहा ::-

आओ पारसनाथ जी, आओ आओ नाथ।
हृदयांगन सूना पड़ा, द्वार खड़ा नत माथ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(गीता छंद)

क्षीरोदधि सम क्षीर जल मैं, ला नहीं सकता प्रभो।
हे क्षीरसागर नाथ तुम हो, क्षारसागर मैं प्रभो।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, जन्म रोग नशाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित ,उद्धार मेरा कीजिये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

भवताप से मैं जल रहा हूँ, और जलता जा रहा।
क्या हो गया मुझको स्वयं को, और छलता जा रहा।।

श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, भवाताप नशाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित , उद्धार मेरा कीजिये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

सब नाशवान पदार्थ को मैं , स्थिर बनाना चाहता।
शाश्वत अनुपम तत्त्व हूँ मैं, शब्द से ही जानता।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे , दान अक्षय दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

भोगे अनेकों भोग फिर भी, चाह यह जाती नहीं।
यह वासना की आग जिनवर, अब सही जाती नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, ब्रह्म पदवी दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित , उद्धार मेरा कीजिये ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

बीता अनंता काल फिर भी, कर्म धारा बह रही।
औ ज्ञान धारा को प्रभुवर, जानता ही मैं नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, ज्ञान धार बहाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

दीपक जले सूरज उगे पर, मोह तम मिटता नहीं।
बाहर उजाला तेज भीतर में उजाला है नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझमें, ज्ञान दीप जलाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित , उद्धार मेरा कीजिये ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

भव राग से रागी हुआ मैं, द्वेष से द्वेषी हुआ।
पर आप सा सान्निध्य पाकर, क्यों नहीं ज्ञानी हुआ।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, अष्ट कर्म निवारिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

प्रभु बीज कर्मों का जला दो, उग नहीं सकता कभी।
मेरा मिलन मुझसे करा दो, फिर न आना हो कभी।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, मिष्ट शिवफल दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित , उद्धार मेरा कीजिये।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

निज आत्म वैभव खो चुका हूँ, क्या चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शरण में।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिए अपनाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

वैशाख कृष्ण दिन पावन, द्वितीया तिथि है मन भावन ।
गर्भस्थ बाल जिन आभा, से हुई नगर में शोभा।।
पितु अश्वसेन हर्षित हैं, सारा परिवार मुदित है।
प्रभु प्राणत स्वर्ग विहाये, छप्पन देवी गुण गाये।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

वदी पौष ग्यारसी आई, शुभ जन्म लिया जिनराई।
ऐरावत गज ले आये, निज गोद इंद्र बैठाये।।
प्रभु बनकर आये सूरज, जग तरसे पाने पद रज।
वाराणसी नगरी प्यारी, प्रभु जन-जन के मन हारी।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

जन्मोत्सव खुशियाँ छाई, तब जाति स्मृति हो आई।
वैराग्य सहज मन भाया, लौकांतिक ने गुण गाया।।
विमलाभ पालकी चढ़के, अश्वत्थ वनी सुर पहुँचे।
जिन दीक्षा है सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

जब कमठ क्रोध बरसाये, प्रभु समता नीर बहाये।
सब विनश गई शठ माया, कर जोड़ शरण वह आया।।
प्रभु तन मन हुआ नगन है, शिव वधू की लगी लगन है।
वदी चैत्र चतुर्थी आई, प्रभु ज्ञान ज्योति प्रगटाई।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

श्रावण शुक्ला दिन आया, शुभ मुकुट सप्तमी भाया।
स्वर्णभद्र कूट प्रभु आये, अष्टम वसुधा को पाये।।
छत्तीस संग मुनिराया, शिव गये सिद्ध पद पाया।
बोलो पार्श्व प्रभु की जय-जय, सम्मेद शिखर की जय-जय।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

कामधेनु चिंतामणी, हे पारस भगवान।
कल्पवृक्ष से भी अधिक, पारसनाथ महान।।1।।
पार्श्वनाथ वंदूँ सदा, चिदानंद छलकाय।
चरण शरण हूँ आपकी, सहज मुक्ति प्रगटाय।।2।।

(ज्ञानोदय छंद)

परम श्रेष्ठ पावन परमेष्ठी, पार्श्वनाथ को वंदन है।
माता वामा देवी के सुत, अश्वसेन के नंदन हैं।।
कर्मजयी हो कामजयी उपसर्ग विजेता कहलाये।
परम पूज्य परमेश्वर हो शिवमार्ग विधाता बन आये।।3।।
नगर बनारस है अति सुंदर, विश्वसेन नृप परम उदार।
तीर्थंकर बालक को पाकर, भू पर छाया हर्ष अपार।।

देव कल्याणक मना रहे पर, निज में आप समाये थे।
भोगों को स्वीकार किया ना, कामबली भी हारे थे।।4।।
अल्प आयु में पंच महाव्रत, धरे स्वयंभू दीक्षा ली।
चार मास छद्मस्थ मौन रह, आतम निधि को प्रगटा ली।।
तभी कमठ ने पूर्व वैर वश, पूर्व भवों का स्मरण किया।
आँधी तूफाँ झंझाओं से, प्रभो आपको कष्ट दिया।।5।।
घोर उपद्रव जल अग्नि से, महा विघ्न करने आया।
जल से भर आई धरती पर, किञ्चित नहीं डिगा पाया।।
आत्म गुफा में लीन रहे प्रभु, तन उपसर्ग सहे भारी।
इसीलिए भू पर गूँजी जय, पारस प्रभु अतिशयकारी।।6।।
वैर किया नौ भव तक भारी, आखिर माया विनश गयी।
ध्यान सूर्य की किरणों से शठ, कमठ अमा भी हार गयी।।
प्रभो आपने तन चेतन का, भेद ज्ञान जो पाया हैं।
इसीलिए शठ की माया को, पल भर में विनशाया हैं।।7।।
पूर्व जन्म के उपकारी को, कृतज्ञ होकर जान लिया।
पद्मावती और धरण इंद्र ने, आ विघ्नों को दूर किया।।
साम्य भाव धर प्रभु आपने, कर्मों पर जय पाई हैं।
इसीलिए श्री पार्श्व प्रभु की, अतिशय महिमा गाई हैं।।8।।
क्रोध अग्नि में जलते हैं जो, भव-भव में दुख पाते हैं।
वैर निरंतर जो रखते हैं, निज को ही तड़फाते हैं।।
भेद ज्ञान कर निज आतम के, आश्रय में जो आते हैं।
सर्व कर्म का क्षय करके वे, शिवरमणी को पाते हैं।।9।।
हे जिनवर उपदेश आपका, श्रवण करूँ आचरण करूँ।
क्षमा भाव की महा शक्ति से क्रोध शत्रु को नष्ट करूँ।।
मार्ग आपने जो बतलाया, वह मेरे मन को भाया है।
मुझको भी भव से पार करो, यह भक्त शरण में आया है।।10।।

श्री सम्मेदाचल से स्वामी, मोक्ष महापद है पाया।
चरण चिह्न का दर्शन करके, शिवपद पाने मैं आया।।
पार्श्व तीर्थंकर सर्व प्रियंकर, श्री चरणों में सिरनाया।
दिव्य शक्ति को संचित करने, आप शरण में हूँ आया।।11।।

-:: दोहा ::-

परं ज्योति परमातमा, पार्श्वनाथ जिनराज।
वंदौ परमानंद मय, आत्मशुद्धि के काज।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

जय-जय तीर्थंकर, पार्श्व जिनेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री महावीर जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

महावीर प्रभु दर्श दिखाना, दर्शन करने आया।
हृदय विराजो अतिवीर प्रभो, पूजन करने आया।।
चरण शरण में अरजी लाया, निज सम मुझे बनाना।
प्रभु कृपा कर कष्ट मिटाकर, सारे बंध छुड़ाना।।1।।

शक्ति नहीं है मुझमेंभगवन् ,अनंत शक्ती देना।
तव गुणगण को जान सकूँ प्रभु, इतनी भक्ती देना।।
कर्म शत्रु के नाश हेतु प्रभु,नाम आपका ध्याऊँ।
ज्ञान वेदी पर वीर प्रभु को, सविनय आज बिठाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - माता तू दया करके ....)

श्रद्धा की वापी से, भक्ति जल भर लाया।
समकित कलशा लेकर, प्रभु चरण शरण आया।।
आनंद रस छलका दो, जग दाह मिटे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

चंदन से अति शीतल, प्रभु की पद रज धूलि।
नहीं चरणन स्पर्श किये, यह भारी भूल हुई।।
प्रभु शांति जल देना, भवताप मिटे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

क्षणभंगुर वैभव है, भव का वर्द्धन करता।
मैं राग किया करता, प्रतिपल उलझा रहता।।
प्रभु अक्ष अगोचर हो, अक्षय पद दो स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

जब मान सरोवर में, शत दल सुरभित होता।
रस में फँसकर मधुकर, निज प्राण गँवा देता।।
प्रभु पद पंकज अलि बन, गुण गान करूँ स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

इस कर्म असाता ने, चिरकाल सताया है।
जितना उपचार किया, तृष्णा को बढ़ाया है।।
निज दोष समझ आया, यह व्याधि हरो स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मेरे चेतन गृह में, घनघोर अँधेरा है।
नहीं सूझ रहा आतम, मिथ्यातम घेरा है।।
रत्नत्रय दीप जला, निज ज्ञान जगे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

उपयोग भटकता है, कैसे निज में लाऊँ।
ओरों को समझाऊँ, पर खुद न समझ पाऊँ।।
प्रभु ध्यान धूप पाकर, सब कर्म नशें स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

कर्मों के फल खाकर, बेहोश हुआ जग में।
जब से प्रभु दर्श किया, निज दर्श हुआ निज में।।
चऊ गति के भ्रमण मिटा, शिव फल पाऊँ स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

पर को देखा मैंने, निज को ही ना परखा।
अब सुख अनंत पाने, संबंध किया निज का।।
ज्ञायक पद पा जाऊँ, हो शक्ति प्रगट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक

(तर्ज - बाजे कुंडलपुर में बधाई ....)

आषाढ़ सुदी छठ आई, कि स्वर्ग से जिन आये महावीर जी।
माँ प्रियकारिणी हर्षाई, कि गर्भ में प्रभु आये महावीर जी।।
हैं चौबीसवें तीर्थंकर, कि सुर नर गुण गाये महावीर जी।
माँ ने सोलह सपने देखे, कि त्रिभुवन के नाथ पाये महावीर जी।।
बाजे कुंडलपुर में बधाई, कि गर्भ में वीर आये महावीर...।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

धन्य घड़ी जन्म की आई, कि ज्ञान धन बरसाये महावीर जी।
तिहुँलोक में आनंद छाया, कि सुख की बहार लाये महावीर जी।।
अभिषेक करे मेरु पर, कि क्षीर जल भर लाये महावीर जी।
हम जन्म कल्याणक मनाये,किचैतसुदीतेरस आये महावीर जी।।
बाजे कुंडलपुर में बधाई,कि अँगना में वीर आये महावीर...।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

मगसिर वदी दशमी आई, प्रभु वैराग्य हुआ महावीर जी।
चंद्राभा पालकी लेकर, सुरपति वन आ गये महावीर जी।।
प्रभु ! सिद्ध नमः कहते ही, जिन दीक्षा धारी महावीर जी।
हो गए स्वयंभू स्वामी, परम जग उपकारी महावीर जी।।
बाजे आतम में शहनाई, कि निज गृह वीर आये महावीर...।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

ऋजुकूल सरित तट तिष्ठे, वैशाख सुदि दशमी है महावीर जी।
प्रभु शुक्ल ध्यान के धारी, घाति चउ नाश किये हैं महावीर जी।।
हुई समवसरण शुभ रचना, भविक जन हितकारी महावीर जी।
बिन इच्छा ध्वनि खिरी है,कि प्रभु की अमृतवाणी महावीर जी।।
बाजे समवसरण शहनाई, कि गगन में वीर आये महावीर...।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

जब कार्तिक अमावस आई, कि दीपावली आई महावीर जी।
घड़ी स्वाति नखत की आई,कि प्रभु मुक्ति पाई महावीर जी।।
प्रभु पूर्ण परम पद पाये, कि अष्टम भू पाये महावीर जी।
सब जय बोले धरती पर, कब निर्वाण पाये, महावीर जी।।
बाजे आत्म नगर शहनाई,कि वीर प्रभु मोक्ष पाये महावीर...।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

-:: जाप्य ::-

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

-:: दोहा ::-

बाल ब्रह्मचारी प्रभु, महावीर जिननाथ।
गुण माला कैसे कहूँ, अतः धरूँ पद माथ।।1।।

(तर्ज - स्रग्विणी छंद)

जय महावीर अतिवीर पद को नमूँ।
सन्मति नाथ दाता सुवीर नमूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।2।।
वर्द्धमानेश सिद्धार्थ सुत को नमूँ।
मात त्रिशला के नंदन को मन से नमूँ।।वंदना...।।3।।
है पुरुरवा से जीवन कहानी शुरू।
भव धरे अनगिनत कैसे गिनती करूँ।।वंदना...।।4।।
पुण्योदय से भरत सुत मारीचि हुये।
भाव मिथ्यात्व के वश भटकते रहे।।वंदना...।।5।।
बन गये अर्ध चक्री त्रिपृष्ठ पती।
भव भ्रमण ही किया नहीं सुधरी मति।।वंदना...।।6।।
भाव अज्ञान में कर्म बंधन किया।
चार गति में रुला क्रूर सिंह बन गया।।वंदना...।।7।।
पुण्य से ऋद्धि चारण मुनी मिल गये।
देशना पाके अश्रु नयन भर गये।।वंदना...।।8।।
मिथ्यातम हट गया दीप सम्यक् जला।
श्री गुरु की शरण से ही बंधन टला।।वंदना...।।9।।
फिर प्रथम स्वर्ग में सिंहकेतु हुये।
देव फिर विद्याधर से मुनिव्रत लिये।।वंदना...।।10।।
स्वर्ग सप्तम से राजा हरिषेण हुये।
फिर महाशुक्र से राजपुत्र हुये।।वंदना...।।11।।

स्वर्ग द्वादश गये नंद राजा हुये।
दीक्षा लेकर तीर्थंकर की सत्ता लिये।।वंदना...।।12।।
सोलवें स्वर्ग से माँ को सपने दिये।
माता त्रिशला के नैन सितारे हुये।।वंदना...।।13।।
धन की वृद्धि से श्री वर्द्धमान हुये।
मेरु पर्वत दबाया तो वीर हुये।।वंदना...।।14।।
मुनि संजय विजय मन में शंकित हुये।
देखकर बाल जिन को निःशंकित हुये।। वंदना...।।15।।
सन्मति नाम तत्क्षण रखा मुनिवरा।
दृष्टि सम्यक् करो हे मेरे महावीरा।।वंदना...।।16।।
देव संगम परीक्षा को विषधर बना।
उसके फण पर चढ़े नाथ ताली बजा।।वंदना...।।17।।
धन्य हो वीर स्वामी चरण में नमा।
दास हूँ आपका मुझको कर दो क्षमा।।वंदना...।।18।।
एक हाथी मदोन्मत्त अवश हो रहा।
वीर को देखकर शांत ही हो गया।।वंदना...।।19।।
तब अतिवीर कहने लगे जन सभी।
पाँच ही नाम सार्थक किये नाथ जी।।वंदना...।।20।।
तीस ही वर्ष में तप धरा आपने।
रुद्र का विघ्न जिनवर सहा आपने।।वंदना...।।21।।
वर्ष बारह प्रभु मौन की साधना ।
घातिया नष्ट हो ज्ञान केवल घना।।वंदना...।।22।।
दिन छ्यासठ हुए देशना ना खिरे।
आये गौतम प्रभु पद में शीश धरे।।वंदना...।।23।।
प्रभु वाणी खिरी जैसे फुलवा झरें।
भव्य जीवों के जिनवाणी कल्मष हरे।।वंदना...।।24।।

तीस ही वर्ष प्रभु ने विहार किया।
आये पावापुरी योग रोध किया।।वंदना...।।25।।
कर्म संपूर्ण को नाश कर सुख लिया।
मुक्तिकांता वरी लक्ष्य को पा लिया।।वंदना...।।26।।
है परम पूज्य पावापुरी की धरा।
नाथ निर्वाण पाया है पुण्य धरा।।वंदना...।।27।।
दीप माला हुई ज्ञान ज्योति जली।
जैसे जन्मांध को रोशनी है मिली।।वंदना...।।28।।
सारे जग में दीपाली मनाई गई।
मोक्षलक्ष्मी मिले भावना की गई।।वंदना...।।29।।
आत्म गुण हेतु हे नाथ पूजा करूँ।
एक भव में ही मैं नाथ मुक्ति वरूँ।।वंदना...।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

अंतिम तीर्थेशा, वीर जिनेशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ,ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

-:: जाप्य ::-

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपंचकल्याणकसमन्वित वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।'

समुच्चय-जयमाला

-:: दोहा ::-

जो भी गाता है सदा, प्रभुवर का गुणगान।
प्रभु सम वह गुणवान बन, पा जाये निर्वाण।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय धर्मतीर्थ के नायक, चौबीस तीर्थंकर स्वामी।
वर्तमान भवि जन हितकारी, नमन करूँ त्रिभुवन नामी।।

आदिनाथ से वीर प्रभु तक, मन वच तन से वंदन है।
सिद्धालय के वासी को, मम श्रद्धा से अभिनंदन है।।2।।

प्रथम देव आदीश्वर जिन हैं, आदि ब्रह्म विधि नाशक हैं।
विश्व विज्ञ हो विश्व सुलोचन, अनेकांत के शासक हैं।।
आतम जेता अजितनाथ हो, शिवरमणी का वरण किया।
शत्रु मित्र में समता रखकर,निज आतम में रमण किया।।3।।

विषय भोग तृष्णा मय व्याधि, से पीड़ित संसारी हैं।
काम असंभव संभव करते, संभव जिन अविकारी हैं।।
लोकालोक प्रकाशी जिन, आनंद सिंधु में न्हवन किया।
अभिनंदन जिन संपद देना, अतः चरण में नमन किया।।4।।

दुर्नय तिमिर निवारण कारण, दिव्यध्वनि अति प्यारी है।
सुमति जिनेश्वर सुमति दाता, तव पद में बलिहारी है।।
पद्मप्रभ अरुणाभा वाले, सकल तत्त्व के ज्ञायक हो।
मात पिता सम जन हितकारी, सदुपदेश के दायक हो।।5।।

कर्म पाश में बंधा हुआ हूँ, हे जिनवर निर्बंध करो।
पर प्रपंच में पड़ा हुआ हूँ, सुपार्श्व जिन निर्द्वन्द करो।।
कोटिक सूर्य चन्द्र लज्जित हैं, हे ज्योतिर्मय जगदीश्वर।
ललित कूट से मोक्ष पधारे, ध्याते हैं सुर नर गणधर।।6।।

सुविधिनाथ नौवें तीर्थंकर, पुष्पदंत सुखकारी हैं।
सुविधि बताते विधि नशाने, तव वंदन दुखहारी है।।
गंगा जल चंदन नहीं शीतल, नहीं चांदनी शीतल है।
शीतल जिन के वचन सुशीतल, प्रभु सुशोभित भूतल है।।7।।
श्रेयस पद की चाह मुझे है, चेतन श्री का वरण करूँ।
चाह यही है सिद्ध बनूँ मैं, बार-बार पद नमन करूँ।।

विघ्न विनाशक वागीश्वर श्री, वासुपूज्य प्रणिपात करूँ।
चंपापुर से मुक्तिगामी, तव पद में दिन रात रहूँ।।8।।

विमलनाथ जिनवर निर्मल हो, निर्बल को संबल देते।
इसीलिए चरणों में आकर, भक्त सदा जय-जय करते।।
अनंत सार्थक नाम आपका, नंत चतुष्टय धारी हैं।
पार किया लाखों को तुमने, आज हमारी बारी है।।9।।

धर्मतीर्थ को किया प्रसारित, धर्म्य ध्यान को समझाया।
शुक्लध्यान से मोक्ष मिलेगा, समवसरण में बतलाया।।
तीनों पद के धारी जिनवर, शांतिनाथ शांतिदाता।
परम शांत रस वर्षा करते, भक्ति से नत है माथा।।10।।

कुंथुनाथ षट्काया रक्षक, मेरी भी रक्षा करिये।
कृपा सिंधु कर्मों के हंता, मुझको भी निज सम करिये।।
अरहनाथ अखिलेश्वर मेरे, राग जला कर मिटा दिया।
नाश करो मेरे भव का भी, मन में तुमको बिठा लिया।।11।।

बाल ब्रह्मचारी जिनदेवा, मोह मल्ल का नाश किया।
विषयों को विष लखा आपने, निज पद में ही वास किया।।
प्रथम बने मुनि स्वयं आप फिर मुनिव्रत का उपदेश दिया।
अतःनाम सार्थक मुनिसुव्रत, मोह शनि का नाश किया।।12।।

नमि जिनवर के चरण पखारूँ, वीतराग छवि को ध्याऊँ।
नमूँ वीतरागी जिनवर को, राग-द्वेष ना उर लाऊँ।।
नीलमणि सम दीप्तिमान हैं, दयासिंधु जिनवर प्यारे।
गिरनारी शिवनार वरी प्रभु, मेरा वंदन स्वीकारे।।13।।
पार्श्वनाथ पावन परमेश्वर, सबके मन को भाते हो।
भाव भक्ति से जो भी ध्यावे, श्रद्धालय में आते हो।।

वर्धमान जिन वीर सन्मति, महावीर अतिवीर प्रभो।
अंतिम तीर्थंकर उपकारी, पावापुरी निर्वाण विभो।।14।।

इंद्रिय सुख की नहीं कामना, लक्ष्य यही शिव पाना है।
घबराया हूँ कर्म फलों से, चौबीसी रज पाना है।।
सांसारिक सुख नहीं चाहिए, शिव सुख की ही अभिलाषा।
यही विनय है अंतर्यामी, 'पूर्ण' कीजिये मम आशा।।15।।

-:: दोहा ::-

चौबीसों तीर्थेश का, है अनंत उपकार।
भाव सहित पूजा करूँ, पाऊँ सौख्य अपार।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिव सुख सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

पूज्यपाद आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

गुरुदेव हमारी अरज सुनो, कर्मों के सतत सताये हैं।
हे भवतारक तव सुयश सुना, अब शरण तिहारी आये हैं।।
हे दयासिंधु आनंदधाम, गुरुवर भक्तों के ईश्वर हो।
हे भावी सिद्ध शिलावासी, हे ऋषिवर मम हृदयेश्वर हो।।1।।

शरद पूर्णिमा के चंदा, मम ध्यान गगन में आ जाना।
कर्म कालिमा रज धो करके, शुद्धातम प्रगटा देना।।
पूजन करने आया गुरुवर, भक्ति का लेकर आधार।
यही अरज है चारों गति के, दुख से मेरा हो उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

युगों युगों से जनम मरण की, ज्वाला में जलता आया।
सिंधु नीर से बुझी न ज्वाला, अतः भक्ति काजल लाया।।
श्री विद्यासागर गुरुदेवा, तव पूजन कर हर्षाया।
तुम जैसी शांति पाने मैं, शरण तिहारी हूँ आया।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

परभावों के महाताप में, झुलस गया अति दुख पाया।
तुम सम शीतल समता पाने, चंदन सा बनने आया।।श्री ...।।2।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं.....।

क्षणभंगुर इंद्रिय सुख में ही, जीवन व्यर्थ गंवाया है।
अक्षय पद के लिये चरण में, अक्षत पुंज चढ़ाया है।।श्री...।।3।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

कामदेव ने बाण चलाया, गुरु कृपा से बच पाया।
महाशील शीलेश्वर बनने, आप चरण में हूँ आया।।
श्री विद्यासागर गुरुदेवा, तव पूजन कर हर्षाया।
तुम जैसी शांति पाने मैं, शरण तिहारी हूँ आया।।4।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं ....।

महाभयानक क्षुधा रोग ने, काल अनादि तड़फाया।
कुशल वैद्य गुरु के चरणों में, औषध पाने हूँ आया।।श्री...।।5।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

एक तुम्हीं आधार हो स्वामी, मोह महातम नाश करो।
दूर करो अज्ञान हमारे, मन मंदिर में वास करो।।श्री...।।6।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

ध्यान अग्नि में धूप डालकर ,अष्ट कर्म का नाश करूँ।
शुक्ल ध्यान की प्राप्ति हेतु मैं,गुरु चरणों में वास करूँ।।श्री...।।7।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

कर्म फलों से पीड़ित होकर, मुक्ति फल पाने आया।
सिद्ध स्व पद पाने यतिवर मैं, पाऊँ गुरु कृपा छाया।।श्री...।।8।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

उपकारी पद आचारज का ,अर्घ्य बना क्या चरणधरूँ।
भावसहित स्वयमेव चरणमें,मनवचतनसेनमनकरूँ।।श्री...।।9।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

जयमाला

-: दोहा :-

गुरुवर हैं चिंतामणि, चिच्चेतन भगवान।
जयमाला चरणन धरूँ, शत-शत करूँ प्रणाम।।1।।

(चौपाई)

जयवंतों गुरूदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे।।2।।

ग्राम सदलगा जन्म लिया है, माँ श्री मति को धन्य किया है।
विद्यासागर नाम तिहारा, बाल वृद्ध को लगता प्यारा।।3।।

तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा।
सन् अड़सठ में दीक्षा पाई, सब परिवार बना शिव राही।।4।।

धन्य हुई अजमेर नगरियाँ, खिली त्याग संयम की कलियाँ।
छत्तीस घंटे ध्यान किये हैं, निज आतम रसपान किये है।।5।।

समयसार मय जीवन सारा, सांकेतिक मृदुवाणी धारा।
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हैं रखवाले।।6।।

परमेष्ठी के अंश कहाते, ज्ञान सरोवर मुक्ता पाते।
दीक्षा के आधार हमारे, ज्ञान के पारावार सहारे।।7।।

तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे।
पंचाचार आचरण पाले, षट् आवश्यक पालनहारे।।8।।

है छत्तीस गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी।
पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते है वह कहते है।।9।।

गुरू कृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते।
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जाय सहारे।।10।।

घर-घर गुरु ने व्रती बनाये, ज्ञान सिंधु का पथ दिखलाये।
पंचमकाल महा दुख दाई, तुम जैसा नहीं साधक कोई।।11।।

शांत क्षेत्र में तुम रहते हो, निज आतम अनुभव करते हो।
गुरु के सन्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।।12।।

गुरू शरण में जो भी आता, उसको ना दुर्भाग्य सताता।
पंचम गति के आप सहारे, पंच परावर्तन से तारे।।13।।

दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरू कृपा जब रंग दिखाती।
हम धरते है ध्यान तिहारा, जानो सब मंतव्य हमारा।।14।।

स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, भव दुख की परवाह नहीं है।
मात्र मुक्ति का दर्शन चाहूँ, भव वन में फिर कभी न आऊँ।।15।।

सारे वन की कलम बना दूँ, कागज सारी धरा बना दूँ।
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, 'पूर्ण' गुणों को कैसे बोलूँ।।16।।

-:: दोहा ::-

गुरुवर की महिमा अगम,सुर गुरु लहे न पार।
अल्पमति कैसे कहें, करो गुरू उद्धार।।17।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

जय-जय श्री गुरुवर,ज्ञान सरोवर, शिव सुख का भंडार भरें।
यह पुष्प समर्पण, जीवन अर्पण, 'विद्यासागर पूर्ण' करें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अरहंत भाषित वैन पूजूँ, द्वादशाङ्ग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी ।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु - नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।।
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिवगेह के।।

-:: दोहा ::-

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं भावपूजा - भाववंदना - त्रिकालपूजा - त्रिकालवंदना - कृत - कारितमोदनैः सहितं श्रीअरिहन्त - सिद्ध - आचार्य - उपाध्याय - सर्वसाधु - पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग - करणानुयोग - चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन - विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि - दशलक्षण - धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल - थल - आकाश - गुहा - पर्वत - नगरवर्ति - ऊर्ध्व - मध्य अधो - लोकेषु विराजमान - कृत्रिम - अकृत्रिम - जिन - चैत्यालय - जिनबिम्बेभ्यो नमः । विदेहक्षेत्रे विद्यमान - विंशति - तीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च - भरत -पञ्च - ऐरावत -दशक्षेत्र -सम्बन्धि - त्रिंशत् - चतुर्विंशतिगत - विंशति - उत्तर - सप्तशत - जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप - सम्बन्धि - द्वापञ्चाशत् - जिन - चैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि - अशीति - जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर - कैलाश - चम्पापुर - पावापुर - गिरनार - सोनागिरि - राजगृही - मथुरा - शत्रुञ्जय - तारङ्गा - कुण्डलपुर आदि - सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री- मूढ़बद्री - हस्तिनापुर - चन्देरी - पपौरा-अयोध्या-चमत्कारजी-महावीरजी-पदमपुरी-तिजारा -आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि - महावीरपर्यन्त - चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे .....नाम्नि नगरे .....मासानामुत्तमे .....मासे .....पक्षे .....तिथौ .... वासरे .....मुन्यार्यिका - श्रावक - श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजें, निरखत नयन कमलदल लाजें।।
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्ति विधायक।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुम प्रातिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगतपूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार सङ्घ को।।
पूजें जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरुपूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।।
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे।।

होवे सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवे वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।।
होवे चोरी न मारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जौ लों न पाऊँ।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझ से।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहुँ भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण - शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि) (कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मन्त्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।।
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।
चौबीसों जिनराज पद, पूजें भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण।।
श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है ....)

तीर्थंकर दरबार है, सिद्धालय सुखकार है।
वर्तमान चौबीसी जिन को, वंदन बारंबार है।।
सम्यक् श्रद्धा दीपक लेकर, ज्ञान की बाती लाया जी।
तेल चारित का आप ही डालो, रत्नत्रय मन भाया जी।।
शिव पथ पाना सार है, जिन दर्शन हितकार है, वर्तमान....।।
आर्त रौद्र मय ध्यान मिटा दो, आरती लेकर आया जी।
धर्म्य ध्यान मय जीवन होवे, शुक्ल ध्यान ही भाया जी।।
प्रभु ही तारणहार है, महिमा अपरंपार है, वर्तमान ....।।
मोह बली के कारण मुझमें, छाया घोर अंधेरा जी।
प्रभु आपने मोह बली को, निज शक्ति से घेरा जी।।
वीतराग आधार है, सच्चा प्रभु का द्वार है, वर्तमान ...।।

"आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की अमृतवाणी"

- जिन और जन में इतना ही अंतर है कि एक वैभव के ऊपर बैठा है और एक के ऊपर वैभव बैठा है।
- श्रद्धा जब गहराती है तब वही समर्पण बन जाती है।
- मांगने से नहीं किंतु अधिकार श्रद्धा से मिलते हैं।
- जब तक हमारा संबंध भगवान से तभी तक हम भक्त कहलाने के अधिकारी हैं।
- विचारों का मूल्य होता है मात्र शब्दों का नहीं।
- शिक्षा वही श्रेष्ठ है, जो जन्म-मरण का क्षय करती है।

-: आत्म पुरुषार्थ :-

- अपने आपको जानो, अपने को पहचानो, अपनी सुरक्षा करो क्योंकि अपने में ही सब कुछ है।
- स्व की ओर मुड़ना ही सही पुरुषार्थ है।
- शरीर के प्रति वैराग्य और जगत के प्रति संवेग ये दोनों ही बातें आत्म कल्याण के लिये अनिवार्य है।
- अपने उपयोग का उपयोग, पर की चिंता में न करें।

-: भक्ति स्तुति :-

- पंच परमेष्ठी की भक्ति एवं ध्यान से विशुद्धि बढ़ेगी, संक्लेश घटेगा, वात्सल्य बढ़ेगा।

-: भक्ति महिमा :-

- भक्ति गंगा की लहर हृदय के भीतर से प्रवाहित होना चाहिए और पहुँचना चाहिए वहाँ जहाँ निस्सीमता हो।

-: मौन :-

- जो व्यक्ति वाणी को नियन्त्रित नहीं कर सकता है वह साधना नहीं कर सकता है।
- वे महान हैं जो मुख से एक शब्द निकालने में आगे पीछे विचार करते हैं।